जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 5 MAKE IN INDIA मार्च 2016

हिन्दी दिवस समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब कुमार मुखर्जी से राजभाषा कीर्ती पुरस्कार प्राप्त करते हुए रियर एडमिरल राहुल कुमार श्रावत बाएँ खड़े श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, श्री सत्यनारायन जटिया, गृह राज्य मंत्री।

पुरस्कार प्राप्त करते हुए बाएँ से खड़े श्री किरण रिजीजू (गृह राज्य मंत्री),
श्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, श्री प्रणब कुमार मुखर्जी, श्री सत्यनारायण जटिया श्री गिरीश शंकर, सचिव राजभाषा।

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

मुख्य परामर्शदाता
श्री किशोर चंद्र दास, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक मण्डल
श्री बी डी साठे, अपर महाप्रबन्धक (मानव संसाधन)

श्री प्रकाश चन्द्र झा, उप महाप्रबन्धक (जहाज निर्माण)

श्री रामाश्रय यादव, उप प्रबन्धक (भंडार - पू.ख.)

श्री रामप्रीत यादव, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

श्री पी डी सिद्दीकी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

सुश्री जयंतिका मुखर्जी, हिन्दी अनुवादक

प्रकाशक
मीडियाट्रिक्स
511, चर्चगेट चेम्बर्स, 5 न्यु मरीन लाइन्स, चर्चगेट, मुम्बई - 400 020
कॉन्टॅक्ट नं. +91 9920510882 / 22 6743 9594

हिन्दी अनुभाग

माझडॉक हाउस दूसरी मंजिल फोन नं. 022-23710456
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400 010.

विषय सूची

माझगांव डॉक का अभूतपूर्व अतीत - रामप्रीत यादव 09

वो मासूम सा हँसता है - प्रसाद कुलकर्णी 17

युद्धपोत निर्माण - अमित कुमार 18

भारत में पनडुब्बी निर्माण की आधारशिला - कैलाश सिंह 23

पूर्व यार्ड और अलकॉक यार्ड में बुनियादी सुविधाएं - आशीष चौधरी 26

मेक इन इंडिया - कमोडोर (डा.) जे एम जाँगीर 28

पुर्वखंड और अनिक चेंबूर यार्ड में रैंकिंग सिस्टम - मुकेश कुमार 32

व्हिसिल ब्लोवर शिकायतें - वी. वी. चव्हाण 34

वो जो दर्पण में है - विकास हूडा 35

हँसी जीवन की एक जरूरत - काकासाहेब कडू 36

नई पीढ़ी की गलत सोच - अनिल रा पाटील 37

टूटा तारा - शिवांश सिंह 37

सत्संगति - राजेश हि आंबवाड 38

नारी का हो सम्मान - सिमनलाल आर्य 39

प्रेरणा स्त्रोत - शिवाजी पाटील 40

एक कदम - सुश्री पूजा आत्माराम दर्वेश 40

यात्रा वृतांत - प्रकाश चन्द्र झा 41

जुहू एयरोड्रम - सौमेन्द्र के दलाल 45

तुम्हारी - मदन गोपाल गुरु 47

लुप्तप्राय प्रजातियाँ - पी डी सिद्दीकी 48

पत्थर या मूर्ति - रामाश्रय यादव 50

पानी की कहानी - जयंतिका मुखर्जी 51

चिड़ियों सी जिन्दगी - श्री एस प्रधान 52

सुषुम्ना क्रिया योग - मुरली वेपड़ा 53

माझगाव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के कार्यक्रमों की एक झांकी 55

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

मान्यवर,

माझगांव डॉक की राजभाषा पत्रिका जलतरंग का पंचम अंक प्रकाशित होने पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। पत्रिका का चतुर्थ अंक विषय वस्तु आधारित प्रकाशित किया गया है। इसमें देश की सभी प्रांतीय भाषाओं में उत्कृष्ट लेखकों, कवियों, नाटककारों की रचनाओं को शामिल करने का प्रयास किया गया था। चतुर्थ अंक के सभी रचनाकार अपने लेखन क्षेत्र में साहित्य का सर्वोत्कृष्ट सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता रहे हैं।

पंचम अंक में कंपनी के प्राचीन इतिहास के साथ-साथ इसकी वर्तमान उपलब्धियों का विवरण है। भविष्य में होने वाले उत्पादों को ध्यान में रखते हुए बुनियादी सुधार का ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया है।

मेरा हमेशा प्रयास रहता है कि कंपनी उत्पादों के बारे में व्यापक रूप से प्रचार किया जाय जिससे आम जन को कंपनी व्यवसाय के विषय में जानकारी प्राप्त हो। यह अंक पूर्ण रूप से कंपनी उत्पादों का प्रतिनिधित्व करता है पत्रिका में कर्मचारियों को अपनी बात कहने हेतु उचित मंच देने का सार्थक प्रयास किया गया है। एमडीएल (ख) क्षेत्र में स्थित है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित पत्राचार लक्ष्य को हासिल करने में कामयाबी प्राप्त किया है। हिन्दी का अधिकतम प्रसार करना पत्रिका का उद्देश्य है। राजभाषा का अपने दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक उपयोग करना संविधान का सम्मान और प्रत्येक शासकीय कर्मचारी की जिम्मेदारी है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार अपने सभी कर्मचारियों से निरंतर राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की अपेक्षा करती है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक सभी की आशाओं पर खरा उतरेगा और पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगा।
शुभकामनाओं सहित....

रियर एडमिरल आर. के. श्रावत (नि.) भानौ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश...

प्रिय मान्यवर

राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' का पंचम अंक प्रकाशित होने पर मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। यह कंपनी के लिए गौरव की बात है कि पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने आप में विशिष्ट रहता है। पत्रिका की शुरुआत से ही पुरस्कारों का सिलसिला चल रहा है अभी तक के प्रत्येक अंक को पुरस्कार योग्य समझा गया है, इससे प्रमाणित होता है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री ज्ञानवर्धक, रुचिकार, पठनीय और उपयोगी होती है। राजभाषा का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। पत्रिका का चतुर्थ अंक देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के परिचय तथा कृतित्व पर आधारित है जिसमें उनके कृतित्व को प्रमुखता दी गई है।

पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। इसके साथ ही कंपनी के नवीनतम उत्पादों तथा बुनियादी सुधार में हुई प्रगति की जानकारी पाठकों तक पहुंचाना है। इस अंक में कंपनी के मूल कार्यों का विवरण और उपलब्धियों का ब्योरा देना मेरा उद्देश्य है इसके साथ ही अपना मनोगत व्यक्त करने के लिए कर्मचारियों को साहित्यिक मंच उपलब्ध कराना भी मेरी जिम्मेदारी है। माझगांव डॉक में पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य तीन वर्षों में प्राप्त करने के पश्चात उसे कायम रखना सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है।

आशा करता हूँ कि कंपनी के सभी कर्मचारी अपना अधिकतम शासकीय कार्य हिन्दी में करते हुए पत्राचार प्रगति कायम रखेंगे।

मैं सम्पादक मंडल के सदस्यों तथा राजभाषा अनुभाग को सुंदर पत्रिका प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

कमोडोर राकेश आनन्द
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का विचार...

राजभाषा पत्रिका 'जलतरंग' का पंचम अंक निरंतर समय से प्रकाशित होने पर मुझे प्रसन्नता हो रही है। वर्ष 2013 से एमडीएल की प्रथम पत्रिका जलतरंग का प्रकाशन आरंभ हुआ और अब तक प्रत्येक अंक को पुरस्कार योग्य माना गया है।

'जलतरंग' का चतुर्थ अंक देश के महान साहित्यकारों को उचित सम्मान देने और उनके लेखन के बारे में व्यापक जानकारी देने के लिए विषय वस्तु के रूप में प्रकाशित किया गया है। कंपनी के कर्मचारी अपने उत्पादन और कार्यालय संबंधी कार्यों को करते हुए साहित्यिक रुचि का प्रदर्शन इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। पत्रिका का हर एक अंक अपने आप में विशिष्ट रहा है जिसके कारण इसे पुरस्कार की श्रेणी में टालिक कंपनियों के बीच माना जाता है और पत्रिका ने अपनी उपयोगिता स्पर्धा में सिद्ध कर दिया है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का चतुर्थ अंक पुरस्कार के योग्य है।

राजभाषा हिन्दी का दैनिक कार्यालयीन कार्यों में उपयोग करना देश के प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी है। इस महान उद्देश्य को कंपनी के सभी कर्मचारी दायित्व के साथ बखूबी निभा रहे हैं। प्रत्येक कर्मचारी के सहयोग से कंपनी में पत्राचार का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है। भारी जिम्मेदारी से इसे कायम रखना है।

मैं आशा करता हूँ कि कंपनी के सभी अधिकारी और कर्मचारी अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह राजभाषा के प्रति बनाए रखेंगे एवं पत्राचार लक्ष्य कायम रखने में सतत आगे रहेंगे। पत्रिका का पंचम अंक कंपनी के गौरवशाली इतिहास और उत्पादन पर केन्द्रित है। मैं पत्रिका के सफलता की कामना करता हूँ और सम्पादक मंडल को बधाई देता हूँ।

किशोर चंद दास
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादकीय

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड देश का प्रमुख शिपयार्ड है। यह महाराष्ट्र के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित है। इसका विकास का सन् 1774 से आरंभ हुआ। यहाँ पर समुद्री तट के किनारे दलदली भूमि में एक सुखी गोदी का निर्माण मराठा शासन के दौरान हुआ था। प्रारंभ में यहाँ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों की मरम्मत होती थी। उस छोटी शुरुआत से माझगांव डॉक आज विशालकाय रूप में विकसित हुआ है और आज निरंतर बुनियादी सुविधाओं के विकास से वैश्विक स्तर पर प्रतियोगिता करने में सक्षम है।

प्रारम्भ में यहाँ लकड़ी के जहाज बनाए जाते थे। उनका व्यापक रूप से विवरण इस अंक में पाठकों की जानकारी हेतु दिया गया है। सन 1817 में इस यार्ड में निर्मित: त्रिंकोमाली नाम की वुडेन बोट आज भी चलायमान अवस्था में इंग्लैंड के लीवर पूल में सुरक्षित है। इसका निर्माण वाडिया परिवार द्वारा किया गया था जो उस समय इस यार्ड के मुख्य प्रबन्धक थे। इसके पहले पुर्तगाली शासको ने अपनी जहाजों की मरम्मत के लिए सन 1630 में सूरत में यार्ड स्थापित किया था। अंग्रेजों के शासन काल में लकड़ी की अनेक प्रकार और क्षमता की बोट का निर्माण किया था। विकास का चक्र घूमता रहा और नए प्रयोग के तहत एम एस प्लेट से जहाजों का निर्माण किया गया जो भाप से संचालित होती थी। इन जहाजों का उपयोग माल ढोने एवं यात्रीयों को पहुचाने के लिए किया जाता था। सन 1945 के बाद युद्धपोतों का निर्माण सुरक्षा की दृष्टि से सबल देशों द्वारा आत्मरक्षा हेतु किया गया है।

सन 1960 में भारत सरकार द्वारा अधिग्रहण करने के पश्चात लिएंडर श्रेणी के अंतर्गत 06 युद्धपोतों का निर्माण भारतीय नौसेना के लिए किया गया था। वर्तमान समय में अतिआधुनिक युद्धपोतों एवं पण्डुब्बियों का निर्माण कर देश को आत्मनिर्भर बनाने की पुरजोर कोशिश की जा रही है।

पत्रिका का पंचम अंक कंपनी के मूल उत्पादन व्यवसाय पर आधारित है। राजभाषा हिन्दी के प्रति कंपनी अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए नियमित रूप से पत्रिका प्रकाशित कर रही है। माझगांव डॉक प्रबंधन का विचार है कि भारत सरकार राजभाषा विभाग के निर्देशों का पालन अक्षरशः लागू किया जाए।

कंपनी के कर्मचारी अपने तकनीकी कार्यों में व्यस्त रहने के बावजूद भी साहित्यिक रुचि के विषयों और सामाजिक मुद्दों पर रचनाएँ कविता, लेख, यात्रा वृत्तांत आदि पत्रिका के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

पत्रिका का मूल उद्देश्य अपने संस्थान की उत्पादकता के बारे में लोगों की जानकारी देना और राजभाषा की जिम्मेदारी का निर्वाह करना है।

श्री बी डी साठे
अमप्र (मा.सं), न्हावा यार्ड

माझगांव डॉक का अभूतपूर्व अतीत

श्री रामप्रीत यादव
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सन 1769 में यह निर्णय लिया गया कि एक नये डॉक का निर्माण माझगांव में किया जाएगा, जिससे कि 300 टन बर्थेन से कम की जहाज इसका उपयोग कर सकें। बाम्बे परिषद द्वारा बनाये गये प्रस्ताव को ईस्ट इंडिया कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने सन 1771 में अनुमोदन दे दिया जिसमें निर्माण की अनुमानित लागत रुपये 10,025/- निर्धारित की गई। पहला निर्देश सन 1774 में माझगांव डॉकयार्ड के लिए दिया गया, जिसमें डॉक तथा पियर मास्टर ने रिपोर्ट किया कि डॉक बनकर तैयार हो गया है। माझगांव डॉक एक ऐसे स्थान पर बनाया जिसके बारे में माना जाता है कि सन 1773 से यहाँ कीचड़ में ही एक ड्राई डॉक मौजूद था। इसकी लम्बाई 154 फूट, चौड़ाई 33 फूट तथा गहराई 07 फूट थी। इसका प्रवेश द्वार माझगांव क्रीक की तरफ था जिसे बाद में कसारा बेसिन के नाम से सन 1968 से जाना जाता है। यह डॉक आज भी अपने मूल रूप में है। इसका नविनीकरण किया गया है।

10 अक्टूबर सन 1808 के सार्वजनिक पत्र में उल्लेख है कि एचएमएस समारंग की ग्राउंडिंग माझगांव डॉक में की गई थी। यद्यपि हमारे पास, दिखाने के लिए कोई सरकारी अभिलेख नहीं है कि माझगांव डॉक में जहाज निर्माण का कार्य कब आरम्भ हुआ। यहाँ पर्याप्त प्रमाण है कि माझगांव डॉक बाम्बे डॉकयार्ड के सहायक यार्ड के रुप में कार्य करता था। यह अधिक सम्भावित है कि अनेक जहाजों के हल माझगांव के स्लीप-वे पर बनाये गये थे और उनका जलावतरण करने के बाद खींचकर बाम्बे डॉकयार्ड में लाया गया और बाह्य सज्जा तथा कमीशनिंग की गई। यह भी विश्वसनीय है कि अनेक जलयान बाम्बे डॉकयार्ड को दिए गये थे जो माझगांव में ही निर्मित थे।

पहले से माझगांव में जहाज निर्माण का प्रमाण प्रकट होता है। यह एक स्लीप-वे पर समुद्र के किनारे निर्माण किया जाता था। जलावतरण समारोह में जहाज को पहली बार पानी में उतारा जाता था। 19 मार्च 1806-21 अप्रैल 1832 तथा 13 फरवरी 1854 के बाम्बे कुरिअर में रिपोर्ट की गई थी कि एचसीएस थॉमस ग्रेनविले, एचसीएस शैनॉन तथा एचसीएस माउन्ट स्टूअर्ट एलफिस्टन का जलावतरण क्रमश: माझगांव डाकयार्ड में किया गया था।

बाम्बे डॉकयार्ड में निर्मित जलयान

'पट्टीमार अथवा फाटीमार'

यह एक बढ़िया रुपांकित दो मस्तूलों वाला तेज सेलिंग बोट था जिसका भार लगभग 100 टन का था। यह पतला तेज और लो जिब बूम के साथ जैसे आगे लगभग 5 मीटर निकला हुआ था. एक विशिष्ट पट्टीमार लगभग 25 मीटर लम्बा, 8 मीटर बीम के साथ, 13 मीटर लम्बी कील से जुड़ा होता था। इसका मुख्य मस्तूल लगभग 20 मीटर ऊँचा झुका हुआ था जबकि पिछला मस्तूल लगभग 11 मीटर ऊँचाई पर था।

'गुराब' अथवा 'ग्रैब'

कुछ गुराबों में तीन मस्तूल होते थे और यह 300 टन तक का वजन खींच सकते थे। जबकि छोटे जहाजों में दो मस्तूल होते थे और वे 150 टन का वजन खींच सकते थे। इनका निर्माण पानी खींचने

'गुराब' अथवा 'ग्रैब'

के लिए किया जाता था, क्योंकि वे अपनी लम्बाई के अनुपात में चौड़े थे और मध्य से अंत तक पतले थे। एक गुराब तोप के दो खंड को ढो सकता था। जिसका वजन 9 से 12 पाउन्ड हो।

'गालीवट' अथवा 'गालबट'

मूल रूप से लम्बे रो-बोट्स का विस्थापन लगभग 70 टन था। सामान्यतः ऐसे पोतों में एक मस्तूल होता था जो ट्रँग्यूलर सेलिंग करता था कभी-कभी एक छोटा पिछला मस्तूल भी लगाया जाता था। एक गालीवट छह

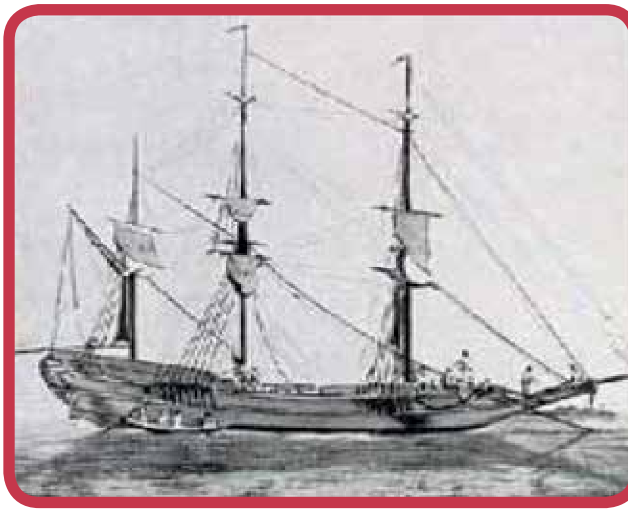

'गालीवट' अथवा 'गालबट'

से आठ तोप के खंडों को ढो सकता था। जिनका वजन दो से चार पाउन्ड के बीच था। उनको चालीस अथवा पच्चास मजबूत चप्पू (डांड) के माध्यम से चलाया जाता था और उन की गति चार नाट थी।

ब्रिगनटाईन

एक जलयान था जिसमें दो मस्तूल होते थे जो दोनों तरफ से सेलिंग कर सकती थी। इसे इस तरह रुपांकित किया गया था जिसे खेवाई की जा सकती तथा सेलिंग भी की जा सकती थी। केवल एक ब्रिगटनटाईन का निर्माण सन 1743 में बाम्बे डाकयार्ड में मद्रास प्रेसिडेन्सी के लिए किया गया था।

ब्रिग

एक प्रकार का जलयान है जिसमें दो मस्तूल होते हैं। इनका उपयोग युद्धपोत के साथ-साथ व्यापारिक पोते के लिए भी किया जाता था। ब्रिग की लम्बाई में विभिन्नता होती थी, जो 75 फूट से 165 फूट के बीच तथा विस्थापन क्षमता 480 टन तक होता था। ब्रिग का उपयोग छोटे युद्धपोत के रुप में किया जाता था। यह 10 से 18 तोप ढो सकती थी। ब्रिग का निर्माण बाम्बे डॉकयार्ड में सन 1785 से 1838 के बीच किया

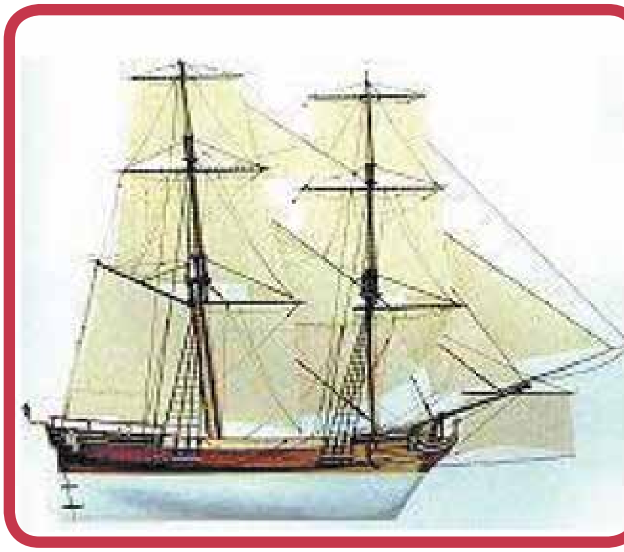

ब्रिग

गया, उसका नाम 'हेस्टिग्ज्" रखा गया था और आखिरी ब्रिग 'कोलेरान 200 टन का था जिसका निर्माण सन 1838 में बंगाल पायलट सर्विस के लिए किया गया था।

'स्नो'

यह ब्रिग का रुपांतरण था जो ब्रिग के समान ही दो मसतूलों से चलाया जाता था और इसमें एक 'ट्राई सेल' मास्ट लगा होता था जिसे

'स्नो'

'स्नोमास्टर' कहा जाता था यह मुख्य मस्तूल से थोड़ी दूरी पर था। 'स्ना' मूख्य रुप से पोत थे साथ ही युद्धपोत भी थे। 'स्नो', अधिकांशतः ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा तथा 'बंगाल पायलट सेवा के लिए निर्मित किये गये थे।

'स्कूनर'

तत्वत: दो अथवा अधिक मस्तूलों वाले जलयान होते थे जिनका उपयोग आगे और पीछे से सेलिंग के लिए किया जाता था। एक स्कूनर के लिए मस्तूलों की संख्या निर्धारित नहीं होती थी। सामान्यत: दो

'स्कूनर'

होती थी लेकिन तीन और चार मस्तूलों वाले जलयान भी पाये जाते थे। स्कूनर की ख्याति इसके गति तथा प्रतिवात के कारण थी। वे मूख्यत: पायलट जलयान के लिए पसंद की जाती थी। बाम्बे डॉकयार्ड में निर्मित स्कूनर सामान्यत: 140 टन के छोटे जलयान थे और बड़े जलयान मुख्य रुप से बंगाल पायलट सर्विस के लिए बनाये गये थे। सन 1834 में 'मस्कत के इमाम' के लिए 205 टन का 'ताजे' नाम का बड़ा स्कूनर बनाया गया था। सन 1736 से 1854 के बीच पच्चीस स्कूनर का निर्माण किया गया था। बाम्बे डॉकयार्ड में निर्मित पहला जलयान सन 1736 में बनाया गया इसका नाम एचसीएस ड्रेक था जो (सम्माननीय कम्पनी सेवा हेतु बना था)

'स्लूप'

स्लूप मुख्यत: एक मैन ऑफ वार है जो कारवेट और युद्धपोत के बीच आकार में भिन्न होती है। सन 1740 और 1857 के बीच बाम्बे डाकयार्ड में रायल नेवी के लिए 30 स्लूप का निर्माण किया गया था। जो सम्ननीय कम्पनी की सेवा तथा कुछ बंगाल पायलट सेवा के लिए थे। वाष्प की खोज के साथ ही बाम्बे डॉकयार्ड ने वाष्प स्लूप का निर्माण किया था। सन 1839 में एचसीएस विक्टोरिया नामक वाष्प स्लूप का निर्माण किया था जिसके खींचने की क्षमता 714 टन थी और वह चार तोप ढोने में सक्षम था यह कम्पनी की सेवा के लिए निर्मित किया गया था।

'क्लीपर'

क्लीपर बहुत तेजी से सेलिंग करने वाला जहाज था। इसमें अनेक मस्तूल लगे होते थे और एक वर्गाकार रिंग भी जुड़ा रहता था। ये जलयान बल्क कार्गो ढो सकते थे। इनका निर्माण मुख्य रुप से व्यापार के लिए किया गया

'क्लीपर'

था। दो क्लीपर का निर्माण किया गया था जिसमें पहले का नाम 'लैडी ग्रांट'था यह 239 टन तक का भार खींच सकता था और इसका उपयोग अफीम व्यवसाय हेतु निजी व्यापार के लिए किया गया। दूसरे क्लीपर का नाम 'अर्दाशीर' था और इसके खींचने की क्षमता 422 टन थी।

बी 1 - बाम्बे डॉक

लोवजी नुसरवानजी, डॉकयार्ड के पहले मुख्य मास्टर बिल्डर सन 1736 में बाम्बे आये थे। डॉकयार्ड के स्थान का चुनाव लोवजीने ने किया था और यह माना जाता है, उनकी निगरानी में ही कार्य पूरा किया गया था।

भारत में बनने वाले पहले बोट का नाम 'अपर ओल्ड बोम्बे डॉक' रखा गया था और यह जुलाई 1750 में बनकर तैयार हुआ था। इसकी लम्बाई 209 फूट, चौड़ाई 47 फूट और गहराई 15 फूट थी। बाम्बे परिषद ने डाकिंग की दर रुपया 150 प्रति जहाज; पहले स्प्रींग टाईड अवधि के लिए और रुपये 100 प्रति स्प्रींग टाईड के बाद निर्धारित किया था। यह डाक आज भी उपयोग में है।

बी 1 - बाम्बे डॉकयार्ड की स्थापना

बाम्बे में डॉक निर्माण के लाभ को अंग्रेजों ने पहले ही जान लिया था क्योंकि इन द्वीपों से उनका पहले से संबंध था। यहाँ ज्वार भाटा का बड़ा क्षेत्र था और लंगर डालने के लिए किनारों से समीपता थी। जिसके कारण अवतरण स्थानों पर थोड़ा कृत्रिम बदलाव की आवश्यकता थी जिससे उस समय जहाज निर्माण और जहाज मरम्मत कार्यों को पूरा किया गया था। इस प्रकार एक मैरीन यार्ड की स्थापना मुम्बई में सन् 1734 में की गई।

19वी शताब्दी में माझगांव डॉक लिमिटेड में निम्नलिखित विशेष जहाजों का निर्माण हुआ था।

नाम	प्रकार	जलावतरण
होरमासजी बोमनजी	मरचैन्ट मैन	31 मई 1828
एचसीएस टिगरिस	ब्रीग	20 अप्रैल 1829
चार्ल्स माल्कम	मरचैन्ट मैन	04 मई 1829
जमसेटजी जीजीभाय	मरचैन्ट मैन	06 फरवरी 1833
इन्दूस	स्टीमर	16 अगस्त 1833
मैरी गार्डोन	मरचैन्टमैन	13 जुलाई 1839
क्वीन विक्टोरिया	युद्धपोत	22 दिसम्बर 1844
जमसेटजी जीजीभाय	पैडल स्टीमर	12 नवम्बर 1848
लोवजी परिवार	स्टीमर	16 फरवरी 1851
माउन्ट स्टीवर्ट एल्फिंस्टन	स्टीमर	15 फरवरी 1854
सिकन्दर शाह	स्टीमर	19 मार्च 1859

सी 2 दि बीआईएसएन

कलकत्ता और वर्मा स्टीम नेवीगेशन कम्पनी की स्थापना सन-1856 में कलकत्ता और रंगून के बीच ईस्ट इंडिया कम्पनी की मेल सेवा मांगों को पूरा करने के लिए किया गया। स्काटलैंड के नागरिक श्री विलियम मैकीनॉन और राबर्ट मैकेन्जी के दिशानिर्देश में इस कम्पनी की शुरुवात की गई। इसमें केवल दो स्क्रू प्रोपेल्ड जलयान थे। पहला एसएस बाल्टिक और दूसरा एसएस केप आफ गुड होप-1 बाद में सन-1862 में कम्पनी अपना नाम बदलकर 'ब्रिटिश इंडिया नेवीगेशन कम्पनी' रख लिया जिसे संक्षेप में बीआई कहा जाता था।

सन-1870 से 1914 तक पी एंड ओ एसएन कम्पनी और बीआई कम्पनी माझगांव के नार्थ और साउथ यार्ड से अलग-अलग परिचालित होती थी। इन दोनो कम्पनियों का विलय सन-1919 में हो गया और बीआई, पी एन्ड ओ समूह की कम्पनी एक जटिल विलयन के माध्यम से हो गई, लेकिन इसने अपनी पहचान और संगठन को अलगे 60 वर्षों यानि सन 1962 तक निरंतर बनाये रखा, जब इसका पूर्ण रूप से पी एन्ड ओ में विलय कर दिया गया था।

सी 3 अशांत काल प्रथम विश्व युद्ध

अगस्त 1914 में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। दो माह के भीतर ही पी एंड ओ की सौ से अधिक जहाजों को सशस्त्र क्रुजर, सेनापोत, एम्बुलेन्स और हास्पीटल पोत तथा परिवहन पोत के रूप में रुपांतरित किया गया। जिससे कि ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों में सहायता की जा सके। इसके लिए आस्ट्रेलिया से घोड़े मंगाये गये और भारत से खच्चर और ऊँटों की आपूर्ति वार लाजिस्टिक के रुप में सहायता करने के लिए भेजा गया। पहला मित्रराष्ट्र रक्षादल बम्बई से सेना लेकर गया, जिसमें बीआई की पाँच जहाजें शामिल थी। लगभग प्रति महिने पी एंड ओ की संयुक्त जहाजें साथ देने के लिए बम्बई से सेलिंग करती थी। माझगांव डॉक ने भी ब्रिटेन की युद्ध प्रयासों की सहायता मेसोपोटामियां नदी सेवा के लिए बार्ज का निर्माण करके किया था।

सी 4 एमडीएल की उत्पत्ति 1934

पी एंड ओ एस एन कम्पनी और बीआईएसएन कम्पनी की साझेदारी के परिणाम स्वरुप माझगांव डॉक लिमिटेड की स्थापना हुई जिसका विलीनीकरण / निगमीकरण पब्लिक लिमिटेड कम्पनी के रुप में - भारतीय कम्पनी अधिनियम - 1913 के अन्तर्गत 26 फरवरी 1934 को किया गया। कम्पनी का पंजीकृत कार्यालय, मैनेजिंग एजेन्ट का कार्यालय मेसर्स मैकिनॉन मैकेन्जी एंड कम्पनी, बेलार्ड पियर, मुम्बई में स्थित था. एमडीएल का ट्रेड मार्क और मुहर भी उसी समय अपनाया गया।

सी 4 स्टॉर्मी सिज् डब्ल्यू डब्ल्यू आई आई

03 सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध शुरु हो गया। युद्ध के दौरान माझगांव डॉक लिमिटेड का उपयोग पी एंड ओ बेड़ा के पैसेन्जर लाईनर का रुपांतरण सेना पोत, हॉस्पीटल पोत के रुप में किया गया और व्यापारिक

(एम एम एस त्रिंकोमाली 1812)

(एच एम एस गंगेस)

पोतों पर अरमामेन्ट की फिटिंग मित्र राष्ट्रों के लिए की गई एमडीएल ने युद्ध में क्षतिग्रस्त जहाजों की मरम्मत का कार्य भी किया था। एक टारपीडो के युद्ध में क्षतिग्रस्त युएसएस बोईस का सफल मरम्मत एमडीएल द्वारा किया गया। इसके साथ ही 4678 जलयानों की मरम्मत, रुपांतरण अथवा पुर्नसज्जा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एमडीएल द्वारा की गई थी।

सी 5 स्टीम वेहिकल

एमडीएल के सेन्टीनेल वैगन वर्क्स द्वारा दो भाप वाले वाहन का निर्माण सन 1916 में किया गया। इनका उपयोग कोल फायर्ड वर्टीकल बॉयलर्स और डॉक क्षेत्र में सामग्री ढोने के लिए तथा ड्राई डॉक में जहाजों को खींचने के लिए विंच के रुप में किया जाता था। इन वाहनों का प्रदर्शन नेहरु विज्ञान संग्रहालय मुम्बई और विश्वेसवर्या औद्योगिक एवं तकनिकी संग्रहालय, बंगलोर में किया गया था। विश्वेसवर्या संग्रहालय को उपहार में दिया गया वैगन सन 1971 तक चालू अवस्था में था और उस वर्ष में आयोजित विंटेज कार रैली में भी भाग लिया था।

सी 6 समय का परीक्षित ट्रेडमार्क

(एचएमएस वेलेजली 1815)

(एच एम एस मींडेन 1810)

एमडीएल ट्रेडमार्क का अनुमोदन सन 1951 में किया गया वर्षों बाद भी, इसने गुणवत्ता, विश्वसनीयता और लागत परिणाम तथा विकासशील देशों की समुद्री आकांक्षा एवं तकनीकी सूझबूझ प्रस्तुत किया। ट्रेड मार्क आज भी मामूली रुपांतरण के साथ निरंतर जारी है।

सी 7 एमडीएल एक सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम

सन 1957 में आंतरिक मंत्री परिषद समिति का गठन एक सरकारी जहाज निर्माण यार्ड देश के पश्चिमी तट पर स्थापित करने की सम्भावना पर विचार करने के लिए किया गया, जिसमें एमडीएल एक नैसर्गिक पसन्द थी।

निदेशक मंडल की ऐतिहासिक बैठक दिनांक 10 मई 1960 को हुई जिसमें कम्पनी के शेयरों को सरकार द्वारा मनोनित नियोजकों को हस्तांन्तरित कर दिये गये। माझगांव डॉक लिमिटेड 14 मई 1960 को सवेरे 8.00 बजे एक सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम घोषित हो गया। जब तत्कालीन माननीय रक्षा मंत्री - श्री. वी. के. कृष्णमेनन ने तिरंगा झंडा फहराया और एक नाम पट्टिका का अनावरण किया। राष्ट्रीयकरण के बाद एमडीएल को भारतीय नौसेना के लिए 50 टन का हापर बार्ज बनाने के लिए पहला आदेश प्राप्त हुआ था।

सी 8 ड्रेजर

सन 1966 में माझगांव डॉक लिमिटेड तथा मेसर्स आईएचसी और मेसर्स सीड्रेक लिमिटेड, स्कॉटलैंड के बीच 10 वर्षों का सहयोग / समझौता / सहायता करने हेतु किया था। जिसमें एमडीएल, भारत में किसी भी प्रकार के ड्रेजर निर्माण की जिम्मेदारी लेगा। एमडीएल ने तत्पश्चात अनेक ड्रेजरों का निर्माण किया। जैसे भारतीय नौसेना के लिए ‘किचोधारा’, केरल सरकार के लिए ‘टी मीना’, कांडला पोर्ट ट्रस्ट के लिए ‘कच्छ वल्लभ’ और मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट के लिए ‘‘विशाल‘‘‘‘का निर्माण किया गया था।

किचोधरा

आईएनएस भाटकल और आईएनएस बल्सार

आधुनिक काल के पहले युद्धपोत आईएनएस भाटकल का निर्माण एमडीएल में भारतीय नौसेना के लिए एक आंतरिक माइनस्वीपर के रुप में

भाटकल

सन 1968 में किया गया। इन जहाजों में विशेष लकड़ी का कार्य किया गया थ और इनका हल फाईबर ग्लास से लैमीनेटेड था।

सी 8 - अन्य आदेश

सन 1970 में युके की गुम्बा शिपिंग कम्पनी के लिए 3800 डीडब्लूटी की 6 जलयानों का निर्माण किया गया। सन 1974 में भारतीय नौवहन निगम

गोम्बा

हर्षवर्धन

के लिए हर्षवर्धन नामक जहाज का निर्माण किया था। सिंगापूर की फर्म मेसर्स ट्रैटस मैरीटाईम लिजिंग प्राइवेट लि. के लिए सन 1976 में 2500 डी डब्लू टी के दो मालवाहक जहाजों, एशियन प्रोग्रेस और एशियन वेन्चरा का निर्माण किया था।

सी 8 पश्चिमी तट संघ

सन 1968 में भारत सरकार ने ऑल इंडिया क्रैश प्रोग्राम का शुभारम्भ भारतीय मत्स्य उद्योग का आधुनिकीकरण करने के लिए 40 डीप सी फिशिंग ट्रॉलर्स की आवश्यकता पूरा करके किया। पश्चिमी तट पर

फिशिंग ट्रॉलर्स

जहाज निर्माताओं के एक संघ की स्थापना की गई, जिसमें एमडीएल, गोवा शिपयार्ड, अलकाक एवं ऐश डाउन कम्पनी, ब्रन्टन एंड कम्पनी, इंजिनियर्स लिमिटेड और सिंन्दिया वर्कशापस् लिमिटेड का समावेश था। यह एक अनोखा प्रयोग था जिसमें सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र की सत्ता का संघ था जिसे पूर्ण सफलता मिली थी।

तटरक्षक - ओपीवीएस

19 अगस्त 1978 को तटरक्षक दल का गठन अलग से भारतीय नौसेना में किया गया। एमडीएल ने छह प्रतितट निगरानी जलयानों का निर्माण

तटरक्षक

भारतीय तट रक्षक दल के लिए किया है। पहले तटरक्षक पोत विक्रम की सुपुर्दगी 19 दिसम्बर 1983 को की गई।

कैडेट प्रशिक्षण पोत आई एन एस तीर

स्वतन्त्रता के पश्चात नौसेना कैडेटों के प्रशिक्षण हेतु देश में कोई प्रशिक्षण पोत नहीं था

07 सितंबर 1981 को पोत का कार्य आरंभ हुआ और जलावतरण 15 अप्रैल 1983 को किया गया।

तीर

एमडीएल ने आई एन एस तीर की सुपुर्दगी 27 मार्च 1983 को किया। नौसेना के अनेक अधिकारियों ने इस जलयान पर प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

बीएसएफ के लिए तैरते हुए बीओपी

एमडीएल ने तैरते हुए नौ बार्डर आउट पोस्ट का निर्माण किया, जो उथले जल में चलने में सक्षम हैं और उसमें कार्मिकों के रहने, आयुध एवं शस्त्र रखने की सुविधा है। ये गतिशील बोट हैं। इनकी नियुक्ति ब्रह्मपुत्र के बेसीन तथा कच्छ के रण की सुरक्षा के लिए किया गया।

बीओपी

कारवेट्स

एमडीएल ने दो कारवेटस् का निर्माण किया, पहला आईएनएस - 'खुकरी' तथा दूसरा आई एनएस - 'कुठार'। एमडीएल ने आईएनएस 'किर्च' की बाह्य सज्जा भी पूरा किया जिसका हल जीआरएसई ने बनाया था।

कारवेट्स

डी2 - परियोजनाओं का अंकन करना

एमडीएल में निर्मित जलयानों को 5 डीजीट की यार्ड संख्या दी जाती है। जिसमें पहला डीजीट परियोजना के प्रकार का अर्थ व्यक्त करता है, दूसरा डीजीट जहाज को प्रकट करता है, तीसरा डीजीट जहाज की श्रेणी को दर्शाता है। अन्तिम दो डीजीट का आबंटन जलयान के क्रम संख्या के रुप में किया जाता है।

लिएंडर परियोजना

भारत में आधुनिक युद्धपोत का निर्माण, लिएंडर परियोजना के साथ

लिएंडर श्रेणी पोत आईएनएस नीलगिरी

आरम्भ हुआ। 23 अक्टूबर 1968 को वाटरशेड डे था क्योंकि उसी दिन भारत की सम्माननीय प्रधान मंत्री - श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस परियोजना के पहले पोत का जलावरण किया, जिसका नाम आईएनएस 'नीलगिरी" था। आईएनएस नीलगिरी की सुपुर्दगी 03 जून 1972 को श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। एमडीएल द्वारा कुल छह लिएंडर श्रेणी युद्धपोत का निर्माण किया गया।

प्रतितट संरचना

एमडीएल ने सन् 1976 में प्रतितट संरचना में विविधता लाया और पहला प्रतितट मंच ओएनजीसी को मई 1979 में सुपुर्द किया। इस प्रकार एमडीएल ने कुल नौ प्रतितट मंच और तीन जैक अप रिग्स् का निर्माण ओएनजीसी के लिए किया।

प्रतितट संरचना

आई एन एस त्रिशुल

आई एन एस त्रिशुल का आधुनिकीकरण तथा रुपांतरण करना सबसे लम्बा

त्रिशुल

और प्रतिष्ठापूर्ण कार्य था। यह युद्धपोत भारतीय नौसेना का एक व्हिटबी श्रेणी का पोत था। दिनांक 17 नवम्बर 1979 को यह जहाज एमडीएल को आधुनिकीकरण करने के लिए सौंप दिया गया। आधुनिकीकरण में एअर कंडिशनिंग प्लांट लगाना, हेलो हैंगर और सम्बंधित प्रणाली के साथ आयुध एवं सेन्सर का नवीनीकरण शामिल था। नवीनीकरण में हल प्लेट्स का 90 प्रतिशत नवीनीकरण किया गया और सभी बड़े मशीनरी तथा प्रणालियों की ओव्हर हालिंग की गई थी।

सेल ट्रेनिंग शीप एसटीएस वरुण

एमडीएल समय का अतिक्रमण कर आगे बढ़ा, इस शिपयार्ड को एसटीएस वरुण दो मस्तूलों वाला जहाज 'ब्रिग" बनाने हेतु आह्वान किया गया। यह

वरुण

जहाज समुद्री कैडेट प्रशिक्षण के लिए था। इस जहाज की सुपुर्दगी 12 मार्च 1981 को की गई।

गोदावरी श्रेणी

लिएंडर परियोजना के माध्यम से बेहतर अनुभव प्राप्त करने के उपरान्त एमडीएल ने दूसरी पीढ़ी के युद्धपोत निर्माण करने की जिम्मेदारी भारतीय नौसेना के लिए किया, जिसका नाम 'गोदावरी श्रेणी" रखा गया। गोदावरी श्रेणी के युद्धपोत आकार में बड़े थे और इनकी प्रतिस्थापन क्षमता 3600

गोदावरी

टन है। ये युद्धपोत निर्देशित मिसाईल से सज्ज तथा दो सी किंग हेलीकॉप्टर वहन करने में सक्षम हैं।

एम एस वी

एमडीएल ने एक बहुत उद्देशीय आपूर्ति जलयान (एमएसवी) समुद्र सेवक का निर्माण ओ एन जी सी के लिए वर्ष 1988 में किया गया था और भारतीय नौसेना के लिए डाइविंग सपोर्ट वेजल आई एन एस निरीक्षक का निर्माण वर्ष 1987 में किया गया था। इसके अलावा दो स्टेट ऑफ आर्ट बहुउद्देशीय सहायक जलयानों का निर्माण किया गया और मेक्सिको तथा नॉर्वे के ग्राहकों को क्रमशः 2012 तथा 2014 में सुपुर्द किया गया।

प्रतितट आपूर्ति जलयान

एमडीएल ने आठ प्रतितट आपूर्ति जलयान, सिन्धु श्रेणी के क्रम में ओएनजीसी के लिए वर्ष 1982 से 1993 के बीच किया था।

प्रतितट आपूर्ति जलयान

मीनी रत्न पदवी

उन्नीसवी सदी के अंत में क्रियाशीलता की तेज चाल ने एमडीएल के टर्न ओवर और लाभप्रदता को बढ़ा दिया था। वर्ष 1999-2000 में एमडीएल का उन्नयन सुची 'बी" से सुची 'ए" के सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम में हो गया। वर्ष 2006 में एमडीएल को मिनी रत्न-1 की पदवी प्रदान की गई।

श्री प्रसाद कुलकर्णी
जनसम्पर्क कार्यालय

वो मासूम सा हँसता है।

वो मासूम सा हँसता है, तब उसमें ईश्वर दिखता है
मैं उसे समर्पित होती हूँ, वो मन में आकर बसता है।।

युगों युगों का प्यार छलकता
उसकी भावुक आंखों में
जैसे नंदादीप जले हैं
मन के गर्भागार में
मैं सुझबुझ मेरी खोती हूँ, वो सचमुच गले लगाता है
मैं उसे समर्पित होती हूँ, वो मन में आकर बसता है।।

तन में बजने लगती वीणा
सुनकर उसकी भाषा
जीवन मंगलमय लगता है
अत्योत्तम की आशा
ऋतु अंगड़ाई लेती है, और झरझर झरना बहता है
मैं उसे समर्पित होती हूँ, वो मन में आकर बसता है।।

जीने का विश्वास दिलाता
अपनी दृढ़तम बातों से
दर्द मिटाता, दुःख भगाता
अपने अद्भुत हाथों से
सदियों के दुख भूलती हूँ और जीने का मन करता है
मैं उसे समर्पित होती हूँ, वो मन में आकर बसता है।।

मानो 'उसका" पुत्र खड़ा है
अंबर के दरवाजे पर
उसके रुप में 'परम पिता" दे
दर्शन संतोषित होकर
मैं उसे प्रार्थना करती हूँ वो मौन रहा अपनाता है
मैं उसे समर्पित होती हूँ वो मन में आकर बसता है।।

युद्धपोत निर्माण

श्री अमित कुमार
सह-प्रबंधक (रूपांकन)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड आजकल जहाज निर्माण खंड के अंतर्गत एक साथ 3 बड़े युद्धपोत परियोजना पर कार्य कर रहा है जिन्हें पी-15ए, पी-15बी और पी-17ए नाम दिया गया है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी परियोजनाएं स्वदेशीकृत हैं, तथा एमडीएल द्वारा रूपांकित हैं।

क्र.सं.	परियोजना	युद्धपोत	सुपुर्दगी वर्ष	स्वदेशीकरण का प्रतिशत
1	पी 15	दिल्ली	1997	स्वदेशीकृत / विषय सूची उत्पादन लागत 42.00
		मैसूर	1999	
		मुंबई	2001	
2	पी 17	शिवालिक	2010	52
		सतपुड़ा	2011	
		सह्याद्रि	2012	
3	पी 15ए	कोलकाता	2014	59
		कोची	2015	
		चेन्नई	2016 (पी)	

पी 15 विध्वंसक

भारतीय नौसेना तथा अनेक स्वदेशी एजेंसियों ने भारत में युद्धपोत निर्माण के दृश्य विधान को बदल दिया है। गोदावरी श्रेणी पोतों के निर्माण ने अपनी कार्य निष्पादन क्षमता को प्रदर्शित करते हुए यह साबित कर दिया कि भारत अपने जहाजों के निर्माण के लिए रूपांकन, आरेखन तथा निर्माण प्रक्रिया को स्वत: पूरा कर सकता है। भारत सरकार ने स्वदेशी पोत निर्माण तकनीकी और भारतीय नौसेना तथा रूस के डिजाइन ब्यूरो से सहायता लेकर तीन विध्वंसकों के निर्माण का आदेश माझगांव डॉक लिमिटेड को दिया था। इसका नाम भारत के तीन ऐतिहासिक शहरों के नाम पर रखा गया था - दिल्ली, मैसूर और मुंबई। इन जहाजों के निश्चित उपकरणों की आपूर्ति का अनुबंध सोवियत यूनियन से किया गया।

01 फरवरी 1991 को आईएनएस दिल्ली का जलावतरण महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी सुब्रमणियम की धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला सुब्रमणियम के कर कमलों से किया गया। तीसरे विध्वंसक आईएनएस "मुंबई का जलावतरण 20 मार्च 1995" को नौसेना प्रमुख एडमिरल बी एस शेखावत की धर्मपत्नी श्रीमती बीनू शेखावत द्वारा किया गया।

इस पोत की कमीशनिंग 22 जनवरी 2001 को महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम डॉक्टर पी एस एलेक्जेंडर के हाथों से हुआ था।

पी 15 श्रेणी के जहाज भारत में निर्मित सबसे बड़े पोत हैं। दिल्ली श्रेणी के शानदार विध्वंसक

पी 17 स्टील्थ फ्रीगेट

स्टील्थ फ्रीगेट योजना के अंतर्गत शिवालिक श्रेणी के तीन जहाजों का निर्माण किया गया तथा इनकी सुपुर्दगी भारतीय नौसेना को की गई।

इस श्रेणी के पहले पोत का नाम आईएनएस शिवालिक रखा गया, इसलिए इसे शिवालिक श्रेणी कहा जाता है। दूसरे का नाम आईएनएस सतपुड़ा, और तीसरे को सह्याद्रि नाम दिया गया।

ये तीन जहाज आज भारतीय नौसेना बेड़ा की शान बढ़ा रहे हैं तथा भारत की समुद्री क्षमता में वृद्धि करने में अपना अपूर्व योगदान दे रहे हैं। इन सभी जहाजों का निर्माण अधिकतम स्वदेशी तकनीकी, प्रौद्योगिकी तथा सामग्री से किया गया है।

पहले पोत आईएनएस शिवालिक का जलावतरण अप्रैल 2003 को तथा दूसरे पोत आईएनएस सतपुड़ा का जलावतरण जून 2004 में और तीसरे एवं अंतिम पोत आईएनएस सह्याद्रि का जलावतरण मई 2005 में किया गया।

29 अप्रैल 2010 को शिवालिक की सुपुर्दगी माननीय रक्षा मंत्री श्री ए के ऐंटनी के करकमलों से की गई।

आईएनएस दिल्ली

आईएनएस मैसूर

इसी प्रकार क्रमशः आईएनएस सतपुड़ा तथा आईएनएस सह्याद्रि की सुपुर्दगी भारतीय नौसेना को की गई है।

पी 17ए परियोजना के अंतर्गत एमडीएल को चार युद्धपोतों के निर्माण का भार सौंपा गया है। पी 17ए श्रेणी परियोजना पी 17 शिवालिक श्रेणी फ्रीगेट परियोजना का अनुवर्ती है। कुल सात पोतों के निर्माण का आदेश रक्षा मंत्रालय ने दिया है जिसमें से चार युद्धपोतों का निर्माण माझगांव डॉक में और शेष तीन का निर्माण जीआरएसई कोलकाता द्वारा किया जाएगा। एमडीएल में जो अनुभव परियोजना पी 17 शिवालिक श्रेणी फ्रीगेट के रूपांकन से प्राप्त हुआ है उसका उपयोग पी 17ए के स्टील्थ में किया जाएगा।

युद्धपोत की कुल लंबाई 147 मीटर, बीम 17.8 मीटर और ड्राफ्ट 5.22 मीटर है। इसकी कुल भार विस्थापन क्षमता 6800 टन है। उच्च स्तरीय ऑटोमेशन लेवल द्वारा मौजूदा क्रू कम्प्लीमेंट का उपयोग करते हुए 257 से घटाकर लगभग 150 कर दिया जाएगा, जिससे परिचालन लागत में 20 प्रतिशत तक कमी होगी और इससे युद्धपोत में उच्चतम ऑपरेशनल लेवल प्राप्त किया जा सकता है। मॉडुलर एकीकृत निर्माण का उपयोग करके निर्माण अवधि और उत्पादकता में सुधार किया जा सकता है।

दिल्ली श्रेणी के शानदार विध्वंसक

दिल्ली श्रेणी के शानदार विध्वंसक

आईएनएस शिवालिक

आईएनएस सतपुड़ा

आईएनएस सह्याद्रि

आईएनएस कोलकाता

आईएनएस कोची

पी-15ए

पी-15ए परियोजना के अंतर्गत तीन गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का निर्माण किया गया है और तीन में से दो की सुपुर्दगी भारतीय नौसेना को कर दी गई है और तीसरे की सुपुर्दगी इस वर्ष करने की संभावना है। पहले पोत को आईएनएस कोलकाता नाम दिया गया है यह सबसे घातक युद्धपोत है जिसे भारतीय नौसेना में शामिल कर लिया गया है। इसके अनुवर्ती पोतों को कोलकाता श्रेणी कहा जाएगा। आईएनएस कोलकाता की सुपुर्दगी 16 अगस्त 2014 को की गई। इसके बाद आईएनएस कोची की सुपुर्दगी 30 सितंबर 2015 को किया गया। आईएनएस चेन्नई पी 15ए परियोजना के अंतर्गत तीसरा और आखिरी सबसे बड़ा पोत है जिसकी सुपुर्दगी इस वर्ष में होना सुनिश्चित है।

हालांकि कोलकाता श्रेणी का रूपांकन और विशेषता की परिकल्पना भारतीय नौसेना ने किया था, लेकिन उसकी श्रेणी का विस्तृत रूपांकन क्रम एमडीएल द्वारा ही पूरा किया गया है। कोलकाता श्रेणी, दिल्ली श्रेणी के मॉडल का अनुवर्ती है जो अधिक उन्नत और आधुनिक आयुध और सेंसर प्रणाली से सुसज्जित है। पोत की अधिकतम एकीकृत प्रणालियाँ भारत में रूपांकित और निर्मित हैं।

परियोजना 15ए के अंतर्गत माझगांव डॉक तीन विध्वंसक कोलकाता, कोची और चेन्नई का निर्माण कर रहा है। आईएनएस कोलकाता की कमीशनिंग अगस्त 2014 में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया।

आईएनएस कोलकाता, कोलकाता श्रेणी के तीन गाइडेड मिसाइल स्टील्थ विध्वंसकों में प्रथम है। जहाज की लंबाई 163 मीटर तथा विस्थापन क्षमता 6500 टन है जो भारतीय नौसेना द्वारा संचालित सबसे बड़ा स्वदेशीकृत युद्धपोत और विध्वंशक है। यह भारत के पोत निर्माण प्रौद्योगिकी में और क्षमता प्रदर्शन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह अपने पूर्ववर्ती विध्वंशकों से और अधिक वरसिटाइल है, कोलकाता श्रेणी में शत्रु पनडुब्बी से लड़ने की सभी खूबियाँ हैं जैसे सरर्फेस वारशिप, एंटी शिप मिसाइल और फाइटर एयरक्राफ्ट आदि। इन स्वदेशी रूपांकित पोतों में स्टेट ऑफ आर्ट आयुध सेंसर, स्टील्थ फीचर और अग्रिम कार्रवाई सूचना प्रणाली लगी हुई हैं। साथ ही इसमें एकीकृत प्लेटफार्म मैनेजमेन्ट प्रणाली विश्व स्तरीय माडूलर लिविंग स्पेस, परिष्कृत उर्जा वितरण प्रणाली और साथ ही अन्य अग्रिम विशेषताओं का समूह है।

कोलकाता श्रेणी जहाज आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण का जीता जागता उदाहरण है। 472 बड़े और लघु औद्योगिक साझेदारों ने अपनी ओर से अनोखे ढंग से जहाज निर्माण में योगदान दिया है। यह स्वदेशीकृत प्रयास मूलतः भारतीय नौसेना और रक्षा उत्पादन विभाग के सक्रिय प्रयत्नों का ही सुफल है जिसके कारण यह कोशिश कामयाब हुई है।

इस श्रेणी के पूरा होने से ये तीनों 15ए श्रेणी विध्वंशक, भारतीय नौसेना के मुख्य संबल होंगे।

परियोजना 15 बी

परियोजना 15बी के अंतर्गत इन विध्वंशकों के आगामी आदेश एमडीएल को प्राप्त हो चुके हैं और पहले दो पोतों का उत्पादन भी आरंभ हो चुका है।

पी 15बी परियोजना की चर्चा करते हैं यह पी15ए रूपांकन का अनुवर्ती है। जिसके अंतर्गत चार युद्धपोतों का निर्माण हो रहा है। इसमें इस परियोजना के पहले युद्धपोत का जलावतरण 20 अप्रैल 2015 को किया गया जिसका नाम आईएनएस विशाखापतनम रखा गया है। इसमें पी15ए में किए गए सभी प्रकार के परिष्करण को शामिल किया गया है।

इस श्रेणी के पोतों की भूमिका गहरे समुद्र में विविध प्रकार के खतरों पर नियंत्रण करने के लिए कार्य दल के साथ संयोजन करना है।

ये वारफेयर में आक्रमण करने में सक्षम होंगे जिसमें किनारे पर स्थित लक्ष्यों को निशाना बना सकते हैं और दुश्मन के विमानों, पण्डुब्बियों और सतह पर स्थित पोतों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं।

लक्ष्य - ये पोत 42 दिनों के लक्ष्य को पूरा करने में समर्थ हैं। इसमें सभी मशीनरी, सेंसर और उपकरणों की अधिकतम निर्भरता और उक्त कथित दिनों के लक्ष्य को कायम रखने में सहायक होंगे। पोत का अंडर वाटर हल फार्म पी 15ए के समान हैं। इसके लगने वाला स्टील डी40एस / डीएमआर-294ए हैं।

पोत की विशेषताएँ - इस श्रेणी के पहले विध्वंशक पोत विशाखापत्तनम की लंबाई 163.2 मीटर, बीम 17.4 मीटर और विस्थापन क्षमता लगभग 7334 टन है। पोत की समुद्र में अधिकतम गति 40 नाट है। परिचालन के लिए पोत में 01 सीओ के साथ 51 अधिकारी तथा 260 नाविक कार्यरत रहेंगे। पोत में मुख्य प्रोपल्जन सिस्टम गैस और गैस टाईप (सीओजीएजी) के साथ 4 रिवर्सिबल आईपीएमस कोंपलाएण्ड लगे हुए हैं।

भारत में पनडुब्बी निर्माण की आधारशिला

First Time Submarine Construction, in India 1984)

श्री कैलाश सिंह
प्रबंधक (पू.ख)

भारतीय नौसेना (Indian Navy) के परिपेक्ष्य में, अपने आप को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की एक साकार पहल - अस्सी के दशक तक आते-आते भारतीय नौ सेना को इस बात का एहसास होने लगा कि उस समय सैनिक संसाधनों में मौजूद कुल सबमैरीन सामरिक दृष्टि से पर्याप्त नहीं है। इसके लिए तत्कालीन भारत सरकार इस क्षेत्र में प्रयास करने लगी।

इसी कालावधि में अन्य विकसित देश जैसे - अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान एवं कोरिया आदि राष्ट्रों ने सबमैरीन निर्माण क्षेत्र में महारत ही नहीं हासिल कर लिया था अपितु दूसरे देशों को सबमैरीन निर्यात भी कर रहे थे। प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात एक दबाव बनने लगा था कि भारतीय सेनाओं (जल, थल एवं नभ) को कैसे मजबूत किया जाए।

इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारत सरकार ने जर्मनी के कील शहर में स्थित एच.डी.डब्ल्यू (HDW, Howaldtswerke-Deutsche Werft at Keil) कंपनी को तकनीकी स्थानांतरण अनुबंध (Under Technology Transfer Agreement, 1986-91) के अंतर्गत 4 सबमैरीन के निर्माण का ऑर्डर दिया। इस अनुबंध के अनुसार दो सबमैरीन के निर्माण का कार्य जर्मनी में एवं दो सबमैरीन का निर्माण भारत में किया जाना था और पूरी परियोजना का कार्यकाल सन 1986-91 के बीच रखा गया। जर्मनी ने प्रथम बोट SSK (Hunter-killer submarine) क्लास की शिशुमार श्रेणी की आई.एन.एस. शिशुमार (S44) को 22 दिसम्बर 1986, को एवं 20 नवम्बर 1986 में द्वितीय बोट आई.एन.एस. शंकुश (S45) को भारतीय नौ सेना को सौंप दिया।

(शिशुमार - शिशुमार श्रेणी की प्रथम सबमैरीन)

भारत में उस समय का सबसे उपयुक्त शिपयार्ड माझगाँव डॉक लिमिटेड (अब माझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड) था जो उस समय नौ सेना के लिए युद्धपोत एवं विध्वंशक (Fridget & Destroyer), ऑफशोर प्लेटफॉर्म, टैंकर, बल्ककैरियर, सप्लाई वेसेल और पेट्रोल बोट बनाने में संलग्न था।

भारत में माझगाँव डॉक लिमिटेड की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को देखते हुए तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी ने 6 मई 1984 को अपने कर कमलों द्वारा ईस्ट यार्ड (East Yard) का शिलान्यास किया जो बाद में सबमैरीन यार्ड के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसको सबमैरीन डिविजन भी कहते हैं।

सबमैरीन उत्पादन के क्रम में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने अपनी प्रथम पनडुब्बी शल्की (S46) यार्ड 11801 की लांचिंग प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सोनिया गांधी की उपस्थिति में सितंबर 1989 को किया। इसी पनडुब्बी को तत्कालीन रक्षामंत्री श्री शरद पवार जी द्वारा 7 फरवरी 1992 में नौ सेना को सौंप दिया गया।

मार्च 1992 को द्वितीय पनडुब्बी शंकुल (S45) यार्ड 11802 का लांचिंग तत्कालीन उप राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा एवं उनकी पत्नी श्रीमती विमला के द्वारा किया गया और 8 मई 1994 को भारत के प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री नरसिंह राव ने भारतीय नौ सेना को सौंप दिया।

(शंकुश - शिशुमार श्रेणी का द्वितीय सबमैरीन)

भारत सरकार द्वारा वास्तव में कुल छः पनडुब्बी का ऑर्डर दिया गया था जिसमें दो पनडुब्बी माझगांव डॉक लिमिटेड द्वारा बनानी थी और दो पनडुब्बी जर्मनी द्वारा बनाया जाना था, किन्तु सन 1998 में पोखरण-2 परमाणु परीक्षण होने के कारण दो और सबमैरीन का मिलनेवाला ऑर्डर निरस्त हो गया।

इन दो सबमैरिनों को माझगांव डॉक लिमिटेड में बनायें जाने की योजना थी। शिशुमार श्रेणी के सबमैरिनों का एक संक्षिप्त विवरण (1986-1994)

पनडुब्बी का नाम	कोड	कंपनी का नाम	कमीशण्ड की तारीख	वर्तमान स्थिति
आईएओन.एस. शिशुमार	एस44		22 दिसंबर, 1986	सक्रिय
आई.एन.एस. शंकुश	एस45	HDW (जर्मनी)	20 नवम्बर, 1986	सक्रिय
आई.एन.एस. शल्की	एस46	HDW (जर्मनी)	7 फरवरी, 1992	सक्रिय
आई.एन.एस. शंकुल	एस47	MDL (भारत)	28 मई, 1994	सक्रिय

(शल्की - शिशुमार श्रेणी की तीसरी सबमैरीन)

शिशुमार श्रेणी के सबमैरीन की मध्यावधि मरम्मत का कार्य
(MRSSK-Medium Refit of SSK Class)

भारतीय नौ सेना में प्रत्येक सबमैरीन का एक निश्चित समयान्तराल के पश्चात मरम्मत का कार्य तय रहता है। इसके अंतर्गत मध्यावधि रिपेयर (MR-Medium Refit) लगभग 10 वर्ष में, एन.आर. (Normal Refit) लगभग 6 वर्ष में एवं एस.आर. (Short Refit) लगभग 2-3 वर्ष के अन्तराल में किया जाता है।

(शंकुल - शिशुमार श्रेणी की चौथी सबमैरीन)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई को सर्वप्रथम सन 1998 में शिशुमार श्रेणी की एस.एस.के. क्लास की प्रथम पनडुब्बी शिशुमार की मध्यावधि रिपेयर (MR-Medium Refit) का कार्य करने के लिए 135.22 करोड़ रुपये का ऑर्डर मिला। माझगांव डॉक लिमिटेड ने इसको एक चुनौती के रूप में लिया और जून 2000 तक रिपेयर का कार्य सफलतापूर्वक खत्म करके भारतीय नौ सेना को हैंडओवर कर दिया।

इस कड़ी में शिशुमार श्रेणी की द्वितीय पनडुब्बी आई.एन.एस. शंकुश के रिपेयर का ऑर्डर सन 2000 में लगभग 100 करोड़ रुपये में मिला। प्रथम पनडुब्बी की तरह द्वितीय पनडुब्बी का कार्य भी एक अत्यंत कठिन होने के बावजूद माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने सन् 2005 तक पूर्ण करके नौसेना को सौंप दिया। तीसरी पनडुब्बी आई.एन.एस. शल्की, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई में मरम्मत कार्य करने के लिए सन् 2007 में लायी गयी। इसके रिपेयर का ऑर्डर लगभग 450.61 करोड़ रुपये था। कुशल कामगारों एवं उन्नत तकनीकों के द्वारा इसके मरम्मत और अपग्रेडेशन का काम पूर्ण कर लिया गया। इसको 2009-2010 के बीच सेना को सौंप दिया गया।

स्कोर्पिन की विशेषताएँ

अद्यतन नौसेना प्रौद्योगिकी में स्कोर्पिन पनडुब्बी शामिल है। पनडुब्बी के मध्य भाग में सबटिक्स स्थित होता है जिसके साथ एकीकृत कम्बेट सिस्टम, हाईली कम्पुटराइज्ड सेंट्रल मैनेजमेंट सिस्टम से सुसज्जित है जिसके द्वारा पनडुब्बी के सभी सेंसर और आयुधों की निगरानी की जाती है। प्रत्येक स्कोर्पिन पनडुब्बी में कुल 31 कम्पार्टमेंट होते हैं।

पनडुब्बी वास्तव में निर्णायक स्टील्थ वेपन है। पिछले दशकों में सोनार प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण, पण्डुब्बियों का पता लगाना और पणडुब्बियों को लक्ष्य बनाना बहुत ही कठिन है। विशेष रूप से हिन्द महासागर में जहाँ समुद्र का खारापन और थर्मल जोन की उपस्थिति से परिवर्तनीय जल तापमान के कारण पनडुब्बी का पता लगाना अत्यंत कठिन है। स्कोर्पिन पनडुब्बी जासूसी और काउंटर जासूसी के खेल को और कठिन बनाती है। इसका रूपांकन अत्यंत नीरव रूप में किया गया है, जिसके कारण यह कई दिनों तक समुद्र के अंदर रह सकती है और लांगरेंज पैसिव सोनार सिगनल्स के माध्यम से समुद्र में स्कोरिंग कर सकती है जिसके द्वारा अपने आसपास के क्षेत्र में दूसरे पनडुब्बी और युद्धपोत का पता लगा सकती है।

शिशुमार श्रेणी की अंतिम सबमैरीन आई.एन.एस. शंकुल के रिपेयर का ऑर्डर सन 2008 में 460.47 करोड़ रुपये का मिला। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने अपनी बेहतरीन तकनीक का परिचय देते हुए इसके रिपेयर एवं अपग्रेडेशन का काम सन 2011-2012 के बीच समाप्त करके भारतीय नौ सेना को दे दिया।

वर्तमान समय में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई में स्कोर्पिन क्लास की छः सबमैरीन के निर्माण का कार्य अनवरत रूप से चल रहा है। इस क्लास की पहली सबमैरीन कलावरी है। इसकी कमीशनिंग नवम्बर 2015 को हुई और यह अभी सी ट्रायल के अंतर्गत है। संभवत: सितम्बर 2015 तक भारतीय नौ सेना को सुपुर्द कर दी जाएगी। इस श्रेणी की दूसरी सबमैरीन ‘खंडेरी“ लांचिंग के लिए तैयार हो रही है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने दो सबमैरीन का निर्माण कार्य एवं चार सबमैरिनों का रिपेयर कार्य पूर्ण करके भारत में अन्य शिपयार्ड की परंपरा से हटकर सफलता हासिल की है। यह सबमैरीन भारतीय नौसेना के महत्वपूर्ण मिशन में कामयाब भी हुए हैं और आज भी सक्रिय हैं।

उपरोक्त कथन ने यह सत्यापित कर दिया है कि भारत सबमैरीन उत्पादन क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन गया है। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत का सबसे पुराना शिपयार्ड है। यह आधुनिक प्रौद्योगिकी उन्नयन के कारण पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहा है।

आधुनिक पनडुब्बी परियोजना पी 75

एमडीएल के लिए यह गौरव की बात है कि पूर्व खंड में निर्मित एसएसके श्रेणी की दो पनडुब्बियाँ वर्ष 1992 एवं 1994 में नौसेना में शामिल की गई और वे अपना सक्रिय सहयोग देश की समुद्री सुरक्षा में आज भी दे रही हैं। माझगांव डॉक को अतिआधुनिक स्कोर्पिन श्रेणी पनडुब्बी निर्माण का आदेश भारतीय नौसेना की ओर से प्राप्त हुआ है। ये पनडुब्बियाँ फ्रांस की कंपनी डीसीएनएस और स्पेन की कंपनी नेवतिया के सहयोग से निर्मित हो रही हैं। इनमें बेहतरीन स्टील्थ, दुश्मन के जहाजों एवं पण्डुब्बियों का पता लगाने की क्षमता और आक्रमण करने की शक्ति है। इस प्रभावशाली अंडर वाटर प्लेटफॉर्म से दुश्मन की जहाजों / पण्डुब्बियों पर प्रिसीजन गाइडेड टारपीडो और मिसाइल से हमला करके अशक्त बनाने की काबिलियत है।

स्कोर्पिन पनडुब्बी में विविध कार्यों को पूरा करने की क्षमता है। जो एक आधुनिक पनडुब्बी में होनी चाहिए। जैसे एंटी सरफेस वारफेयर, इंटेलिजेंस गेदरिंग, माइन लेइंग और अपने क्षेत्र की निगरानी करना आदि।

स्कोर्पिन का निर्माण माडुलर कंस्ट्रक्शन सिद्धांत के अनुसार किया जाता है जिसमें पनडुब्बी को अनेक खंडों में बांटा जाता है और खंडों को जोड़कर पूर्ण किया जाता है। उपकरण को लचीले ढंग से उठाकर क्रैडेल पर रखा जाता है और तब खंडों में लगाया जाता है।

इसमें सबसे चुनौती पूर्णकार्य होता है पनडुब्बी के अंदर 60 किमी लंबा केबल और 11 किमी लम्बी पाइपों को पनडुब्बी के चारों और लेइंग करना। पनडुब्बी में बहुत सँकरे कम्पार्टमेंट होते हैं जिसमें कठोर सहनशीलता की आवश्यकता होतीहै। एमडीएल ने केबल लेइंग तथा पाईप फिटिंग का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

स्कोर्पिन परियोजना के अंतर्गत एमडीएल ने अपनी बेमिसाल प्रतिष्ठा की स्थिति राष्ट्र के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता के रूप में स्थापित कर लिया गया है। इसे कंपनी ने अपनी योग्यता से अर्जित किया है। स्कोर्पिन श्रेणी की पहली पनडुब्बी कलवरी यार्ड 11875 की कमीशनिंग गहन जांच और समुद्री परीक्षण के बाद भारतीय नौसेना को सितंबर 2016 में की सुपुर्द की जाएगी। कलवरी ड्रेडेड टाइगर शार्क और ड्रेडेड डीप सी प्रिडेटर का मूर्तरूप 20 वर्षों से अधिक काल के बाद किया जाएगा। पहले कलवरी की कमीशनिंग 31 मई 1996 में की गई थी। नौसेना की परंपरा के अनुसार नई पोत और पनडुब्बी का नामकरण उस पोत और पनडुब्बी की डिकमीशनिंग के बाद किया जाता है।

माझगांव डॉक ने ‘मेक इन इंडिया’ आख्यान का प्रस्तुतिकरण अपने देश में स्वदेशी युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण करके किया है। इसकी शुरुआत 1960 में लिएंडर श्रेणी युद्धपोत से आगे बढ़कर गोदावरी श्रेणी युद्धपोत, खुकरी क्लास करवेटस, तटरक्षक, ऑफशोर पेट्रोल वेजल, 1241 री मिसाइल बोट, दिल्ली, कोलकाता और विशाखापट्टनम श्रेणी के विध्वंसक, शिवालिक श्रेणी स्टील्थ फ्रीगेट और शल्की और कलवरी श्रेणी की पनडुब्बी के साथ जारी है।
स्कोर्पेन परियोजना के प्रौद्योगिकी स्थानांतरण और अनुभव के साथ उन्नत बुनियादी सुविधाओं की वृद्धि से एमडीएल भविष्य में पनडुब्बी परियोजना की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार है। यह राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सदैव मार्गदर्शन करेगा और दूसरों के लिए अनुसरण का पथ होगा।

पूर्व यार्ड और अलकाक यार्ड में बुनियादी सुविधाएं

श्री आशीष कुमार चौधरी
उप प्रबंधक (तकनिकी सेवायें)

पूर्व खंड में नया वेट बेसिन सिविल अभियांत्रिकी का सुंदर नमूना है जिसे समुद्री पर्यावरण के अनुसार बनाया गया है। यह नया वेट बेसिन 2700 वर्गमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है इसमें दो युद्धपोत और दो पनडुब्बीयों को लंगर करने की क्षमता है और साथ ही 100 टन, 50 टन और 15 टन क्षमता की दो स्तरीय लफ्फिंग क्रेनें भी लगाई गई हैं. एमडीएल में एकमात्र 1400 वर्गमीटर का 'कसारा वेट' बेसिन पहले से मौजूद है जिसका निर्माण सन् 1968 में जहाजों की सर्विसिंग के लिए किया गया था। यहाँ पर लंबे समय से कार्य हो रहा है। लंगरगाह की कमी के कारण एमडीएल अब तक निर्माणाधीन युद्धपोतों के लिए नौसेना तथा मुंबई पोर्ट ट्रस्ट (एमबीपीटी) के ड्राई डॉक में अपने जहाजों का लंगर करता रहा है जो यहाँ से कई किलोमीटर दूर स्थित हैं। इसके कारण अनावश्यक रूप से श्रमिकों को ले जाने तथा लाने के लिए आवश्यक सामग्री मशीनरी आदि को नियमित रूप से नौसेना की सुविधाओं के लिए ढोया जाता था। जिसके कारण समय तथा परिवहन पर भारी खर्च होता था। इस समस्या से निजात पाने के लिए योजना तैयार की गई और इस प्रकार नए वेट बेसिन का विचार आया। नया वेट बेसिन संतुलित, टिकाऊ, ढाँचा के साथ बनाया गया है जो 75 वर्षों तक क्रियाशील रहेगा और इससे एमडीएल की लंगरगाह आवश्यकता की पूर्ति नियमित रूप से होती रहेगी। पनडुब्बी निर्माण के लिए आधुनिक बुनियादी सुविधाएं निर्माण करने की प्रक्रिया जारी है। अलकाक यार्ड में ओ. एन. जी. सी. के जैकअप रिग, प्रतितट मंच का कार्य समाप्त होने के पश्चात कोई नया आदेश नहीं मिला और यार्ड के उपकरणों और मशीनरी का उपयोग नहीं हो रहा था। उस बड़े भूभाग का समुचित उपयोग करना जरूरी था। पूर्व खंड में पनडुब्बी निर्माण के लिए स्थान की कमी को देखते हुए प्रबंधन ने योजना बनाई कि अलकाक यार्ड की खाली जमीन का उपयोग पनडुब्बी निर्माण हेतु बुनियादी सुविधा का विकास करने के लिए किया जाय। कंपनी को नौसेना से 06 स्कोर्पिन पनडुब्बी निर्माण का आदेश मिला हुआ है उन्हें समय से पूरा करना आवश्यक है क्योंकि यह योजना काफी विलंब से आरंभ हुई है। बुनियादी संसाधनों की सहायता से निर्माण अवधि तथा लागत में कमी होगी जिससे भविष्य में और आदेश प्राप्त होंगे। कार्य प्रचुरता तथा भावी योजना का विचार करते हुए अलकाक यार्ड में पनडुब्बी निर्माण हेतु आधारभूत संरचना के रूप में सबमैरीन सेक्शन एसेम्बली कार्यशाला का निर्माण किया जा रहा है।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को भारतीय नौसेना की ओर से 06 स्कोर्पिन श्रेणी पनडुब्बीयाँ निर्माण करने का आदेश परियोजना पी 75 के अंतर्गत प्राप्त है। एमडीएल के पास पहले से ही पूर्व खंड में सबमैरीन एसेम्बली के लिए ड्राई डॉक से सुसज्जित कार्यशाला है। फिर भी यह सुविधा भारतीय नौसेना के लिए पनडुब्बी निर्माण समय सीमा में तैयार करके सुपुर्द करने के लिए पर्याप्त नहीं है। पनडुब्बीयों की सुपुर्दगी समय सारणी में पूरा करने के लिए वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए भी एमडीएल ने पनडुब्बी निर्माण हेतु अपनी बुनियादी सुविधाओं का संवर्धन करना शुरू किया है। सबमैरीन सेक्शन एसेम्बली वर्कशॉप अलकाक यार्ड में बुनियादी सुविधा संवर्धन कार्यक्रम का एक अंग है। इसके निर्माण से एमडीएल को भारतीय नौसेना के लिए पनडुब्बीयों की सुपूर्दगी रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होगी।

द स्टेट ऑफ आर्ट ऑफिस बिल्डिंग

इस भवन में भूतल के साथ चार मंजिल आरसीसी फ्रेम निर्मित सुपर स्ट्रक्चर है। अग्रभाग में दो खंड है - उत्तर खंड और दक्षिण खंड। ये चार मंजिल तक एक साथ जूड़े हुए हैं जिससे सबमैरीन सेक्शन एसेम्बली वर्कशॉप के मुख्य प्रवेश द्वार की ओर से पश्चिम की ओर संचालन में सुविधा होती है वहाँ भी एमएसवी सलाईडिंग 12 मीटर लंबी तथा 14 मीटर ऊंची लगी हुई है। इसमें दोनों खंडों में पैसेंजर लिफ्ट लगी है जिसके माध्यम से सम्मेलन कक्ष और कंपेक्टर युक्त माडुलर फर्नीचर सहित कार्यशाला तक पहुंचा जा सकता है। इसमें भवन प्रबंधन प्रणाली बीएमएस लगी हुई है। साथ ही सभी प्रमुख स्थानों पर सुरक्षा प्रणाली के लिए सीसीटीवी का प्रावधान किया गया है। जिसमें एकल निगरानी प्रणाली का प्रावधान भूतल स्थित कार्यालय भवन में रेकॉर्ड करने की सुविधा सर्वर के माध्यम से निगरानी के लिए बायोमेट्रिक प्रवेश / निकास आगम नियंत्रण प्रणाली, एचवीएसी सिग्नल कंट्रोल प्वाईन्ट विथ हाईवाल स्पलीट एसी एरं कैसेट यूनिट वीरआरवी सिस्टम कार्यशाला क्षेत्र सम्मेलन कक्ष और स्वागत क्षेत्र के लिए किया गया है। सर्वर कक्षों में इनवर्टर टाइप स्पलीट एसी यूनिट लगाए गए हैं।

अ) प्रमुख विशेषताएँ - इस कार्यस्थल का आकार निम्नलिखित है लंबाई लगभग 220 मीटर, चौड़ाई 45 मीटर और ऊंचाई 39 मीटर है। इसकी संरचना स्टील के साथ ही सहायक संरचना में आरसीसी से निर्मित कार्यशाला भवन और रेस्टरूम भी है। पूर्व निर्मित भवन में एमएस स्लाइडिंग डोर लगे हैं जिनका आकार 40 मीटर लंबाई और 18 मीटर ऊंचाई है। इसके साथ ही पूर्वी केबल के छोर पर 4 पैनेल लगे हुए हैं जिससे 30 मीटर लंबे और 18 ऊंचे क्रेन से पूरे पण्डुब्बी का मूवमेंट किया जा सकता है। कार्यशाला की छत वैकुम डीवाटर्ड है जिसमें इम्बेडेड लैंड 2 मीटर x 2 मीटर सीवी की टाईल्स लगी हुई है। इस वर्कशॉप में यूटिलिटी सेवाओं का प्रावधान किया गया है जिसमें ऑक्सीजन, फ्यूम एस्ट्रैकशन सिस्टम, फोर्सड कोम्प्रेस्ड एयर सिस्टम, वाटर सप्लाई और फायर फाइटिंग सिस्टम, फोर्सड एयर वेंटीलेशन सिस्टम लगे हुए हैं। वर्कशॉप में 4 ईओटी क्रेन लगी हुई है जिनकी क्षमता 30 टन हैं। ये दो स्तरीय हैं। 02 नग सेमी गोलीएथ क्रेन भी लगाई गई हैं जिनकी क्षमता 150 टन है और 01 नग 60 टन क्षमता की सेमी गोलीयथ क्रेन बाटम टियर में लगाई गई है। जिसमें सबमैरिन सेक्शन के संचालन में सुविधा हो। वहाँ पर एक ब्लास्टिंग एवं पेंटिंग चेम्बर है। कार्यशाला क्षेत्र में ही अंदर वॉशिंग एरिया है जहाँ पनडुब्बी अनुभाग की सफाई और ब्लास्टिंग एवं पेंटिंग की सुविधा है।

विश्राम कक्ष भवन

इसमें भूतल के साथ 03 मंजिला आरसीसी से निर्मित सुपर स्ट्रक्चर हाउसिंग सब स्टेशन भूतल पर बना हुआ है। पेंट्री एरिया प्रथम तल पर और लाकर एसएम माड्ुलर टायलेट / कामगारों के लिए बाथरूम दूसरे और तीसरे मंजिल पर पैसेंजर लिफ्ट के साथ उपलब्ध है।

जल प्रबंधन प्रणाली

रिसायकिल वाटर का उपयोग कार्यालय भवन और विश्राम कक्ष भवन में किया जाता है। रेन वाटर हार्वेस्टिंग, एसटीपी, ग्रेवाटर ट्रीटमेंट प्लांट और ऑइल वाटर सेपरेटर की सुविधा ट्रीटेड वाटर का उपयोग करने के लिए किया जाता है।

स्थान की उपलब्धता और वैधानिक अनुपालन

अलकाक यार्ड का अधिग्रहण एमडीएल द्वारा मेसर्स अलकाक एश डाउन से प्रतितट प्लेटफार्म निर्माण करने के लिए तेल और गैस सेक्टर से संबंधित कंपनियों की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से किया गया था। प्रतितट प्रभाग का कार्य वर्ष 2006 में बंद होने के कारण इस यार्ड में एस एस ए कार्यशाला का निर्माण, स्थानीय विकास नियंत्रण नियमन के अनुसार किया जा रहा है। एमडीएल का परिचालन भवन सुरक्षा अधिनियम 1923 की धारा 8 के उपबंध (स) एवं (ब) प्रावधन के अंतर्गत सुरक्षा अधिनियम से छूट प्राप्त है।

2. पर्यावरण का प्रभाव

यह कार्यशाला एमडीएल परिसर के अंदर खुली भूमि पर निर्मित की जा रही है, इसलिए इससे समुद्री पर्यावरण को कोई खतरा उत्पन्न नहीं होगा।

इस कार्यशाला में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट जीरो डिस्चार्ज के साथ प्रदान किया गया है इससे कोई जल प्रदूषण नहीं होगा।

फ्यूम एकट्रेक्शन सिस्टम कार्यशाला में लगाया गया है। जिससे वायु प्रदूषण नहीं होगा।

एसएसए परियोजना की महत्वपूर्ण जानकारी

नए निर्माणाधीन क्षेत्र में उपरोक्त परियोजना की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. सम्पूर्ण कार्यस्थल क्षेत्र - लगभग 63950 वर्गमीटर
2. एसएसए कार्यशाला क्षेत्र - लगभग 9600 वर्गमीटर
3. कार्यालय भवन - लगभग 2740 वर्गमीटर
4. विश्राम कक्ष भवन - लगभग 730 वर्गमीटर
5. रोडवेज - लगभग 8500 वर्गमीटर

    1. कार्यशाला भवन

    कार्यशाला क्षेत्रफल - 220.40 मीटर लंबाई
    44.00 मीटर चौड़ाई
    39.00 मीटर ऊंचाई

    कार्यालय भवन - इस भवन में लगभग 250 कार्मिकों के आवास की व्यवस्था है।

    विश्राम कक्ष भवन -

    - इस भवन में लगभग 525 कार्मिकों के कपड़ा बदलने की जगह और प्रसाधन की सुविधा है।
    - भूतल के साथ तीन मंजिला आरसीसी संरचना में एक एलीवेटर लगा है।
    - भूतल पर इलेक्ट्रोनिक पैनल लगाया गया है।
    - प्रथम तल पर डाइनिंग एरिया में एक समय 170 कर्मचारी खाना खा सकते हैं।
    - प्रसाधन विश्राम कक्ष सहित लाकर्स दूसरी और तीसरी मंजिल पर उपलब्ध है।
    - टेरिस फ्लोर का रूपांकन इस प्रावधान से किया गया है जिसमें बगीचा जैसी हरियाली की विशेषताएँ हैं।

    4 सहायक भवन
    कामगारों के लिए शौचालय
    फायर वाटर टैंक एवं एफएफ पम्प रूम
    क्षमता - 3,50,000 लीटर
    क्षमता - 3,50,000 लीटर

मेक इन इंडिया

कमोडोर (डा.) जे एम जाँगीर
म.प्र (स्वदेशी करण)

एमडीएल देश का अग्रणी रक्षा शिपयार्ड है और यह लगभग दो सदियों से अधिक समय से भारत के समुद्री मामलों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत सरकार द्वारा सन् 1960 में अधिग्रहण करने के पश्चात पनडुब्बीयों और विभिन्न सहायक तथा वाणिज्यिक जलयानों का निर्माण और सुपूर्दगी किया है। पहला स्वदेशी युद्धपोत आईएनएस नीलगिरी का निर्माण एमडीएल द्वारा किया गया और वर्ष 1972 में भारतीय नौसेना को सुपुर्द किया गया। तत्पश्चात, एमडीएल का निरंतर प्रयास रहा है कि वह जहाजों और पनडुब्बीयों के निर्माण में स्वदेशी सामग्री का प्रतिशत उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहे। मई 2015 से एमडीएल में मेक इन इंडिया एकक - कार्य कर रहा है और इसके आगे स्वदेशीकरण के प्रयासों को अधिक मजबूत करने के लिए एक समर्पित स्वदेशीकरण विभाग की स्थापना की गई है।

युद्धपोत / पनडुब्बीयों के रूपांकन और निर्माण का कार्य बहुत ही जटिल और तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि युद्धपोत / पण्डुब्बी में बड़ी मात्रा में अभियांत्रिकी, विद्युतीय, इलेक्ट्रानिक और पोतकाय एवं आयुध प्रणाली में विविध प्रकार की तकनीकी कौशल प्रौद्योगिकी शामिल होती है। अनेक मुख्य अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रानिक और आयुध प्रणालियाँ आज भी आयात की जाती हैं क्योंकि इनका निर्माण भारत में नहीं किया जाता है। आयतित प्रणालियाँ न केवल बहुत महंगी हैं अपितु असंतोषजनक लाईफटाइम सपोर्ट की प्रतिकूल परिस्थितियों से जुड़ी हुई हैं जो पोतों / पण्डुब्बियों की मारक क्षमता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, विशेष रूप से युद्ध के दौरान इनका समय से उपलब्ध होना, संतोषजनक रूप से सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। ऐसी अति निर्भरता विभिन्न प्रणालियों की उच्च लागत वाली प्राप्तियाँ विदेशी कंपनियों से जुड़ी हुई हैं। इसका निराकरण केवल स्वदेशी रूपांकन, विकास और निर्माण उद्योग में प्रोत्साहन देकर किया जा सकता है। **मेक इन इंडिया** भारत सरकार का एक लक्ष्य है जो भारत को '**निर्माण केंद्र**" के रूप में तब्दील कर सकता है और काफी हद तक इससे सैन्य मामलों में हम आत्म निर्भर हो सकतेहैं।

एमडीएल युद्धपोत / पनडुब्बीयों का निर्माण ग्राहक द्वारा प्रदान किए गए विशेष विवरण / मांग के अनुसार करता है और विभिन्न उपकरणों / प्रणालियों को संग्रहीत करके युद्ध के लायक बनाता है। कुछ उपकरण प्रत्यक्ष रूप से युद्धपोतों पर लगाने के लिए ग्राहक द्वारा प्रदानकिए जाते हैं और शिपयार्ड में सुसज्जित और एकीकरण के लिए भेजे जाते हैं। इसके अलावा, बड़ी संख्या में अभियांत्रिकी, विद्युतीय, इलेक्ट्रानिक और आयुध प्रणालियाँ शिपयार्ड में ग्राहकों द्वारा निर्दिष्ट विक्रेताओं (वेंडरों) से एकल निविदा / सीमित निविदा जांच के आधार पर प्राप्त की जाती हैं जिससे कि ग्राहक द्वारा निर्दिष्ट तकनीकी और गुणवत्ता शर्तों को पूरा किया जाता है। शिपयार्ड में यह सहूलियत नहीं है कि शेष सामग्री / उपकरण की प्राप्ति विक्रेताओं से प्रतियोगिता के आधार पर करे जिससे कि ग्राहक द्वारा निर्दिष्ट तकनीकी और गुणवत्ता शर्तों को पूरा किया जा सके। फिर भी यह उल्लेख करना आवश्यक है कि अधिकतर उपकरण ग्राहक द्वारा नामांकन किए जाते हैं जो युद्धपोतों / पनडुब्बी में निर्धारित लक्ष्य के अपेक्षित कार्य पर आधारित होते हैं।

स्वदेशीकरण - वर्तमान स्थिति :

युद्धपोतों / पनडुब्बीयों के स्वदेशीकृत विषय सूचियों की पहचान अथवा उसकी गणना निम्न विवरण के अनुसार की जा सकती है।

स्वदेशीकरण विषय सूची : उत्पादन लागत - सामग्री का मूल्य जिसमें उपकरण / प्रणाली / विदेश से प्राप्त मदें - विदेशी सेवा प्रदाता द्वारा दी गई सेवाओं की लागत -

पिछले 18 वर्षों में एमडीएल द्वारा प्राप्त स्वदेशीकृत विषय सूची का विवरण युद्धपोतों के निर्माण और सुपुर्दगी के दौरान किया गया है।

क्र. सं.	परियोजना	युद्धपोत	सुपुर्दगी वर्ष	स्वदेशीकरण का प्रतिशत
1	पी 15	दिल्ली मैसूर मुंबई	1998 1999 2001	स्वदेशीकृत / विषय सूची उत्पादन लागत 42.00
2	पी 17	शिवालिक सतपुड़ा सह्याद्रि	2010 2011 2012	52
3	पी 15ए	कोलकाता कोची चेन्नई	2014 2015 2016(पी)	59

उपरोक्त से यह प्रमाणित होता है कि स्वदेशीकरण विषय सूची में कुछ वर्षों से निरंतर वृद्धि हो रही है। हम, फिर भी अपेक्षित स्वदेशीकृत उच्च लागत के प्रतिशत को प्राप्त नहीं कर पाए हैं मुख्य रूप से उपकरणों / मदों की उच्च लागत के कारण विदेशों से आयात किया जाता है क्योंकि ये उपकरण भारत में निर्मित नहीं होते हैं।

यह सत्य है कि अभियांत्रिकी (मुव फंक्शन) और आयुध / इलेक्ट्रानिक प्रणालियां (फाइट फंक्शन) के लिए उपकरण / प्रणाली आवश्यक हैं।

युद्धपोत के तीन चरण फ्लोट, मुव और फाइट फंक्शन के लिए स्वदेशीकरण विवरण का प्रतिशत निम्नलिखित है।

क्र. सं.	परियोजना	पोत	अवधि	स्वदेशीकरण का प्रतिशत सभी प्लेटफॉर्मों के लिए परियोजना		
				फ्लोट	मुव	फाइट
1	पी 17	शिवालिक सतपुड़ा सह्याद्रि	2010 2011 2012	97.37	81.17	21.04
2	पी 15ए	कोलकाता कोची चेन्नई	2014 2015 2016	89.55	80.97	28.5

इस प्रकार, यह आवश्यक है कि अपेक्षित अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रानिक और आयुध प्रणालियों का विकास स्वदेशी रूप से करने के लिए विदेशी विक्रेताओं के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित करते हुए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण करें और शोध एवं विकास संस्थान में पब्लिक एवं प्राइवेट सेक्टर की भागेदारी के रूप में संस्थान का विकास करें और स्टेट ऑफ आर्ट अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रोनिक और आयुध प्रणालियों का विकास करें जिससे कि बिना विदेशी निर्भरता के आत्मनिर्भर होकर स्टेट ऑफ आर्ट फ्रंटलाइन युद्धपोत /पणडुब्बी का निमार्ण कर सके।

बाह्य स्रोत (आउटसोर्सिंग)

प्रत्येक ग्राहक उत्पाद की सुपुर्दगी अपेक्षित गुणवत्ता मानकों के साथ समय पर या पहले चाहता है। एमडीएल ने हमेशा प्रयास किया है कि विभिन्न परियोजनाओं को संभावित समय सीमा के भीतर अपने निर्माणाधीन विभिन्न उपायों द्वारा पहल कर प्राप्त करें।

ब्राह्य स्रोत (आउटसोर्सिंग) एक ऐसा साधन है जिसका बड़े पैमाने पर उपयोग एमडीएल ने अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए किया है। इसकी प्राप्ति विभिन्न कोर / नान कोर कार्यो द्वारा अनुभवी और सक्षम विक्रेताओं के सहयोग से किया जा रहा है जो अग्रणी युद्धपोतों और पण्डुब्बियों के गुणवत्ता मानक निर्माण को पूरा करने में सक्षम हैं। बाह्य स्रोत का उपयोग आज भी उच्च स्तर पर परियोजना 15 बी एवं पी 17ए युद्धपोतों के निर्माण के लिए किया जा रहा है। यह योजना बनाई गई है कि ब्लॉक कंस्ट्रक्शन का कार्य बाह्य स्रोत से प्रसिद्ध एवं सक्षम विक्रेताओं से कराया जाए जिसमें बाह्यसज्जा भी शामिल हो। बाह्य स्रोत द्वारा ब्लॉक का निर्माण और बाह्यसज्जा वेंडर परिसर में ही की जाएगी और आखिरी सज्जीकरण के लिए एमडीएल में लाया जाएगा।

यह विचार किया गया है कि आउटसोर्सिंग विधि तंत्र विशेष रूप से निर्माण अवधि घटाने, लाभप्रदता सुधारने तथा उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होगी। विभिन्न कार्यों / सेवाओं की आउटसोर्सिंग करते समय फिर भी यह सुनिश्चित किया जाता है कि शिपयार्ड की अपनी क्षमता जैसे मानव संसाधन मशीनरी परिसंपत्तियाँ बेकार न पड़ी रहे। विभिन्न कार्यों और सेवाओं का विस्तृत विवरण जिनकी आउटसोर्सिंग नियमित रूप से अथवा आवश्यकता के आधार पर की जा रही है और नियमित रूप से एमडीएल वेबसाइट पर अद्यतन किया जा रहा है। सभी वेंडर, जो निर्दिष्ट कार्यों और सेवाओं को पूरा करने में सक्षम हैं उनको सलाह दी जाती है वे अपना पंजीकरण ऑन लाइन एमडीएल से करा लें। जिनसे उनको लाभ होगा और इससे एक लाभप्रद पारदर्शी और प्रतियोगी वातावरण तैयार होगा।

विभिन्न परियोजनाओं में बाह्य स्रोत लागत निम्नलिखित प्रणाली द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

आउटसोर्सिंग की लागत = उत्पादन लागत = एमडीएल प्रयास - सामग्री लागत एवं स्वदेशी और विदेशी दोनों उपकरण विदेशी अभियंताओं / कार्मिकों की सेवाओंकी लागत।

विभिन्न परियोजनाओं के लिए एमडीएल में बाह्य स्रोत से किए गए कार्यो की लागत का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है :-

क्र. सं.	परियोजना	युद्धपोत	आउटसोर्सिंग कार्य (लागत करोड़ में)	आउटसोर्सिंग का प्रतिशत (आउटसोर्स कार्य की लागत / एमडीएल प्रयास आउटसोर्सकार्य की लागत)
1	पी 17	शिवालिक सतपुड़ा सह्याद्रि	14.38	20.04 प्रतिशत पोत
2	पी 15ए	कोलकाता कोची चेन्नई	3306(पोत)	43.16 प्रतिशत पोत

इसके अलावा संयंत्रों / मशीनरी अनुरक्षण, हाऊसकीपिंग और अन्य विविध सेवाओं के लिए पिछले 6 वर्षों का आउटसोर्सिंग कार्य लागत का विवरण निम्नलिखित है:

वित्तीय वर्ष	आउटसोर्स कार्य / सेवाओं की लागत परियोजनाओं के लिए उपवर्जित
2001-10	रुपए 199.97 करोड़
2010-11	रुपए 43.15 करोड़
2011-12	रुपए 49.54 करोड़
2012-13	रुपए 41.66 करोड़
2013-14	रुपए 31,53 करोड़
2014-15	रुपए 52.04 करोड़

उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि एमडीएल सक्रिय रूप से परियोजना कार्यों / सेवाओं के अपकीप एवं यार्ड अनुरक्षण दोनों के लिए निजी क्षेत्र के साथ कार्य कर रहाहै और कुल मिलाकर कंपनी रोजगार सृजन में विस्तृत रूप से तथा भारतीय जनसाधारण के धन उपार्जन में योगदान कर रही है।

उपकरण / सामग्री जिसे स्वदेशी करने की योजना है

एमडीएल में स्वदेशीकरण किए जाने वाले उपकरण / सामग्री का विवरण निम्नलिखित है। सूची में उन सामग्रियों का भी समावेश है जिनके लिए वर्तमान विक्रेताओं द्वारा आपूर्ति किए गए सामग्री की गुणवत्ता या तो खराब है अथवा दिए गए उत्पादों की आपूर्ति करने वाले विक्रेताओं की संख्या अपर्याप्त है। सूची में निरंतर संशोधन / सुधार समय-समय पर जारी रहेंगे जो उचित विक्रेताओं की उपलब्धता और शर्त पर आधारित होंगे।

क्र.सं.	सामग्री का विवरण	अनुमानित मात्रा अगले 10 वर्षों में आवश्यक होगी	वर्तमान आपूर्ति का स्रोत		एसओटीआरएस का विवरण
1	एमसीटी ग्लैण्ड्स / फ्रेंम्स विथ इन्सर्ट ब्लॉक एंड एक्सेसरीज	1) एमसीटी फ्रेंम्स - 600 नग 2) इन्सर्ट मोडुल्स - 2000000 नग 3) वेज स्टील, स्टे प्लेट सिलैट, टूल्स इत्यादि - 70000 नग	1) मेसस बीएसटी, मुंबई 2) मेसर्स रोक्सटेक, स्वीडन		पृष्ठ 14-15
2	यूपीएस	-	वर्तमान समय में प्रणाली एवं उपकरण आपूर्ति का अभिन्न अंग, अलग से स्रोत नहीं है		पृष्ठ 16-18
3	बैटरी यूनिट	-	वर्तमान समय में प्रणाली एवं उपकरण आपूर्ति का अभिन्न अंग है। कोई अलग से आपूर्तिकर्ता नहीं है।		पृष्ठ 16-18
4	इंडक्शन मोटर्स	350 नग	1) मेसर्स पोलीफेज मोटर्स, बड़ौदा 2) मेसर्स नरहरी, इंजीनियरिंग्स वर्क्स, पालघर 3) मेसर्स केतकी इंजीनियरिंग, प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई 4) मेसर्स एल्मोट आल्टर्नेटर्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद		पृष्ठ 19-21
5	साउंड पावर टेलीफोन	1) सिंगल बे एसपीटी - 350 नग 2) मल्टीबे एसपीटी - 770 नग	5) मेसर्स भारत बिजली लिमिटेड, मुंबई/दिल्ली 6) मेसर्स लक्ष्मी हाइड्रोलिक्स प्राइवेट लिमिटेड, सोलापुर		पृष्ठ 22-24
6	कोन्वेंशनल एंड एलईडी बेस्ड एईएलएस	9000 नग	1) मेसर्स रे एनटरप्राईजेस, अम्बाला कैंट 2) मेसर्स मैकगोथ, मैरीन, मुंबई		पृष्ठ 25
7	लाइटफिटिंग फ्लेम / विस्फोटक प्रमाण सहित	1) डबल्यूटी पेंडेंट लाइट (ओपेल शेड) 12 डबल्यू एलईडी (कुल 15 वाट) - 12000 नग 2) डब्ल्यूटी पेंडेंट लाइट (रेड शेड) 1 डब्ल्यू एलईडी (कुल 3 डब्ल्यू) - 3500 नग 3) 24 डबल्यू एलईडी (कुल 30 डबल्यू) ट्यूब लाइट शेप, ओपल शेड - नॉन पैनेलिंग एंड पैनेलिंग के लिए उचित यथाक्रम - 2500 और 4500 नग	1) मेसर्स रे एन्टरप्राइजेस, अम्बाला कैंट 2) मेसर्स मैकगोथ, मैरीन, मुंबई	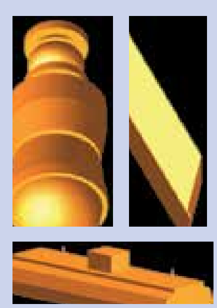	पृष्ठ 26-27

क्र.सं.	सामग्री का विवरण	अनुमानित मात्रा अगले 10 वर्षों में आवश्यक होगी	वर्तमान आपूर्ति का स्त्रोत		एसओटीआरएस का विवरण
8	शिप इन्स्टाल्ड केमिकल सिस्टम	55 नग	1) मेसर्स स्मिथ डिटेक्शन, यूके 2) मेसर्स ब्रुकर, डल्टोनिक्स, जर्मनी 3) मेसर्स एनवाइरोनिक्स, फिनलैंड		पृष्ठ 28-30
9	प्रेशर रिडुसिंग स्टेशन	770 नग	1) मेसर्स डाइनामिक कंट्रोल, यूके 2) मेसर्स हेल हैमिल्टन, यूके 3) मेसर्स एसएबी ब्रेमैन, जर्मनी	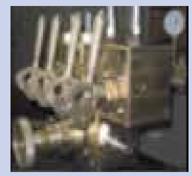	पृष्ठ 31
10	रिमोट कंट्रोल्ड वाल्व्स	560 नग	सभी सामग्री एक बार निर्मित होती हैं		पृष्ठ 33-34
11	फायर मेन सिस्टम ले लिए 90/20 सीआईएनआई पाईप्स 10 एनबी से 150 एनबी तक	7000 मीटर्स	1) मल्टीमैक्स लिमिटेड, कोटा 2) मेसर्स जयदीप ट्यूब्स, मुंबई 3) मेसर्स मेहता ट्यूब, मुंबई		पृष्ठ 35-36
12	70/30 सीयूएनआई पाईप्स 8 एनबी से 100 एनबी तक एचपी एयर / हाइड्रालिक सिस्टम ले लिए	4000 मीटर्स	1) मल्टीमैक्स लिमिटेड, कोटा 2) मेसर्स जयदीप ट्यूब्स, मुंबई		पृष्ठ 37-38
13	कंटेम्पोरारी फायर फाइटिंग सिस्टम	-	-		सिस्टम एसओटीआर अंडर फाइनलाइजिंग स्टेज
14	एंकर एंड एंकर चेंस	14 सेट	एंकर : 1) मेसर्स - के बाय, फ्रांस गोवर्धन दास पी.ई., कोलकाता 2) मेसर्स चक्रवर्ती ट्रेडर्स, कोलकाता एंकर चेन : 1) इंडियन चेन, कोलकाता	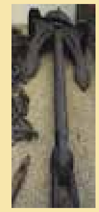	पृष्ठ 39-40
15	हेवी ड्यूटिलिफ्ट्स / क्रेन्स	7 नग	1) मेसर्स हेमंत इंजीनियर्स, मुंबई 2) मेसर्स धन्वन्तरी इंजीनियर्स, मुंबइ	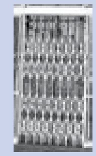	पृष्ठ 41-42
16	06 किलोवाट आपातकालीन डिजेल जेनरेटर सेट	प्रति जहाज 1 सेट	2) मेसर्स एलमोट हैदराबाद, इंडिया	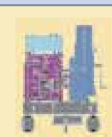	पृष्ठ 42-45
17	विंडो वाइपर्स कंट्रोल पैनल के साथ	प्रति जहाज 32 सेट	1) मेसर्स रकमे आनंद गुजरात, इंडिया 2) स्पेकटॉम बड़ौदा, गुजरात इंडिया	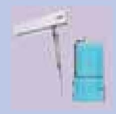	पृष्ठ 46-50

पूर्व खंड और अनिक चेंबूर यार्ड में रैकिंग सिस्टम

श्री मुकेश कुमार
उपप्रबंधक (भंडार -पू.ख)

माझगांव डॉक लिमिटेड कंपनी में सबसे पहले रैकिंग सिस्टम का प्रारम्भ पूर्व खंड भंडार में किया गया है। इसके पश्चात अनिक चेंबूर यार्ड में रैकिंग सिस्टम बड़े स्तर पर स्थापित किया गया है क्योंकि जहाजों और पनडुब्बियों से संबंधित सभी प्रकार की सामग्री इसी यार्ड में रखी जाती है। विदेशों से आयात किए गए सभी प्रकार के केबल भी इसी भंडार से अन्य विभागों को आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराए जाते हैं।

पूर्व खण्ड भंडार विभाग में गोदरेज कंपनी द्वारा निर्मित हैवि ड्यूटी रैकिंग सिस्टम, चालित रैकिंग सिस्टम और कंटिलिवर रैकिंग सिस्टम का अनिक चेंबूर स्थित शेड 7ए, शेड 7बी में स्थापित किए गए हैं।

नयी चुनौती पेंट स्टोर अनिक चेंबूर शेड 6 बे एक के लिये रैकिंग सिस्टम के कार्यान्वयन की थी। इस रैकिंग सिस्टम की विशेषता यह है कि यह मल्टी रैकिंग और मेंजानाईन फ्लोर दोनो को साथ में रखकर परियोजित किया गया है जो प्रोजेक्ट पेंट पी-75 में इस्तेमाल होने वाले पेंट के सुनियोजित भंडारण के लिए परियोजित हैं। इसका सफल प्रतिस्थापन कार्य पूर्ण हो गया है। पेंट स्टोर अनिक चेंबूर शेड 6 बे जो पूर्णरूप से वातानुकूलित है और वर्तमान समय में पी-75 परियोजना के पेंट भंडारण में बहुत ही उपयोगी है।

केबल स्टोर अनिक चेंबूर में रैकिंग सिस्टम के कार्यान्वयन का काम कठिन था। इस रैकिंग सिस्टम की विशेषता यह है कि इसे केबल ड्रम को सुनियोजित रूप से मल्टी फ्लोर में रखने के लिए परियोजित किया गया है। इस रैकिंग सिस्टम में वूडेन प्लेट लगी है और इसकी रूपरेखा एमडीएल भंडार के जरूरतों को ध्यान में रखकर फर्म प्रतिनिधिओं से आवश्यक और विभिन्न संसाधनों द्वारा बनवाया गया है जिससे विभिन्न आकार के केबल ड्रम को आसानी से रैकिंग सिस्टम में रखने और क्रमशः आवश्यक मटिरियल हैंडलिंग उपक्रम द्वारा आसानी से शॉप फ्लोर स्पेस को गतिशील करने के लिए किया जा सके। इसके अतिरिक्त इस रैकिंग सिस्टम में पैलेट गाइड सिस्टम होने के कारण प्रतिदिन केबल ड्रम को रखना तथा निकालना आसानी से होगा। गोदरेज कंपनी द्वारा अनिक चेंबूर केबल भंडार में इसका प्रतिस्थापन कार्य फरवरी 2015 तक पूर्ण हो गया है। इस सिस्टम से प्रतिदिन का कार्य सुरक्षित, सुनियोजित और आसानी से करने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

विभिन्न आकार की परियोजना पी-75 से संबंधित अधिकतम आयातीत और स्वदेशी सामग्री वूडेन केस में पैक कर भंडार में लायी जाती है इनका भंडार सुनियोजित तरीके से किया जा सके इसके लिए रैकिंग सिस्टम की ऊँचाई हैवि ड्यूटि रैकिंग को ध्यान में रखकर 10 मीटर तक निर्धारित की गई है।

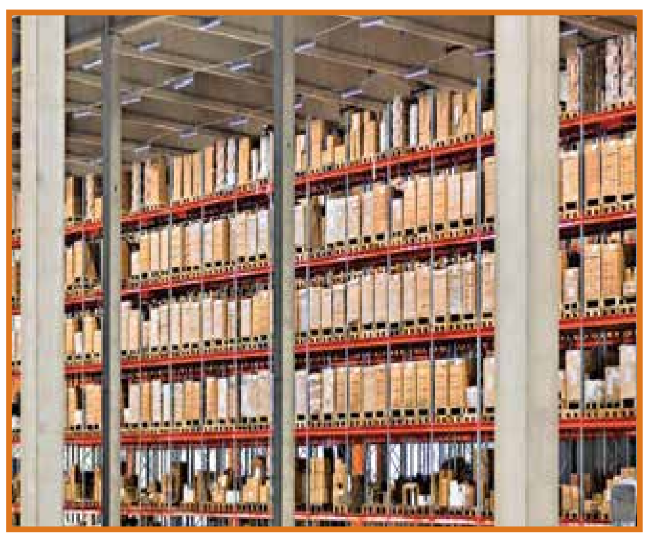

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड कंपनी में स्थित विभिन्न भंडार विभागों में पूर्व खण्ड भंडार विभाग पहला विभाग है जहाँ के आफिस में दैनिक कार्य हेतु मोड्युलर फर्निचर और वातानुकूलित यंत्र के सफल प्रतिस्थापन का कार्य पूर्ण हो चुका है।

माझगांव डॉक लिमिटेड कंपनी को जहाज और पनडुब्बी निर्माण के क्षेत्र में गुणवत्ता, प्रौद्योगिकी उन्नयन द्वारा ग्राहक-केन्द्रित, वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक कंपनी के रूप में मजबूत करना और विश्व स्तरीय उद्यम बनाना सभी कर्मचारियों की जिम्मेदारी है।

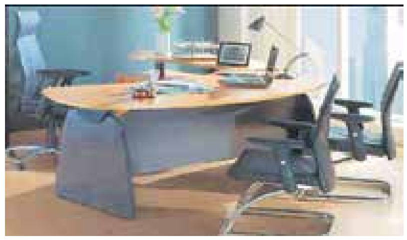

इसके अतिरिक्त क्रमशः आवश्यक मटिरियल हैंडलिंग उपकरण के मूल आधारभूत संसाधन जैसे विभिन्न ऊँचाई तक पहुँचने वाले स्टेकर, हैंड पैलेट, प्लैटफार्म, बैटरी ऑपरेटेड फोर्कलिफ्ट, आर्टिकुलेटेड फोर्कलिफ्ट, 10/2 टन क्षमता वाले ईओटी क्रेन आदि मूलभूत यंत्र, लिफ्टिंग अपलाएनसेंस जैसे होरिजेंटल लिफ्टिंग और वर्टिकल लिफ्टिंग, फाइबर स्लिंग आदि। परियोजना पी-75 से संबंधित बहुतायत मात्रा में लगने वाली सामग्री के संरक्षण हेतु मुलभूत उपकरण जैसे हीट सीलिंग मशीन कनटीनूअस हीट सीलिंग मशीन, वैक्युम मशीन, पेट स्टैप मशीन आदि संसाधन पूर्व खण्ड भंडार विभाग में उपलब्ध हैं।

हैंड पैलेट, बैटरी ऑपरेटेड स्टैकर, बैटरी ऑपरेटेड फोर्कलिफ्ट

आर्टिकुलेटेड फोर्कलिफ्ट

10/2 ईओटी क्रेन

व्हिसिल ब्लोवर शिकायतें

श्री वी. वी. चव्हाण
महाप्रबन्धक, सतर्कता विभाग

यदि कोई आभियोगकर्ता भ्रष्टाचार के केस को उद्घाटित करते समय अपनी पहचान को गुप्त रखना चाहता है तो वह पब्लिक इंट्रेसेस्ट डिसक्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन (पीआईडीपीआईआर) के तहत कर सकता है इसे सामान्यतः व्हिसिल ब्लोवर प्रावधान के रूप में जाना जाता है, इसके अधीन कोई भी अपनी शिकायत कर सकता / सकती है। केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने अभियोगकर्ता की पहचान को गुप्त रखने के लिए अधिदेशाधीन है अपितु वह अभियोगकर्ता के विरुद्ध किसी भी तरह की धमकी देने, परेशान करने अथवा अत्याचार के विरूद्ध रक्षा भी सुनिश्चित करता है।

पीआईडीपीआईआर 2004 का संक्षिप्त विवरण

श्री सत्येन्द्र दुबे की मृत्यु के पश्चात और उच्चतम न्यायालय में पीएलआई फाइल होने के उत्तर में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने केंद्रीय सरकार को यह निर्देश दिया कि 'व्हिसिल ब्लोवर' से शिकायतों को दुरुस्त करने के लिए एक उचित तंत्र की रचना की जाए जब तक इसके लिए कोई उचित कानून न बन जाए। माननीय उच्चतम न्यायालय के इस निर्देश को पालन करने हेतु केंद्रीय सरकार ने, केंद्रीय सतर्कता आयोग को मनोनीत अधिकारी नियुक्त किया, पब्लिक इंट्रेस्ट डिस्कोलशर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन दिनांक 1 अप्रैल, 2004, 'व्हिसिल ब्लोवर' की शिकायतों पर कार्य करता है। इस रिजोलुशन के अंतर्गत, जिसे सामान्यतः व्हिसिल ब्लोवर रिजोलुशन के नाम से जाना जाता है, आयोग को यह जिम्मेदारी दी गई कि वह पीआईडीपीआई रिजोलुशन के अधीन अभियोगकर्ता द्वारा प्रेरक और दुखदायी शिकायत के विरुद्ध कोई भी कार्रवाई कर सकता है। सीवीसी अधिनियम, 2003 आयोग ने सतर्कता प्रशासन के अधिकार क्षेत्र को परिभाषित किया है, जहाँ मुख्य रूप से ग्रुप 'ए' अधिकारियों या उसके समान अधिकारियों को सूचित किया जाएगा, ऐसी कोई प्रतिबंध आयोग पर भारत सरकार के पब्लिक इंट्रेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनफोरमर्स रिजोलुशन, 2004 में नहीं है।

'व्हिसिल ब्लोवर' की महत्वपूर्ण विशेषताएँ

- आयोग अभियोगकर्ता की पहचान का पता लगाएगा; यदि यह शिकायत बेनामी हुई, तो इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।
- अभियोगकर्ता की पहचान तब तक प्रकट नहीं किया जाएगा जब तक अभियोगकर्ता स्वयं शिकायत का विवरण जनता को अथवा अपनी पहचान को किसी अन्य कार्यालय या प्राधिकारी को न बता दें;
- आगे होने वाली रिपोर्ट/जांच के लिए बुलाने पर, आयोग अभियोगकर्ता की पहचान का खुलासा नहीं करेंगे, यदि किसी कारणवश पहचान प्रकट हो जाती है तो संगठन के प्रमुख को भी उसकी पहचान गुप्त रखने का निवेदन करेंगे;
- आयोग को, निस्तारण के लिए जहां आवश्यक हो, सीबीआई या अन्य पुलिस अधिकारियों को बुलाने का अधिकार है;
- यदि किसी व्यक्ति को इस आधार पर पीड़ित किया जाता है कि उसने केस फाइल किया है या प्रकटीकरण किया था, वह आयोग के समक्ष एक आवेदन देकर इस विषय पर शिकायत निवारण की मांग कर सकता है, वहाँ आयोग व्यक्ति अथवा संबंधित प्राधिकारी को उचित निर्देश दे सकता है।
- यदि आयोग को लगे कि अभियोगकर्ता अथवा गवाह को सुरक्षा की आवश्यकता है, तो वह संबंधित सरकारी प्राधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश जारी करेगा;
- आयोग को यदि पता चलता है कि शिकायत प्रेरित अथवा दुखदायी है, उसे यह छूट है कि वह आवश्यक कार्रवाई करे;
- आयोग किसी तरह की जांच के किसी भी प्रगटीकरण के विषय में जिसे एक प्रारुप अथवा लोक जांच का निर्देश दिया गया हो पब्लिक सरवेंट्स एनक्यारी अधिनियम, 1850 के अधीन अथवा कोई अन्य विषय जैसे कमीशन ऑफ एनक्वारी अधिनियम, 1952 जांच के लिए निर्देश दिया गया है।
- आयोग के निर्देशों के बावजूद अभियोगकर्ता की पहचान हो जाती है, तो आयोग को यह अधिकार है कि वह मौजूदा नियमों के अनुसार उस व्यक्ति के विरूद्ध अथवा संस्थान जिसने ऐसा प्रकटीकरण किया है पर समुचित कार्रवाई कर सकता है।

सतर्कता विभाग के अंतरकार्यालय ज्ञापन संदर्भ सं. एम.डी.एल./वी.आई.जी./5268/जलतरंग-4ई तिथित 11.08.2015 का संलग्नक

विषय : सतर्कता संबंधी अनुज्ञेय एवं निषेध गतिविधियां

1. पूर्तिकर्ता सूची को अपडेट करना

करें	न करें
नियमित तौर पर पूर्तिकर्ता सूची की समीक्षा करें एवं जिस किसी सामग्री/ सेवा मद के लिए तीन से कम पंजीकृत पूर्तिकर्ता हैं, उसकी सूची को बेहतर बनाने हेतु आवश्यक कार्यवाही करें।	दो वर्षों में एक बार, निष्क्रिय एवं 'एक-मुश्त' पूर्तिकर्ताओं को हटाकर पूर्तिकर्ता सूची को विषयानुकूल बनाये रखना न भूलें।
पूर्तिकर्ताओं की संविदा निष्पादन क्रम-निर्धारण सूची की समीक्षा करें एवं उसके आधार पर पूर्तिकर्ता को सूची में शामिल कर अथवा सूची से हटाने की कार्यवाही अवश्य करें।	
प्रत्येक वर्ष के अंत पर पूर्तिकर्ता सूची का ए.बी.सी. विश्लेषण करना जरूर सुनिश्चित करें।	

2. (पूंजीगत) प्रस्ताव प्रारम्भ करने के / क्रय मांगपत्र तैयार करने के दौरान

करें	न करें
जहां उपयुक्त हो, उपकरणों की एवं उनके पुर्जों की मात्रा का, गुणवत्ता-संबंधी लक्षण एवं मापन इकाई सहित उनकी क्षमता का, और उपकरण की स्थापना एवं नियमित चलन के लिए इच्छित उपकरण एवं सेवा-सहायता का विस्तार-पूर्वक विवरण अवश्य दें।	खरीद हेतु अनुमोदन के प्राधिकार किसी अधिकारी विशेष के लिए आरक्षित करने के उद्देश्य से, किए जाने वाले समान कार्य / क्रय किए जाने वाली वस्तु की मात्रा को बांट कर / कम करके अनेक क्रय मांगपत्र न बनाएँ।
जब भी किसी उपकरण के लिए ग्राहक / मालिक द्वारा नामांकन किया जाये, रूपांकन विभाग द्वारा बनाए जा रहे क्रय मांगपत्र में ग्राहक/मालिक के नामांकन पत्र का संदर्भ देना ना भूलें।	क्रय मांगपत्र बनाते समय राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय संख्या सहित लिखना ना भूलें तथा यह सुनिश्चित करें कि वे मांगपत्र जारी करने के दिवस पर वैध हों और वापस नहीं लिए गये हों।
	स्टॉक-समाप्त कोडेड वस्तुओं की खरीद हेतु क्रय मांगपत्र का आपात प्रावधान नियमित तौर पर प्रयोग में ना लाएँ ताकि पूर्तिकर्ताओं को दरों / कीमतों को मौके का फायदा उठाकर बढ़ाने का अवसर प्राप्त ना हो। जहां आवश्यकता हो, इस प्रावधान का उपयोग तात्कालिक मात्रा के लिए ही करें तथा बाकी मात्रा के लिए नियमित निविदा की क्रिया-प्रणाली अपनाएँ

श्री विकास हूडा
उप प्रबंधक (सतर्कता)

वो जो दर्पण में है

जीवन में जब तुम पा लो वो जिसके लिए संघर्ष किया, जूझा
और संसार तुम्हें बनाए सरताज एक दिन के लिए,
बस दर्पण में झांक के देखो स्वयं को एक झलक
और देखो क्या है उस व्यक्ति के पास तुम्हे कहने के लिए।

क्योंकि वो न माता, न पिता, न पत्नी है
जिनकी वाह-वाही और समीक्षा के हो तुम पात्र,
वो व्यक्ति जिसका निर्णय सर्वोपरि महत्ता रखता है,
खड़ा तुम्हें रहा झांक है मात्र।

कुछ जन मानते होंगे तुम्हें एक स्पष्टवादी सच्चा मित्र
और घोषित कर भी दें तुम्हें एक उत्कृष्ट व्यक्ति,
परन्तु दर्पण में व्यक्ति कहता है तुम हो व्यर्थ, महत्वहीन
यदि उस स्वयं से नही मिला पाते हो तुम दृष्टी।

केवल वही है जिसे तुम्हे संतुष्ट रखना है, और भले ही हों
क्योंकि वही है जो देगा अटूट साथ जब तक आता है अंत,
और उत्तीर्ण तुम कर चुके होंगे तुम्हारा अधिकतम कठिन एवं संकटपूर्ण परीक्षण
यदि है दर्पण में दिखते व्यक्ति से तुम्हारा मित्रता का संबंध।

अपने जीवनकाल में तुम भले ही संसार को मूर्खता का मुखौटा पहनाते जाओ
और पीठ पर थप-थपायी, सराहना पाते, बनाते जाओ काल्पनिक-सुंदर कल,
परन्तु अंतिम पुरस्कार के रूप में पाओगे केवल मनोव्यथा एवं अश्रु
यदि तुमने, दर्पण में है जो व्यक्ति, से किया है छल।

हँसी जीवन की एक जरूरत

श्री काकासाहेब चां. कडू
मॉड्यूल शाप

हम सभी जानते हैं कि स्वास्थ्य के लिए हँसी का टॉनिक सबसे अच्छा होता है। हँसी शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक सभी स्तर पर बल बढ़ाती है। लेकिन आज का इन्सान सुख की चाह में कस्तूरी मृग की तरह दौड़ रहा है। अपने बारे में सोचने के लिए उसके पास समय नहीं है। हँसना, हँसी मजाक करना ये सब वह भुल चुका है। संत कबीर कहते हैं - **देखो सो दुखीया बाबा, सुखीया कोई नहीं। जोगी दुखीया जंगम दुखीया, तपसी को दुख दूना। आशा वर्षा सब घट व्यापी, कोई महल नहीं सूना।** संसार में जिसे भी देखो वह दुखी नजर आता है। किसी के पास संपत्ति है तो संतति नहीं। किसी के पास संतति है तो संपत्ति नहीं, संतति और संपत्ति दोनों हैं तो स्वास्थ्य नहीं। जिंदगी में कोई भी हो चाहे संसारी हो या सन्यासी सब दुखी हैं। युवा लोग तो मोबाईल में व्यस्त होकर उससे फ्रस्ट्रेशन के शिकार हो रहे हैं। हँसते हुए चेहरे तो दिखाई ही नहीं देते। सिर्फ बच्चे हँसते हैं किंतु बढ़ती उम्र के साथ वे भी गंभीर बन जाते हैं। सच तो यह है कि निरंतर शारीरिक तनाव, चिंता होने से आदमी बीमार पड़ता है और उसके विपरीत निरंतर खुश रहने वाला, हँसने वाला, भय मुक्त आदमी स्वास्थ्य पूर्ण जीवन जी सकता है। हास्य आपकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। हास्य एक अच्छी दवा है। इस वजह से आजकल हास्य क्लबों की बड़ी धूम है। जब भी व्यक्ति हँसता है तब व्यक्ति के शरीर के खून में कुछ ऐसे संवाहक होते हैं, जो मस्तिष्क की ओर से आने वाले संदेशों को वहन करते हैं, वे खुशी का संचार करते हैं। इससे स्वास्थ्य प्रक्रिया पर लाभदायक असर होता है, शरीर कार्यक्षम होता है। डॉक्टर भी चिंता, दुख, अशांति से आई हुई बिमारियों में हंसने और खुश रहने की सलाह देते हैं। डॉक्टर का कहना है कि हँसने पर हमारे शरीर में पेट के स्नायुओं में लामबद्ध हलचल पैदा होती है। और अतड़ियों में भी संतुलित घर्षण निर्माण होता है। इससे पाचन शक्ति में सुधार और रूधिराभिसरण भी ठीक तरह से होता है।

दुनियाभर में आजकल बिमारियों के इलाज के लिए योगोपचार, चुंबक चिकित्सा, रंगोपचार, आयुर्वेद जैसी पद्धती में हास्योपचार पद्धति को स्थान दिया है। अगर हम मानसिक स्तर पर खुश रहें, संतुष्ट रहें तो हमें बिमारियाँ छु भी नहीं सकती। अगर हो भी जाए तो उनसे हमें जल्दी मुक्ति मिलेगी। कहा जाता है कि हँसो और अधिक जीवन पाओ। इसी कारण हम देखते हैं कि कई जगह पर हास्य क्लबों में या हास्य शिविरों में लोग जोर जोर से हँसते हुए नजर आते हैं और उन्हें हंसते हुए देखकर हम भी क्या पागल जैसे हँसते हैं कहकर जोर जोर से हँसते हैं। लोगों को इस तरह हँसते हुए देखकर हमें बड़ा आनंद आता है।

दुनियाभर में कई वैज्ञानिकों ने हास्य पर शोध करके निष्कर्ष निकाला कि हास्य स्मित, मन के स्तर पर संतोष की खास लहरें निर्माण करती हैं। इससे न्युरोपेक्टाईड की निर्मिती होती है। यही घटक रोग प्रतिबंधक का काम करता है। इसलिए स्वस्थ जीवन के लिये हँसी के उपचार पर आजकल अधिक जोर दिया जा रहा है।

हास्य जिंदा आदमी का प्रतीक है। हास्य से बुढ़ा आदमी भी स्मार्ट दिखता है। हास्य से आप गुस्से पर काबू पा सकते हैं। वास्तव में असली आनंद तो हमारे भीतर ही है लेकिन हम खोज नहीं पाते। हम स्वयं हँसे तो आनंदमय और परमशांत बनेंगे। हँसने को अपने से बाहर कहीं से हासिल करने की आवश्यकता नहीं है। और नहीं कुछ नया करने की जरूरत सिर्फ हँसते रहो, हँसाते रहो, हँसी मजाक करो, हास्य किताबें पढ़ो, चुटकुलों का प्रयोग करो हँसीवाली फिल्में देखो। फिर देखो दुनिया कैसी हसीन हो जाती है। हँसो, आनंदी रहो दूसरों को आनंदित करो।

नई पीढ़ी की गलत सोच

श्री अनिल रामकृष्ण पाटील
विभाग न्यू ॲसेम्बली

आज का जीवन इतना असुरक्षित हो गया है कि हमें अपनों से बात करने में घुटन होती है। जिसे देखो वह अपने को ज्यादा ही स्मार्ट समझने लगा है। बस एक ही चीज मोबाईल और इंटरनेट के माध्यम से हम आसमान छु रहे हैं। पर उसके साथ-साथ क्या गलतियाँ हो रही हैं उस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है देखो वो मोबाईल में कुछ ना कुछ बातें या गेम्स फेसबुक वाट्सअप ऑनलाईन चेटींग या अपने ही धुन में अच्छाई या बुराई की तरफ झुक रहा है। ये सभी चीजें अपने इस्तेमाल करने के तरीकों पर निर्भर करती हैं।

आज पति पत्नी नौकरी संभालने में, व्यापारी व्यापार संभालने में, बिजनेस वाले लोग अपना कारोबार में व्यस्त हैं। किसी को बच्चों पर ध्यान देने के लिए वक्त नहीं है। इसलिए उनका मोबाईल ही वक्त गुजारने के लिए साथी है और यहीं से ही खुलता है अपने बच्चों के भविष्य की बर्बादी का द्वार और सब कहते हैं उसे नये विश्व का चमत्कार, आज हम ही अपने बच्चों का भविष्य खराब कर रहे हैं। जरूरत से ज्यादा हम उनको आधुनिक चीजें देकर बिगाड़ रहे हैं। आजकल बच्चे मोबाईल में क्या देखते हैं हम सब जानते हैं नेट के माध्यम से वह हर एक चीज खोजते हैं पर नेट पर दी गई जानकारी कितनी सही या गलत है वह किसी को मालुम नहीं है। उससे अच्छा अपने माँ बाप बड़ों की जानकारी सुनें तो बढ़िया है। नेट पर जो जानकारी है माँ बाप बताते हैं वह नए जिंदगी का अनुभव और तजुर्बा है। पर हम उनसे बात करने में मन ही मन हिचकिचाते हैं।

एक जमाना था जब बच्चों को सही या गलत समझाने की नौबत नहीं आती थी तब बाहर का माहौल ही इतना अच्छा होता था कि बच्चे भली-भांति समझ जाते थे पर आज वक्त के साथ-साथ हमारी जीवन शैली इतनी बदल गई है कि हमें बच्चों पर ध्यान देने के लिए वक्त ही नहीं है और उसका असर आज की भावी पीढ़ी पर मोबाईल-कम्प्युटर, इंटरनेट जैसे अच्छे साधनों का गलत इस्तेमाल हो रहा है।

आज इंटरनेट के माध्यम से कुछ अनसेफ व्हीडीओ, अश्लील जानकारी हमारे बच्चे देखते हैं, पढ़ते हैं और अपने आप को कुछ अलग महसूस करते हैं। गलत लोगों से चॅटींग के कारण गलत फोटो शेयर करना, गलत साइट पर जाना जो उन्हें कम उम्र में ही बड़ा बना देती है और उस गलत का नतीजा हमारे समाज को भुगतना पड़ रहा है। इसका एक ही इलाज है हमारे बच्चों को जीवन के बारे में जानकारी दीजिए, खुलकर बात करिए आज भले हमारे बच्चे अच्छे हैं पर बाहर माहौल अच्छा नहीं है।

हर एक चीज का वक्त सबकी जिंदगी में आता है। हमें उन्हें यह बात कम उम्र में समझाना जरूरी है बस यही एक रास्ता इस नई सोच का हल है हमें ज्यादा समय बच्चों के साथ बिताना चाहिए। बड़े लोगों का चरित्र, उनकी किताबें, अच्छे संस्कार, बच्चों को देना जरूरी है। यही उनके आने वाले जीवन में काम आयेंगे। अच्छे विचारों के कारण गंदे विचारों से बचने में सहायता मिलेगी। माँ-बाप थोड़ा समय रोजाना बच्चों को दें जिससे उनका भविष्य निर्मल बन जाएगा। गलत संगति में पड़कर बच्चों का भविष्य अंधेरे में डुब जायेगा।

ऐसा न हो कि जिन्होंने हमारे लिये टेलिफोन की खोज की उस महान वैज्ञानिक ग्रॅहम बेल को ऐसा लगे, वरदान के रूप में की गई खोज भविष्य में शाप न बन जाए।

शिवांश सिंह
पुत्र श्री लाल साहब सिंह
मुख्य प्रबंधक (वाणिज्य-पू.ख)

तारा टूटा

दूर कहीं एक तारा टूटा।
क्या जाने वो किसने लूटा।।

छत पर कहीं नहीं था भाई,
नहीं सड़क पर पड़ा दिखाई।।

काश कहीं अगर मिल जाता।
अलमारी में उसे सजाता।।

जगमग जगमग करता रहता।
सुबह शाम में देखा करता।।

सत्संगति

श्री राजेश हिंदुराव आंबवाड
प्रबंधक (भंडार-पूर्व खंड)

सत्संगति से हमारा अभिप्राय उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों की संगति से है। मानव-मन में श्रेष्ठ एवं गर्हित भावनाएं मिश्रित रूप में विद्यमान रहती है। कुछ व्यक्ति सहज-सुलभ सद्गुणों की उपेक्षा करके कुमार्ग का अनुगमन करते हैं। उनकी संगति प्रत्येक के लिए भयंकर सिद्ध होती है। वे केवल अपना ही विनाश नहीं करते हैं। अपितु अपने साथ रहने तथा वार्तालाप करने वालों के जीवन एवं चरित्र को भी नष्ट करते हैं। विश्व में प्रायः ऐसे मनुष्य ही अधिक हैं जो उत्कृष्ट एवं निकृष्ट दोनों प्रकार की मनोवृत्तियों से युक्त होते हैं। उनका साथ यदि किसी के लिए लाभप्रद नहीं होता, तो हानिकारक भी नहीं होता। इनके अतिरिक्त तृतीय प्रकार के मनुष्य वे हैं जो गर्हित भावनाओं का दमन करके केवल उत्कृष्ट गुणों का विकास करते हैं। ऐसे व्यक्ति निश्चय ही महान प्रतिभा सम्पन्न होते हैं। उनकी संगति प्रत्येक व्यक्ति में उत्कृष्ट गुणों का संचरण करती है। उन्हीं की संगति को सत्संगति के नाम से पुकारा जाता है।

जो व्यक्ति उदार हृदय के हैं और सबको अपने कुटुम्ब सा ही स्नेह करते हैं, इस प्रकार के लोगों को सज्जन कहते हैं। जो कुटिल हृदय के हैं और सबसे बैर तथा ईर्ष्या का भाव रखते हैं इस प्रकार के लोगों को दुर्जन कहा जाता है। घर, बाहर, देश विदेश सर्वत्र सज्जनों का ही साथ ढूँढ़ना चाहिए सज्जनों के साथ निवास करना तथा उनके साथ मेल जोल करना ही श्रेयस्कर होता है।

सज्जनों और दुर्जनों को पहचानना बहुत कठिन है। बड़े-बड़े विद्वान और अनुभवी लोग भी सज्जनों और दुर्जनों की पहचान करने में धोखा खा जाते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी की निम्नलिखित चौपाई सज्जनों और दुर्जनों की पहचान कराने में सहायक सिद्ध हो सकती है-

साधु चरित सुभ सरित कपास निरस विसद गनमय फल जासू।।
जो सहि दुख पर छिद्र दुराता। बंदनीय जेहि जग जस पावा।।

सज्जन पुरुष कपास की तरह होते हैं। कपास में रस नहीं होता फिर भी वह उज्जवल और गुणमय अर्थात रेशा युक्त होता है। धुनने कातने और बुनने के समय कपास को कितने कष्टों का सामना करना पड़ता है फिर भी वह अधीर नहीं होता और वस्त्र के रूप में तैयार होकर दूसरों के शरीर की रक्षा करने के साथ ही साथ उनकी शोभा भी बढ़ता है। इस प्रकार सज्जन लोग भी अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करके सदा परोपकार में लगे रहते हैं। वे केवल भलाई ही करना जानते हैं। भलाई करने में वे यह नहीं देखते कि कौन अपना है कौन पराया है कौन शत्रु है और कौन मित्र। एक भाव से सबको समझाते हैं और अपने हृदय का वास्तविक प्रेम प्रदान करते हैं। ऐसे ही उदार हृदय सज्जनों की प्रशंसा करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित्रमानस में लिखा है।

बंद्हु संत समाज हित अनहित नहि कोई।
अंजलि-गति सुभ जिमि सम सुगंध कर दाई।।

किसी विद्वान ने कहा है व्यक्ति अपने वातावरण से ही सीखता है। यदि वातावरण उपयुक्त और मंगलकारी नहीं है तो मनुष्य का सारा विकास रूक जाता है। उसकी गति प्रतिकूल दिशा की ओर प्रवाहित होने लगती है और उनका शीघ्रा तिशीघ्र पतन हो जाता है। यदि सौभाग्य से व्यक्ति को सुंदर और कल्याणकारी संगति मिल गई तो उनका निरंतर उत्थान होता रहता है। इस प्रसंग में किसी कवि ने ठीक ही कहा है –

सुसंगति से गुण उपजे, दुसंगति गुण जाय।
बांस-फांस और मित्री, एक ही भाव बिकाय
इसी भाव का एक दोहा और प्रसिद्ध है-

जाहि बड़ाई चाहिए, तजे न उत्तम साथ।
ज्यों पलास संग पान के, पहुंचे राजा हाथ।।

प्रायः पान को पलास के पत्ते में बांध कर दिया जाता है और पलास का पत्ता बड़े आदमियों के हाथों में पहुंचने का गौरव पा लेता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में सत्संग की महिमा का बखान करते हुए लिखा है-
बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।
संत्संगति मुद मंगल भूल।
सोई फल सिधि, सबसाधन फूल।।

कबीरदास जी ने भी सत्संग की महिमा का चित्र इस प्रकार खींचा है-
कबिरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगत क्रूर की आठो प्रहर उपाधि

सत्संग से अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। श्रेष्ठ पुरुषों के साथ रहने और उनसे वार्तालाप करने से सहज ही ज्ञान की वृद्धि हो जाती है। वह ज्ञान पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान की अपेक्षा उच्च कोटि का होता है। महात्मा कबीर शिक्षित नहीं थे मसि कागद छुओ नहीं कमल गहयो नहीं हाथ फिर भी उन्होंने उच्च कोटी की कविता का प्रणयन किया है। वस्तुतः सत्संग के प्रभाव वश वे ज्ञान-वृद्ध थे।

संगति का सुव्यापी प्रभावी है। यदि कोई व्यक्ति चोर-डाकुओं के साथ उठता बैठता है तो उसको चोर-डाकू ही समझा जायेगा। जुआरी के साथ बैठा हुआ व्यक्ति जुआरी समझा जाता है और अच्छे व्यक्तियों के साथ बैठने-उठने वाला व्यक्ति भी अच्छे व्यक्तियों में गीना जाने लगता है।

सत्संग से लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। यदि कोई व्यक्ति इस जीवन में दु:खी रहता है तो कम से कम कुछ समय के लिए श्रेष्ठ पुरुषों की संगति में बैठकर वह अपने सांसारिक दु:खों का स्मरण कर लेता है। सत्संग में लीन रहनेवाले मनुष्य को दैवी दु:खों का कोई भय नहीं रहता। वह अपने को सर्वदा ईश्वर में लीन समझता है, जिससे दु:खों का कोई कारण ही शेष नहीं रह जाता।

सत्संग के प्रभाव से धैर्य लाभ होता है जिससे मन में क्षमा की शक्ति अपने आप आ जाती है जो मन को शान्ति और संतोष प्रदान करती है। सत्संग में संलग्न रहने वाला मनुष्य अनिवार्य रूप से सदाचारी होता है। संगति का प्रभाव मनुष्य के ऊपर अवश्य पड़ता है, अत: सदैव सज्जन पुरुषों की संगति करनी चाहिए और दुर्जन व्यक्ति से सदैव दूर रहना चाहिए। चाहे कोई व्यक्ति स्वयं कितना ही उत्कृष्ट गुणों से युक्त तथा स्वच्छ हृदय वाला हो, कुसंगति में पड़कर उसके चित्त में विकारों का समावेश अवश्य होता है।

श्री सिमनलाल जी. आर्य
लिपिक

नारी का हो सम्मान

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है - "यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:"। अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। किन्तु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं, उसमें नारी का हर जगह ही अपमान होता चला जा रहा है। उसे भोग की वस्तु समझकर आदमी अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है यह बेहद चिंताजनक बात है। लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाए, इस पर विचार करना आवश्यक है।

माता का हमेशा सम्मान हो

माँ अर्थात माता के रूप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानी जननी। माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। माँ देवकी (कृष्ण) तथा माँ पार्वती (गणपति/कार्तिकेय) के संदर्भ में हम देख सकते हैं।

किंतु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी माँ को महत्व देना कम कर दिया है। यह चिंताजनक पहलू है। सब धन-लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। परतु जन्म देने वाली माता की रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, जो वर्तमान में कम हो गया है, यह सवाल आजकल यक्षप्रश्न की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है। इस बारे में नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बाजी मार रही हैं लड़कियाँ

अगर आजकल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि ये लड़कियाँ आजकल हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। इन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है, किंतु इन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है। उनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए।

कंधे से कंधा मिलाकर चलती नारी

नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है। पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है। पिता के घर में भी उसे घर का कामकाज करना होता है तथा साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है। उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है। उसे इस दौरान घर के कामकाज के साथ पढ़ाई-लिखाई की दोहरी जिम्मेदारी निभानी होती है, जबकि इस दौरान लड़कों को पढ़ाई-लिखाई के अलावा और कोई काम नहीं रहता है। कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं करते हैं, जबकि उन्हें इसके अलावा और कोई काम नहीं रहता है। इस नजरिए से देखा जाए तो नारी सदैव पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तो चलती ही है बल्कि उनसे भी अधिक जिम्मेदारियों का निर्वहन भी करतीहै। नारी इस तरह से भी सम्माननीय है।

प्रेरणा स्त्रोत

श्री रणजीत शिवाजी पाटील
कॉम्पोझीट वेल्डर

एम.डी.एल. ने आज तक न जाने कितनों को सहारा दिया है कितनों का घर बसाया है। एम डी एल की एक खासियत हमेशा रही है कि कम्पनी हमेशा अपने कर्मचारियों को आगे बढ़ने में मदद करती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं अशोक खाड़े जी, जो दास ऑशोअर कम्पनी के एम डी हैं। इनके बारे में मुझे तब पता चला जब मैंने उनकी मुलाकात टी.वी. पर देखी।

अशोक खाड़े जी का जन्म सांगली जिला के पेडगांव में हुआ। उनका जन्म एक गरीब और अस्पृश्य माने जाने वाले समाज में हुआ था। उस जमाने में अस्पृश्यता, जाती-वाद जैसे भयानक प्रथाओं का पालन किया जाता था। उनके पिताजी की आर्थिक हालात बहुत खराब थी उनके पास तीन एकड़ बिना पानी वाली जमीन थी। वे गांव में कुछ काम करके अपने परिवार का पेट पालते थे। हालात बहुत ही नाजूक थे। कभी-कभी तो एक समय का खाना मिलना भी मुश्किल होता था। एक दिन अशोक जी की माँ ने उन्हें आटा चक्की से आटे का डिब्बा लाने के लिए भेजा, जब वे डिब्बा लेकर आ रहे थे तो बारिश की वजह से वे रास्ते में फिसलकर गिर पड़े और पूरा आटा पानी में गिर गया। अशोक जी खाली डिब्बा लेकर रोते हुए अपनी माँके पास आए। माँ ने रोने की वजह पूछी तो उन्होंने रोते हुए बताया कि आटा पानी में गिरा है। यह सुनकर उनकी माँ का तो जैसे दिल टूट रहा था क्योंकि उस रात घर में कुछ भी खाने के लिए नहीं था। किसी तरह उनकी माँ ने उन्हें और उनके दो भाईयों को खेती के लिए रखे बीजों से आटा बनाकर रोटी खिलाई थी। बाद में उन्हें गांव के कुछ बड़े जमीनदारों से दिए हुए मक्के और कुछ धान पर गुजारा करना पड़ा था। आमदनी कम होने के कारण उन्हें पाठशाला में अक्सर बाहर बैठना पड़ता था। निर्दयी समाज की वजह से उन्हें जातिवादी आलोचना का सामना करना पड़ा था। लेकिन वे स्कूल में बहुत ही चाणक्य दिमाग वाले विद्यार्थी थे। उन्हें गणित में सौ में से सौ अंक मिलते थे। उनकी पढ़ाई किसी तरह से चल रही थी।

कुछ दिन बाद उनके बड़े भाई दत्तात्रय (आण्णासाहेब) एमडीएल में काम में लग गए। उसके बाद अशोक जी खुद और उनके छोटे भाई सुरेश दोनों भी एमडीएल में लग गए। दत्तात्रय और सुरेश दोनों वेल्डिंग का काम करते थे और अशोक जी ड्रॉफ्समैन का काम करते थे। काम करते हुए उन्होंने विले-पार्ले से रात्री कालेज में पढ़ाई करके इंजिनियर की डिग्री प्राप्त की। उन्हें एमडीएल ने कुछ दिनों के लिए जर्मनी भेजा था। उसके बाद वह गुणवत्ता नियंत्रण विभाग में काम करते थे। तीनों भाई बहुत ही मेहनती थे। उनकी मेहनत और लगन को देखकर कुछ लोगों ने उन्हें खुद का व्यवसाय करने के लिए प्रोत्साहित किया। अशोक जी ने इस बात पर सोचते हुए अपने दो भाईयों की मदद से DAS OFFSHORE नाम की कंपनी स्थापित की। इस कम्पनी का नाम भले ही बंगाली लग रहा हो मगर तीनों भाईयों के पहले अक्षरों पर इसका नाम रखा गया है। इस कंपनी की शुरूआत करना उस व्यक्ति के लिए इतना आसान नहीं था जिसके पास सोने के लिए भी जगह नहीं थी।

अशोक जी के जीवन ने उस वक्त मोड़ लिया जब न्हावा में चल रहे एमडीएल के काम का ठेकेदार कुछ कठिनाई की वजह से काम छोड़ दिया। एमडीएल ने इन तीनों भाईयों के ऊपर भरोसा करके उनकी कंपनी को वह काम दिया। कम्पनी का भरोसा कायम रखते हुए उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज उनकी कंपनी का सालाना टर्नओव्हर करीब आठ सौ करोड़ रूपये का है। उनकी कंपनी में आज लगभग चार हजार लोग काम करते हैं। उनकी कंपनी का काम दुनिया के कई देशों में चल रहा है। भारत और भारत के बाहर भी उनकी कंपनी का नाम इस क्षेत्र में बहुत बढ़ा है।

पूजा आत्माराम दर्वेश
फिटर

एक कदम

(1)
कदम कदम बढ़ाए चल
सफलता तू पाए चल
कर्म ही धर्म है
कर्म को बढ़ाए चल
कदम कदम बढ़ाए चल।।

(2)
कदम कदम बढ़ाए चल
अज्ञान को मिटाए चल
ज्ञान का दीपक जलाते चल
उन्नति के जहाज में हो सवार चल
कदम कदम बढ़ाए चल।।

(3)
कदम कदम बढ़ाए चल
कल करे सो आज कर
आज करे सो अब
मेहनत के बीच बोए चल
फल की न तू आशा कर
कदम कदम बढ़ाए चल।।

(4)
कदम कदम बढ़ाए चल
आज पतझर आए तो,
न निराश होना तू
फिर सावन आएगा
बहार फिर खिलेगी

यात्रा-वृत्तांत

श्री प्रकाश चन्द्र झा
उमप्र (जनि-कार्य)

विगत वर्ष के अंतिम कुछ दिनों में भ्रमण का एक कार्यक्रम मेरे समक्ष, मेरे एक प्रिय मित्र (या तो स्वयं अंदाजा लगा लें या फिर लेखक से संपर्क करें) द्वारा विचारार्थ रखा गया। कतिपय बिन्दुओं पर सोचकर सकारात्मक स्वीकृति दे दी गई। भ्रमण के लिए स्थान, क्षेत्र और कम से कम अवकाश के खर्च पर अधिक से अधिक दर्शनीय स्थलों का दौरा और तदनुसार अनुकूल समय का चयन कोई मुश्किल कार्य नहीं था। स्थान क्षेत्र के बारे में मेरा कोई विशेष आरक्षण नहीं था और भ्रमण के नाम पर सारे विकल्प खुले थे। मध्य प्रदेश का नाम सुझाने पर भाषा, भेष और परिवेश की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए किसी विशेष तैयारी की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ी। सिर्फ डर था, तो दिसम्बर महीने में मध्य और उत्तर भारत में पड़ने वाली कुख्यात सर्दी की। शीत-लहर का आक्रमण होने पर गर्म कपड़ों, स्वेटरों, कंबलो की एक विशाल फौज आपके साथ चलनेवाली यात्रा सामग्रियों का अभिन्न हिस्सा बन जाती है। भले ही ये कपड़े वजन के हिसाब से अल्प हों, किन्तु आयतन के हिसाब से इतना स्थान घेरते हैं कि इनके लिए अलग से व्यवस्था करना अत्यंत ही लाजिमी हो जाता है। सो, दो सुकोमल, गर्म और गुणवत्तापूर्ण कंबल भी खरीदने पड़े और उनको प्रवास के समय स्थान-स्थान पर ले जाने के लिए बड़ा सा एक बैग भी।

इससे पहले कि यात्रा वृत्तांत के लिए प्रस्थान का प्रकरण प्रारम्भ हो जाय, इसकी चर्चा आवश्यक है कि प्रारम्भिक रूप में यात्रा की रूपरेखा और इसके लिए समय सारणी क्या थी?

भ्रमण-यात्रा का स्वरूप कमोबेश स्पष्ट होने पर यह सुनिश्चित हो गया था, कि भ्रमण के लिए हम लोग मध्य-प्रदेश जा रहे हैं और यात्रा का श्री गणेश 24/12 को मुंबई से माँ शारदा शक्तिपीठ मैहर के लिए होगी और इसका समापन 03/01 को उज्जैन से मुंबई वापस आने के साथ होगा। क्योंकि इसी के आधार पर प्रवास के लिए रेलगाड़ियों में स्थान आरक्षित किए गए थे। मैं भी सपरिवार था और मेरे सज्जन मित्र भी। दो परिवारों, खासकर दो परिचित परिवारों के साथ रहने पर यात्रा और प्रवास में एकाकीपन नहीं खलता है और सहयोग का सम्बल सदैव ही साथ रहता है।

ज्यों ही यात्रा-वो भी नितांत रूप से भ्रमणार्थ की सुनिश्चितता की भनक पत्नी और बच्चों को लगी, उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। यात्रा-विचार और उसके अनुसार तैयारी, खरीदारी, विचार-विमर्श, इत्यादि होने लगे। रिश्तेदारों और सन्निकट मित्र-परिवारों को यथोचित जानकारी दी जाने लगी। क्या-क्या साथ ले जाना है - इसकी मानसिक सूची अनायस ही बनने लगी। यात्रा क्रम में लोग अक्सर जिन चीजों को घर भूल जाते हैं, उसे बोलकर सूचीबद्ध किया जाने लगा, ताकि ऐन वक्त पर एक भूले तो दूसरा याद दिला दे।

यथार्थ रूप में यात्रा तो घर के बाहर जाने से ही होती है। घर में रहकर तो कोई यात्रा नहीं हो सकती है। अगर कोई यात्रा घर में रहकर की जाती कही जा सकती है, तो वह है उम्र की जीवन - यात्रा या फिर आध्यात्मिक या मानसिक उत्थान की यात्रा। लेकिन यात्रा के दौरान भी घर जैसी जरूरतें पड़ती है और घर को उठाकर यात्रा पर निकला नहीं जा सकता है। अतः घर के जैसा घर के बाहर सुविधा मुहैया कर लेना कारीगरी है, चतुराई है और बुद्धिमत्ता है। इसीलिए सुघड़ नारियाँ स्वल्पाहार के लिए घर में बनी कुछ सामग्रियों को साथ लेकर यात्रा करती हैं। वैसे, यात्रा अब और अधिक सुविधापूर्ण और आरामदायक बनती जा रही है और सुविधा उपलब्ध होने पर पैसे से जगह-जगह जरूरत के अनुसार चीजों को खरीदा जा सकता है, लेकिन घर का स्वाद कहाँ?

समय का चक्र द्रुत गति से चलता रहा और यात्रा के लिए प्रस्थान की वेला आ ही गई। ईश्वर और इष्टदेव को स्मरण एवं प्रणाम कर ससामान घर से प्रस्थान कर दिए। ट्रेन की यात्रा सुखद, मनोरम, जानी-पहचानी और पूर्वानुभूति के अनुसार रही। नियत समय से करीब घंटे भर की देरी से चलती हुई ट्रेन मैहर स्टेशन से जा लगी और हम सभी लोग सकुशल उतर गए। ट्रेन के मैहर पहुँचने के करीब घंटे भर पहले मेरे मित्र को, एक सज्जन पुरुष द्वारा यह संकेत और संदेश दिया गया कि स्टेशन के बाहर एक लाल रंग की वाहन खड़ी रहेगी और आप लोग उसमें बैठ जाएँ। यह समाचार हम सभी के लिए सुखद और आनंदायक था।

लम्बी यात्रा के बाद, किसी स्टेशन के बाहर आकर, खासकर अंजान स्थान पर, वाहन का चयन, मोल भाव, कहीं ठगा न जाऊँ, जैसे बातों का अंदेशा आम तौर पर परेशानी का कारण बन जाता है। कई बार सुरक्षा के लिहाज से भी निर्णय तनिक कठिन हो जाता है। ऐसे में वाहन की पूर्व व्यवस्था, निश्चित रूप से मन को प्रसन्न कर देती है और यात्रा-प्रवास में परिवार प्रमुख को वाहन व्यवस्था करने की परेशानी से निजात दिला देती है। यह बताना श्रेयस्कर होगा कि यह व्यवस्था मेरे मित्र महोदय के एक निकट रिश्तेदार द्वारा कर दी गई थी। मेरे मित्र को इस व्यवस्था के बारे में शायद ज्ञात हो, किन्तु मुझे इस बात का तनिक भी भान न था। बाद को पता चला - यह व्यवस्था सिर्फ स्टेशन पर वाहन तक ही सीमित नहीं थी। अपितु रात्रि - विश्राम के लिए आराम दायक अतिथि - निवास भी आरक्षित कर दिए गए थे। चंद मिनिटों के बाद हम लोग यथा नियोजित अतिथि - गृह में स्थित हो गए और भोजनादि के बाद प्रातः काल माँ शारदा देवी के दर्शन के लिए कार्यक्रम सुनिश्चित करने लगे। थकावट थी, रात को अच्छी

नींद लगी। प्रातः स्नान के बाद माता के दर्शन के लिए ऊंचे पहाड़ पर स्थित मंदिर में पहुँचकर बड़ा ही आध्यात्मिक आनंद मिल रहा था। ट्रेन से आते-जाते, कई बार इन ऊंची पहाड़ों पर स्थित मंदिर के दर्शन हो जाते थे, लेकिन मंदिर परिसर में आकर दर्शन करने का सौभाग्य प्रथमतः ही था। माँ शारदे के नाम का यह शक्ति - पीठ पूरे देश में विख्यात है। लोक-गाथाओं के नायक आल्हा-ऊदल की दंत-कथाएँ भी इस स्थान से जुड़ी हैं। विश्व-प्रसिद्ध सितार-वादक पंडित रविशंकर भी मैहर घराने से ताल्लुक रखते हैं। कहा जाता है पंडित रविशंकर के गुरु को माँ शारदे का वरदान प्राप्त था।

माँ शारदे की पूजा-अर्चना के बाद स्थानीय मंदिरों और धार्मिक स्थलों का भी भ्रमण किया गया। इसमें गीला मठ का शिव मंदिर, ओइला आश्रम और नीलकंठ बाबा की तपोस्थली की यात्रा प्रमुख हैं। ओइला आश्रम दरअसल नीलकंठ बाबा का ही आश्रम है और उनकी तपोस्थली मैहर देवी मंदिर से करीब पाँच किलोमीटर दूर पश्चिम में एक और पहाड़ी एवं निर्जन स्थान पर स्थित है। वहाँ तक जाने का रास्त दुर्गम और कच्ची सड़क का है। दर्शनीय स्थल थोड़े दुर्गम हों, तो वहाँ पहुँचकर आनंद और दर्शन का संतोष कुछ ज्यादा ही होता है। इन स्तानीय यात्रा-भ्रमणों के लिए हमने कोई गाईड तो नहीं कर रखा था, लेकिन वाहन का चालक स्थानीय होने के कारण वहाँ से जुड़ी हुई तमाम बातें, बिना किसी लाग-लपेट के बता रहा था। कई बार विशेष महत्व और जानकारी के लिए, उस स्थान पर रहते लोगों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा शांत कर लेते थे।

पहाड़ों पर निर्जन जंगलों के बीच, हिंसक जानवारों की बहुतायत रहते हुए भी, संतों द्वारा तपस्या के लिए ऐसे स्थलों का चयन करना, आम शहरी लोगों के लिए विस्मयकारी है। साधारण मानसिकता से निश्चित रुपेण कहा जा सकता है कि तपस्या के लिए एकांत स्थान का होना आवश्यक है। वस्तुतः मानव का स्वभाव भीड़ में रहना है। जब हम अकेले होते हैं तो एकाकीपन, मन में डर पैदा करता है। किन्तु सच तो यह है कि हर कोई अकेले आया है और अकेले जाना है। स्वयं को जानने के लिए एकाकी होना और उस एकाकीपन में आनंद प्राप्त करना संतो का ही कार्य है। यह आम लोगों के लिए भले ही विस्मयकारी हो, पर संतो के लिए यह आम बात है।

उस दिन के भोजन की व्यवस्था, उसी सज्जन ने अपने निवास पर रखी थी, जिन्होंने वाहन और रात्रि विश्राम की व्यवस्था की थी। जैन धर्मावलम्बी, उस सज्जन पुरुष के यहाँ का गरमागरम भोजन शुद्ध शाकाहारी और बड़ा ही स्वादिष्ट था, जो हम सभी को रुचिकर लगा। पेट और मन दोनों भर गए। भोजन के उपरांत आतिथ्य सत्कार की औपचारिक चर्चा के अवधि में बच्चे उनके बगीचे के स्थापित झूले पर झूल-झूल कर यात्रा-आनंद का मजा ले रहे थे।

इस बार के यात्रा का एक विशेष पहलू यह था, कि बहुत कुछ पहले से निश्चित नहीं किया गया था। हर पड़ाव के बाद अगले पड़ाव की योजना बनाई जाती थी। केवल यात्रा के आदि और अंत की सुनिश्चितता रखी गई थी। हम लोग अपना अगला पड़ाव खजुराहो को बनाने की योजना बना रहे थे। किन्तु हम लोगों को बताया गया कि कल के दिन खजुराहो में काफी भीड़-भाड़ रहेगी कारण वहाँ किसी सरकारी योजना का उद्घाटन होना है और उद्घाटन के लिए संबद्ध सरकार के मंत्री वहाँ पधार रहे हैं। अतः प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी गण के साथ-साथ राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ और जमावड़ा से हॉटलों और अतिथि गृहों में स्थान पाना दुर्लभ हो सकता था। किन्तु घूमने-फिरने निकले पर्यटक-परिवारों का दिन जाया न हो, इसके लिए खजुराहो से करीब 30 कि.मी. पहले ही पन्ना नामक स्थान पर हम लोगों के पड़ाव या ठहराव की व्यवस्था की गई। पन्ना में नेशनल पार्क (राष्ट्रीय उद्यान) है और यह मध्य-प्रदेश के पर्यटन स्थलों में तारांकित है। वन्य और नैसर्गिक जीवों के प्रेमी और विदेशों से खजुराहो से पहले उस स्थान पर रुकना था, सो समय का सदुपयोग कह लिजिए या फिर वहाँ घूमने का भाग्य, इन दोनों के सम्मिलित प्रभाव से, हम लोग मैहर से पन्ना के लिए कूच कर गए। एक वाहन की व्यवस्था कर दी गई और हम दोनों परिवार ससामान उसमें लद गए और प्रस्थान कर दिए पन्ना के लिए।

पन्ना पहुँचते - पहुँचते शाम हो गई थी। वैसे दूरी के हिसाब से यह हम लोगों का आभास भी था और आकलन भी। रास्ते में स्वल्पाहार और चाय-पान के लिए सुविधानुसार रुकते-चलते सांध्य - वेला में हम लोग पन्ना में दाखिल हो गए। यहाँ हमलोगों के ठहरने का प्रबंध एक उत्तम और सुविधा सम्पन्न अतिथि निवास में था। दिसम्बर के महीने में जैसी ठंड की उम्मीद की जा सकती है, उसी प्रकार के ठंड से वातावरण शीतमय था। दो कमरों में व्यवस्था थी। उतरते ही स्वागत और चाय की चुस्की से थकान को मिटाने की कोशिश की गई। रात्रि में भोजन के उपरांत हम लोगों से कहा गया कि पन्ना नेशनल पार्क में बाघ दर्शन की सबसे अधिक संभावना प्रातः काल में ही है। अतः इस सभी पर्यटक प्रातः छः बजे ही प्रस्थान के लिए तैयार हो जाएँ।

प्रातःकाल छः बजे तक सपरिवार प्रस्थान होने के लिए तैयार होने का सीधा-सीधा अर्थ था ब्रह्म-मुहूर्त में ही उठना। जाड़े का मौसम और पहाड़ियों से घिरे खुले और रमणीक स्थान में स्थित अतिथि-गृह। बीच शहर से थोड़ा ज्यादा ही ठंड यहाँ होने का अनुमान। किन्तु रात्रि में, समय से भोजन और मोबाइल में अलार्म की सुविधा से प्रातःकाल समय से उठने का विश्वास बन गया। घूमने का जोश ही कुछ अलग होता है। थकावट भी शरीर में ऊर्जा भर देती है। कमरों में हीटर और सुकोमल कंबलों की थी। दिक्कत किसी प्रकार की नहीं थी। सवेरे भ्रमण के लिए वाहन की व्यवस्था और साथ में चलने के लिए एक स्थानीय निवासी का संग सुनिश्चित था। निश्चित मन होने से नींद जल्दी आती है और थका शरीर जल्दी ही निद्रा देवी के आगोश में समा जाता है। रात को अच्छी नींद लगी और प्रातःकाल समय से तत्परतापूर्वक तैयार हो गए। देर से उठने वाले बच्चे भी नहा-धोकर उछल-कूद और दौड़-भाग करने लगे।

समय पर कारवां प्रस्थान हो गया। दो स्थानीय आयोजित गाड़ियों में हमलोग पन्ना नेशनल पार्क में प्रविष्ट हो गए। पार्क के अंदर कच्ची सड़कों की टेढ़ी-मेढ़ी और घुमावदार मार्गों से पार्क के अधिकाधिक क्षेत्र का भ्रमण किया जा सकता है। पार्क में प्रवेश करने के बाद वहाँ की हर चीज देखने लायक हो जाती है। आखिर इन्हीं चीजों को देखने के लिए तो हम लोग यहाँ आए हैं। यहाँ तक, कि पेड़ पौधों पर रहने वाली आम गिलहरी भी दर्शनीय हो

जाती है। कैमरे निकाल लिए गए। जो हमारी आँखें देख नहीं सकती थी, कैमरे की आँख उसे पकड़कर अपने पर्दे पर हमें नजदीक से दिखा देती है और अगर इच्छा हो तो उस क्षण को कैद भी किया जा सकता है। पन्ना नेशनल पार्क में हर निगाहें जंगली जानवरों को तलाश रही थी। पर्यटकों के आगमन का भान शायद वहाँ निवास कर रहे जंगली जानवरों को भी रहता है और कई घासों और झाड़ियों के झुरमुटों के बीच खड़ा होकर गाड़ियों में बैठे पर्यटकों के कैमरों में कैद होने के लिए टकटकी लगाकर देखते रहते हैं। चीतल, श्वेतगोटे वाली हिरण, बंदरों इत्यादि को बहुतायत में देखा गया। किन्तु, शीत ऋतु में इतने सवेरे तैयार होकर भ्रमण का मुख्य उद्देश्य था, बाघों का दर्शन। उस दिन बाघ का दर्शन, अगर ईश्वर नहीं, तो कम से कम किसी सिद्ध प्राप्त संत महात्मा के दर्शन के लिए लालायित नयन के समतुल्य कहा जा सकता है। बाघ का दर्शन हो जाना यात्रा के सौभाग्य और पर्यटक की किस्मत से जोड़कर भी देखा जाता है। हमारे समूह में से किसी को पता नहीं था, कि वहाँ कोई बाघ नाम का जीव रहता भी है या नहीं। उसके वहाँ निवास करने का कोई चिह्न अगर आम पर्यटक को तसल्ली दे सकता है, तो वह है बाघ के पंजों का निशान। कच्ची मिट्टीवाली सड़कों पर उसके पंजों का निशान उसके अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं। सो नजरें, तो बहुत दौड़ाई, गाड़ियों के पहिये कई किलोमीटर का सफर तय कर लिए, उदय के लिए आतुर सूरज सर पर सवार हो गया, लेकिन बाघों का दर्शन शायद नसीब में अंकित नहीं था। अंततोगत्वा, हम पन्ना नेशनल पार्क के दूसरे द्वार पर पहुँच गए जो खजुराहो जानेवाली मुख्य राजमार्ग से लगती है। द्वार के समीप ही स्वल्पाहार के लिए हम लोग रुके। घास के बीच बने फुलवारी में रखेबेंचों पर बैठकर बड़े नैसर्गिक और मनोरम वातावरण में चाय की चुस्की लेकर तबीयत और थकान दोनों को हल्का किया। बच्चों को दौड़ भाग करने के लिए पर्याप्त खुला स्थान उपलब्ध था। यहाँ जंगली जानवर होने का कोई भय नहीं था। पूरे भ्रमण के दौरान गाड़ी के बैठे-बैठे जकड़े हाथ-पाँव को ढीला और शिथिल करना आरामदायक लग रहा था। वहाँ कई और पर्यटक परिवार प्राकृतिक वातावरण का लुत्फ उठा रहे थे। इस प्रकार पन्ना नेशनल पार्क का भ्रमण बगैर बाघ दर्शन के, एक हिसाब से पूरा हो गया।

प्रश्न फिर सम्मुख उपस्थित था कि अब आगे क्या ? नजदीक में खजुराहो ही था और वहीं जाने के क्रम में हम लोग पन्ना में रुके थे। विचार-विमर्श प्रारंभ हो गया। समय का माप-तौल शुरू हो गया। सर्व सहमति से निर्णय निकल कर सामने आया कि हम लोग आज ही खजुराहो भ्रमण करेंगे और वापस रात्रि का विश्राम पन्ना में ही करेंगे। स्वाभाविक रूप से खजुराहो के लिए प्रस्थान का कार्यक्रम सुनिश्चित हो गया। हम सभी लोग गाड़ियों में यथास्थान विराजमान हो गए और कारवां खजुराहो के लिए कूच कर गया। भ्रमणकारी पर्यटकों के लिए भ्रमण ही मुख्य बिन्दु रहता है, स्थान तो भ्रमण का एक बहाना भर रहता है।

खजुराहो के मंदिरों की लोकप्रियता उसके विशेष स्थापत्य कला और मंदिरों के बाह्य दीवारों पर बने कलात्मक भित्तिचित्रों के लिए भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के पर्यटकों के बीच रहा है और विदेशी पर्यटकों को भारत भ्रमण के लिए खींच लाने में इस मंदिर का आकर्षण किसी और दर्शनीय स्थल के कम नहीं है। ऊँचे और पक्के चबूतरों पर बने चार-पाँच मंदिरों का सुंदर समूह चाहरदिवारी से घिरे एक विशाल प्रांगण में अवस्थित है। प्रांगण हरी घास और खूबसूरत पौधों से सुसज्जित है। बाहर टिकट की व्यवस्था है। सामने सड़क के उस पार, आम पर्यटनस्थल पर मिलने वाली सामानों से सजी-पटी छोटे-छोटे दुकानों की कतार से, पर्यटन स्थल रोजगार निर्माण के साधन होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रहे थे।

खजुराहो मंदिरों के उस प्रांगण में पर्यटकों की भारी भीड़ भरी थी। पहली बार मंदिर में प्रवेश कर दर्शनार्थियों की लम्बी कतार को गर्भगृह में प्रवेश करने के बजाय उसके चारों ओर बिखरते पाया। इस भव्य कलात्मक मंदिरों के बारे में देशी और विदेशी पर्यटकों में आस्था कम और आश्चर्य अधिक था। मंदिरों में आने वाले श्रद्धालुओं के हाथ में फूल, धूप, दीप, चन्दन और आरती के साजो-सामान के जगह अत्याधुनिक कैमरे थे और आश्चर्य एवं चिंतन में डूबी आँखें थीं। हर एक मंदिर दूसरे से विलक्षण और करीब-करीब समरूप भित्तिचित्रों से भरपूर। स्थानीय गाईड पर्यटकों को दर्पण के एक छोटे टुकड़े से, सूरज की रोशनी को किसी विशेष चित्र पर परावर्तित करके उसकी व्याख्या करता और पर्यटक आज से हजार वर्ष पहले भारतीय चित्रकारों की काबिलियत पर सोच निमग्न हो जाता।

खजुराहो का हर भित्तिचित्र अपने आप में एक सम्पूर्ण लेख का पात्र है। पर्यटन पर पहुँचे दर्शकों को कलाकारों की कोई भी त्रुटि ढूँढने से भी नहीं मिलती। ऐसा प्रतीत होता है, मानों एक ही कलाकार ने अपनी हाथों से सभी चित्रों की रचना की हो अथवा एक ही उस्ताद के चुने हुए शागिर्दों की एक टोली ने इस विशेष कार्य को अंजाम दिया हो। एक ही विशाल प्रांगण में इतने सारे मंदिरों का स्थापित होना इस बात का भी संकेत देते हैं, जैसे उस प्रकार की विशेष मंदिर शैली की कला को परीक्षण करने की प्रयोगशाला के तौर पर विकसित किया गया हो। कारण चाहे जो भी हो, बड़ा ही अद्भुत, आकर्षक और मनोरम स्थल के रूप में इसका विख्यात होना उचित भी है।

अपराह्न की वेला वहीं बीत गई। हम लोगों का कारवां वापस पन्ना की ओर प्रस्थान करने को आतुर था। रास्ते में पता चला, यहाँ एक पांडव गुफा है। अज्ञातवास के दौरान पांडवगण तथाकथित स्थान पर संभवतः निवास किए हों। इसमें सच्चाई भी हो सकती है या फिर लोककथा या दंतकथा के रूप में भी यह विख्यात हो गया हो। इसकी सत्यता को स्वीकार या इंकार करने के बजाय उस स्थान को एक नजर देखने की उत्कट अभिलाषा हम सभी के मन में जागृत हुई। इक्कीसवीं सदी में उस स्थल के निकट तक हम लोग गाड़ी से पहुँच गए, लेकिन उस जंगलमय स्थान को देखकर यह दावे के साथ कहा जा सकता है, कि हजारों वर्ष पहले उस स्थान को रहने योग्य मानकर ढूँढना किसी सिद्ध महात्मा और देवतुल्य मानवों के लिए ही संभव रहा होगा।

प्रकृति की गोद में स्थित वह पांडव गुफा बड़ा ही दिव्य एवं रमणीक स्थान है। श्वेत, शुभ्र और कल-कल बहती झरनों का स्वर अत्यंत ही कर्णप्रिय और नैसर्गिक संगीत का संचार करती है। पहाड़ों की चट्टानों पर से गुजरते, हजारों लाखों जड़ी-बूटियों की गुणों को समेटे अमृत तुल्य झरने का पानी जीवन को बरकरार रखने का ताकत रखती है। सामने एक

खुला स्थान है जहाँ पत्थरों की पगडंडी से गुजर कर लोग पांडव-गुफा तक पहुँचते हैं। पहाड़ की कंदरा में, घर जैसा एक स्थान है और बगल के एक कमरेनुमा जगह को रसोईघर कहा जा सकता है, जहाँ लोग कहते हैं कि योद्धा भीम का निवास था। आस-पास के पेड़ों और झाड़ियों के बारे में कहा जाता है, कि मानव के सभी बीमारियों के इलाज के लिए आयुर्वेदिक उपयोगी पौधे यहाँ मौजूद हैं। अभाव सिर्फ ज्ञान का है, कि किस बीमारी में किस जड़ी-बूटी का इस्तेमाल किस परिमाण में किस प्रकार किया जाए। हम लोग वहाँ बैठकर थोड़ी देर आराम किए। थकावट कम हो गई, लोग तरो ताजा हो गए। एक बार फिर कारवां पन्ना के लिए रवाना हो गया। रास्ते में एकाध जगह चाय-नाश्ते के लिए विराम को अगर छोड़ दी जाय तो हम लोग सीधे पन्ना संध्याकाल तक पहुँच गए। उसी अतिथि निवास में एक और रात विश्राम करने का इंतजाम हो गया था।

प्रातःकाल से लेकर संध्या पर्यंत घूमने-फिरने से थकान का होना स्वाभाविक था, किन्तु अतिथि गृह में मजेदार चाय की चुस्की और गर्मजल से स्नान के बाद थकावट तिरोहित हो गई। पुनः मित्र मंडली अगले दिन के कार्यक्रम का विचार-विमर्श गर्मजोशी से प्रारंभ कर दिया। कार्यक्रम शहडोल जाने का बनने लगा। वहाँ निकट में अमरकंटक ख्यातिलब्ध धामिक स्थल है। सोन और नर्मदा, दोनों पवित्र नदियों का उद्गम स्थल अमरकंटक भगवान शिव के चरित्र और महिमा से जुड़ा हुआ है। मैं व्यक्तिगत रूप से इसके पक्ष में था। अतः अगले दिन शहडोल जाने का कार्यक्रम बन गया। प्रातःकाल निकलना था और यात्रा पूरे दिन की थी। रास्ते में ऐसा कोई दर्शनीय स्थान भी नहीं था, जिसे पड़ाव के लिए शामिल किया जा सके। प्रातःकाल भरपेट नाश्ते के बाद एक बार फिर गाड़ी में बैठ गए। आवश्यक औपचारिकता को निभाते हुए नमस्कार - अभिवादन के बाद यात्रा प्रारंभ कर दी। गाड़ी निकल पड़ी।
मध्य प्रदेश में सड़कों की स्थिति अच्छी है। जंगलों का विस्तार भी अधिक है। हरे भरे जंगलों के मध्य से सुंदर सड़कों पर सफर मनोरम होता है। घंटे - दो घंटे के बाद किसी स्थल पर रुककर हाथ-पाँव सीधा करना और चाय जलपान करना यात्रा को सुखद बना देताहै। हम लोग इसी प्रकार का आनंद लेते, बात-चीत करते, बच्चों के तात्कालिक जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों का उत्तर देते, समझाते-बुझाते, संध्या के समय शहडोल शहर में प्रवेश कर गए।

हमलोगों के लिए अतिथि - गृह में स्थान आरक्षित कर दिया गया था। हम लोग यथास्थान पहुँच कर आराम करने लगे। रात्रि में भोजन की व्यवस्था व्यवस्थापक महोदय के निवास पर ही की गई थी।

शहडोल में रात्रि - विश्राम के बाद, प्रातःकाल पुनः एक नई उमंग, उम्मीद और उत्साह के साथ यात्रा प्रारम्भ कर दी गई। इस बार भ्रमण यात्रा पौराणिक महत्व के धार्मिक स्थल 'अमरकंटक" के लिए प्रारंभ हो गई। सबेरे की चाय और स्वादिष्ट नाश्ते के बाद हम लोग अमरकंटक को चल ही पड़े थे, कि स्थानीय लोगों से ज्ञात हुआ, कि यहाँ से करीब 8-10 किलोमीटर की दूरी पर ही कंकाली देवी का एक सुप्रसिद्ध मंदिर है। इसके चर्चित और प्रसिद्ध होने के पीछे इसका एक अनूठापन इस बात से है, कि यहां माँ काली की मूर्ति कंकाल स्वरूप में दिखाई गई है। आम तौर पर माँ काली के मंदिरों में, भले ही शिव के शरीर पर आरूढ़, रक्तवर्णी जिह्वा को बाहर निकाले माता काली की मूर्ति रहती हो, लेकिन शरीर को कंकाल स्वरुप में दिखाया नहीं जाता है। भूतकाल में शायद यहाँ तंत्र साधना के लिए साधकों की किसी टोली ने इस प्रकार के मूर्तियों को स्थित किया होगा, जो कालांतर में मंदिर का स्थान बन गया हो। उत्सुकता ही तो भ्रमण को प्रेरित करती रहती है। सिर्फ आधे घंटे की अतिरिक्त यात्रा से उत्सुकता और जिज्ञासा शांत हो सकती थी, सो हम लोग कंकाली मंदिर में दर्शनार्थ पहुँच गए। वैसे सड़क का निर्माण - कार्य जारी होने के कारण, यात्रा ऊबड़-खाबड़ सड़कों से हो रही थी और बच्चों के साथ बड़े भी गाड़ी की सीट पर ही उछल-कूद रहे थे और हिल-डुल रहे थे।

कंकाली देवी के मंदिर में बड़ी पवित्रता और श्रद्धा से दर्शन के बाद शिव का स्थान अमरकंटक की ओर कूच कर गए। पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए दोपहर को थोड़ी देर बाद अमरकंटक पहुँच गए। अमरकंटक नर्मदा और सोन नदी के उद्गम स्थल के रूप में जाना जाता है। पहले-पहले हम लोग माता की बगिया में गए। वहाँ भ्रमण और दर्शन के उपरांत सोनमुडा और नर्मदा के उद्गम स्थल का भ्रमण किया। दोपहर के सात्विक और स्वादिष्ट भोजन का लाभ उसी परिसर में प्राप्त हुआ। संध्याकाल हम लोग प्रस्थान कर पुनः वापस शहडोल आ गए।

उसके अगले दिन हम लोग जबलपुर आ गए। यह यात्रा भी आनंददायक रही। शहडोल से जबलपुर हम लोग अपराह्न में पहुँच गए और हॉटल में स्थित होने के पूर्व ही भेड़ाघाट घूमने का प्रोग्राम बन गया। भेड़ाघाट सभी को पसंद आया। कल-कल करती नदियों को नजदीक से देखना और करीब-करीब चाँदनी रात में नौका-विहार करना, मन को हर्षित करने वाली रही। ठंडी की आशंका जिस रूप में यात्रा आरंभ के पूर्व थी, वैसी परेशान करनेवाली स्थिति वहाँ नहीं थी। हाँ, गुलाबी ठंडी अवश्य थी, जिसमें चाय की चुस्की बड़ी प्रियकर लग रही थी। रात्रि में जबलपुर रहकर अगले दिन इंदौर की यात्रा प्रारंभ हो गई। पंचमढ़ी भ्रमण का कार्यक्रम वर्षांत होने के कारण रद्द करना पड़ा। इंदौर पहुँचकर हम लोग एक होटल में स्थित हो गए और संध्याकाल इंदौर शहर का भ्रमण और वहाँ के एक शॉपिंग मॉल में खरीदारी की गई।

अगले दिन हम लोग उज्जैन के विभिन्न मंदिरों में दर्शन करते रहे। महाकाल, कालिदास और विक्रमादित्य की नगरी उज्जैन अपने आप में सर्वश्रेष्ठ धार्मिक स्थान है। संदीपनी आश्रम, मंगलनाथ, भर्तृहरि की गुफा, भैरव मंदिर किसी चर्चा या विश्लेषण का विषय नहीं है।

अगले दिन हम सभी उज्जैन से पुनः मुंबई के लिए रवाना हो गए। और इस प्रकार यात्रा का यह चक्र घर पहुँचने के साथ संपन्न हो गया।

जुहू एयरोड्रम

श्री सौमेन्द्र के दलाल
मुप्र (मानव संसाधन-समवाय)

जुहू एयरोड्रम :- इस एयरोड्रम का आरम्भ सन् 1928 में विले पार्ले फ्लाईंग क्लब द्वारा किया गया जिसके मुखिया जे.आर.डी. टाटा थे। इनको भारत में नागर विमानन सेवा आरम्भ करने का श्रेय दिया जाता है, क्योंकि विमान उड़ाने का पहला लाईसेन्स भारत में टाटा को मिला था। जे.आर.डी. टाटा ने 15 अक्टूबर 1932 को अपनी पहली उड़ान जुहू एयरोड्रम से ड्रीघ रोड कराची हवाई पट्टी के लिए अहमदाबाद होते हुए पूरा किया था।

यह देश का पहला एयरोड्रम है जिसे टाटा ने अपने विमान रखने तथा उड़ाने के लिए बनवाया था। इसी विमान तल से सभी विमान उड़ान भरते थे जब तक यहाँ से दो किमी दूर साँताकुज में नया हवाई अड्डा 1948 तक नहीं बना था।

इस विमान तल का उपयोग द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भी किया गया। यहां पर दो रन-वे बनाये गये और सन् 1939 में एक और निर्माण करने की योजना थी लेकिन सफल नहीं हुई। यह विमानतल विलेपार्ले के पश्चिम में एस वी रोड से सटा हुआ जुहू जाने वाले रास्ते पर मीठीबाई कालेज के पश्चिम से सांताक्रूज बस डिपो तक लगभग 2 किलोमीटर के दायरे में आयताकार आकार में जुहू समुद्री तट के समानांतर फैला हुआ है। प्राकृतिक रूप से यह क्षेत्र मुंबई का लो-लाईन इलाका है। बरसात के दिनों में यहां से विमानों का परिचालन करना पहले सम्भव नहीं होता था तो पूणे विमानतल का उपयोग किया जाता था। वर्तमान समय में यहाँ केवल एक हवाई पट्टी कार्य कर रही है।

जे.आर.डी. टाटा ने टाटा एयरलाइंस शुरू किया था। सन 1943 में टाटा एयरलाईन्स का नाम बदलकर एअर इंडिया रखा गया। सन् 1953 में भारत सरकार ने टाटा एयर लाईन्स का अधिग्रहण कर लिया। जिसके अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कई वर्षों तक जे.आर.डी. टाटा ही रहे और निरंतर कंपनी का विस्तार करते हुए देश की अंतर्राष्ट्रीय विमान सेवा के रूप में कायम किया।

इस विमानतल का परिचालन अब भारतीय विमान प्राधीकरण के अधीन है। यहाँ से हल्के विमान, ग्लाइडर्स तथा ओनजीसी के कार्मिकों को बाम्बे हाई स्थित प्रतितट आयल रिंग पर ले जाने के लिए पवनहंस के माध्यम से किया जाता है।

सन् 1940 में इंग्लैंड से भारत की विमान यात्रा छह दिनों में पूरी होती थी।

टाटा एयर लाईन्स के पास केवल एक पुस मोठ विमान था जिसके द्वारा सप्ताह में एक बार एयरमेल सेवा शुरू की गई थी जो कराची और मद्रास, अहमदाबाद और मुंबई के मार्ग से होती थी। इस प्रकार यह करीब 1300 मील की दूरी तय

1932 में कराची स्थित हवाई पट्टी का दृश्य

जुहू एरोड्रम का रन-वे

जुहू एरोड्रम का ऊपर से लिया गया चित्र

1960 से पहले विमान परिचारिकाओं का परिधान

तत्कालीन एयर रूट मैप

एयर इंडिया का सुपर कान्सटीलेशन विमान जुहू एयरपोर्ट पर लंदन की उड़ान भरने की तैयारी में वर्ष 1940-1953 का दृश्य

पुश मोढ विमान

करती थी। टाटा एयर लाईन्स ने अपने एक वर्ष के परिचालन में 16,000 मील की यात्रा किया और 155 यात्रियों की यात्रा के साथ ही 10 टन मेल की ढुलाई किया। धीरे-धीरे विमानों के आकार, क्षमता तथा इंजनों में विकास हुआ और विमान दो इंजन वाले बनने लगे साथ ही बैठने की क्षमता में भी बढ़ोत्तरी हुई। सी-26 विमान में 24 सैनिकों को ढोने के साथ ही 10 स्ट्रेचर ले जाने की क्षमता थी।

विमान की बढ़ती क्षमता के कारण नये संबंध नैरोबी, एडेन रूट पर 21 जनवरी 1950 से 26 जुलाई 1950 तक बनाये गये। दिसम्बर 1950 में सरदार बल्लभ

वर्तमान समय में रनवे-पर पवन हंस हेलीकॉप्टर

भाई पटेल की तबियत अचानक खराब हो गई उनको दिल्ली से मुंबई लाने की व्यवस्था उपचार कि लिए की गई। यह खबर किसी माध्यम से जनता में पसर गई।

मुंबई की जनता उनको देखने के लिए सांताक्रुज विमानतल पर जमा होनेलगी। रास्ते में सड़क जाम की समस्या से निजात पाने के लिए विमान अधिकारियों ने उनके विमान को जुहू विमानतल पर उतारकर पटेल जी को अस्पताल भिजवाया था।

श्री मदन गोपाल गुरु
उप महाप्रबंधक (पू. खं. - गुणवत्ता)

तुम्हारी...

सहम तो उसी वक्त गयी थी मैं
पवित्र प्यार के अंतरंग क्षणों में
जब हौले से, माँ के कानों में 'पापा'
तुमने कहा था 'बेटा ही देना' मुझे
(2)
अस्पताल के पीछे
कचरे के ढेर में पड़ी
कुत्तों, चूहों द्वारा अर्द्धखाई
मेरी लाशको देख सोच रही हूँ
सवाल करूँ परम पिता परमेश्वर से
इस दिव्य सृष्टी के निर्माता से
क्या यही हश्र था
मेरी आध्यात्मिक यात्रा का?
(3)
चंद सांसें सुरक्षित माँ की कोख में
'भ्रूण परीक्षण'
बेटी?
असीम वेदना
खून से लथपथ मांस का लोथड़ा
अस्पताल के पीछे
कचरे के ढेर में पड़ी
कुत्तों, चूहों द्वारा अर्द्धखाई मेरी लाश।
(4)
नहीं!
मुझे पता है
पवित्र बंधन
पवित्र भावनायें
नव जीवन सृजन
नव आत्मा आव्हान
नव सृजन नियमों का
ये 'हश्र" नहीं हो सकता।
(5)
तो फिर?
समझ गयी मैं
दिव्य सृष्टी निर्माता से
सवाल नहीं
अनुरोध करूंगी
माफ कर देंगे 'वो' तुम्हें।
(6)
क्यों?
उस सृष्टी निर्माता की
प्राकृतिक प्रणालीबद्ध व्यवस्था का
अपमान अवहेलना और तिरस्कार
करने के लिए
(7)
कौन लगती हूँ मैं तुम्हारी?
क्यों मांगू माफी मैं तुम्हारे लिए?
हां।
मुझे कोई नाम नहीं मिला था
तुम्हारा कोई उपनाम नहीं मिला था
फिर भी
चंद सांसों के लिए ही सही
कोख तो तुम्हारी थी ना 'माँ"
रक्त, मांस और मज्जा
तो तुम्हारे थे ना 'पापा"
और
बेटी थी न मैं!
तुम्हारी...

लुप्तप्राय प्रजातियां

श्री पी डी सिद्दीकी
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

लुप्तप्राय प्रजातियां, ऐसे जीवों की आबादी है, जिनके लुप्त होने का जोखिम है, क्योंकि वे या तो संख्या में कम है, या बदलते पर्यावरण या परभक्षण मानकों द्वारा संकट में हैं। साथ ही, यह वनों की कटाई के कारण भोजन और/या पानी की कमी को भी द्योतित कर सकता है। प्रकृति संरक्षणार्थ अंतर्राष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) ने 2006 के दौरान मूल्यांकन किए गए प्रजातियों के नमूने के आधार पर, सभी जीवों के लिए लुप्तप्राय प्रजातियों की प्रतिशतता की गणना 40 प्रतिशत के रूप में की है। कई देशों में संरक्षण निर्भर प्रजातियों के रक्षणार्थ कानून बने हैं : उदाहरण के लिए, शिकार का निषेध, भूमि विकास या परिरक्षित स्थलों के निर्माण पर प्रतिबंध। विलुप्त होने की सम्भावना वाली कई प्रजातियों में से वास्तव में केवल कुछ ही इस सूची में दर्ज हो पाते हैं और कानूनी सुरक्षा प्राप्त करते हैं। कई प्रजातियां विलुप्त हो जाती हैं, या बिना सार्वजनिक उल्लेख के संभावित रूप से लुप्त हो जाती हैं।

किसी प्रजाति के संरक्षण की स्थिति उन लुप्तप्राय प्रजातियों के जीवित न रहने की सूचक है। एक प्रजाति के संरक्षण की स्थिति का आकलन करते समय कई कारकों का ध्यान रखा जाता है, केवल बाकी संख्या ही नहीं, बल्कि समय के साथ-साथ उनकी आबादी में समग्र वृद्धि या कमी, प्रजनन सफलता की दर, ज्ञात जोखिम और ऐसे ही अन्य कारक, आईयूसीएन लाल सूची सर्वाधिक ज्ञात संरक्षण स्थिति सूचीकरण है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, 194 देशों ने लुप्तप्राय और अन्य जोखिम वाली प्रजातियों के संरक्षण के लिए जैव विविधता कार्ययोजना तैयार करने के लिए सहमति जताने वाले समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में इस योजना को आम तौर पर प्रजाति रिकवरी प्लान कहा जाता है।

विलोपन की जोखिम वाली प्रजातियों के लिए आईयूसीएन द्वारा प्रयुक्त अधिक सामान्य शब्द है संकटापन्न प्रजातियां, जिसमें लुप्तप्राय और गंभीर संकटग्रस्त सहित कम जोखिम वाली असुरक्षित प्रजातियों की श्रेणी भी सम्मिलित हैं। आईयूसीएन श्रेणियों में शामिल हैं :

जंगल में लुप्त : बंदी प्राणी जीवित रह सकते हैं, लेकिन कोई मुक्त, प्राकृतिक आबादी मौजूद नहीं हैं। उदाहरण : एलागोस कुरासो।

गंभीर संकटग्रस्त : निकट भविष्य में विलोपन के अत्यंत उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं। उदाहरण : अरकान वन कछुए, जावन राइनो, ब्राजील के मरगैनसर, घडियाल।

लुप्त : प्रजातियों का अंतिम शेष सदस्य मर चुका है, या यथोचित संदेह से परे यह माना जाता है कि मर चुका है। उदाहरणः थैलासाइन, डोडो, यात्री कबूतर, टाइरानोसारस, कैरेबियन मॉन्क सील।

कैरेबियन मॉन्क सील

डोडो

संरक्षण निर्भर : निम्नलिखित पशु को गंभीर खतरा नहीं है, लेकिन ये पशु संरक्षण कार्यक्रम पर निर्भर हैं। उदाहरणः चित्तीदार हैना, तेंदुआ, शर्का, काला कैमान।

बहुत ही कम चिंताजनक : इन प्रजातियों के अस्तित्व के लिए कोई तात्कालिक खतरा नहीं है। उदाहरण : नूटका साइप्रेस, काठ कबूतर, हार्प सील।

लुप्तप्राय प्रजातियों के रूप में सूचीकरण का नकारात्मक प्रभाव हो सकता है, क्योंकि यह प्रजाति को विशेष रूप से संग्रहकर्ताओं और शिकारियों के लिए और अधिक वांछनीय बना सकती हैं। इस प्रभाव को संभावित रूप से कम किया जा सकता है, जैसे कि चीन में व्यावसायिक रूप से कछुए उत्पन्न करने से, शिकार के प्रति संकटग्रस्त प्रजातियों पर दबाव कुछ कम हो रहा है।

सूचीबद्ध प्रजातियों के साथ एक और समस्या, किसी जमीन में लुप्तप्राय प्रजातियों को साफ करने के 'गोली मारो, ठेलो और चुप रहो" तरीके के उपयोग को उकसाने के प्रति उसका प्रभाव है। संप्रति कुछ जमीन मालिक, अपनी जमीन पर लुप्तप्राय जानवर के पाए जाने के बाद उसकी कीमत में कमी अनुभव

लुप्तप्राय : निकट भविष्य में विलुप्त होने की बहुत ही उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं। उदाहरण : नीला व्हेल, विशालकाय पांडा, बर्फीला तेंदुआ, अफ्रीकी जंगली कुत्ता, शेर, एलबेटरॉस, क्राउंड सालिटरी ईगल, ढोले, रंगस।

विशालकाय पांडा

नीला व्हेल

बर्फीला तेंदुआ

करते हैं। उन्होंने कथित तौर पर, अपनी जमीन से समस्या के निदान के लिए, चुपचाप जानवरों को मारने और दफनाने या उनके निवास स्थान को नष्ट करने का विकल्प चुना है, लेकिन ऐसे में उसके साथ-साथ, लुप्तप्राय प्रजातियों की आबादी भी कम हो जाती है। लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम की प्रभावशीलता पर, जिसने 'लुप्तप्राय प्रजातियां' शब्द को गढ़ा है, व्यापार तथा उसके प्रकाशनों के समर्थक समूहों द्वारा सवाल उठाया गया है, लेकिन फिर भी इन प्रजातियों के साथ काम करने वाले, वन्य-जीव वैज्ञानिकों द्वारा, इसे व्यापक रूप से प्रभावी बरामदगी उपकरण के रूप में मान्यता दी गई है। उन्नीस प्रजातियों को सूची से हटाया तथा बरामद कर लिया गया है और पूर्वोत्तर संयुक्त राज्य अमेरिका में सूचीबद्ध प्रजातियों में से 93 प्रतिशत में पुनर्लाभ या स्थिर आबादी है।

इस समय, दुनिया में 1,556 ज्ञात प्रजातियों की विलुप्त होने के रूप में पहचान की गई है और वे सरकारी कानून द्वारा सुरक्षा के तहत हैं। यह सन्निकट, बहरहाल, लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम जैसे कानूनों के संरक्षण के तहत असम्मिलित, संकटग्रस्त प्रजातियों की संख्या को हिसाब में नहीं लेता है। नेचरसर्व के वैश्विक संरक्षण की स्थिति के अनुसार, लगभग तेरह प्रतिशत कशेरुकी (समुद्री मछली को छोड़कर), सत्रह प्रतिशत संवहनी पौधे और छह से अठारह प्रतिशत तक कवक जोखिम के तहत माने गए हैं। इस प्रकार, कुल मिलाकर, सात से अठाहर प्रतिशत तक, अमेरिका के ज्ञात जानवर, कवक और पौधे, विलोपन के नजदीक हैं। यह कुल संख्या संयुक्त राज्य अमेरिका में लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के तहत संरक्षित प्रजातियों की संख्या से अधिक है, जिसका अर्थ है कि कई प्रजातियां धीरे-धीरे विलोपन के करीब होती जा रही हैं।

असुरक्षित : मध्यम दर्जे के विलोपन के उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं। उदाहरण : चीता, गौर, सिंह, आलसी भालू, वोल्वोराइन, मानाटी, ध्रुवीय भालू।

ध्रुवीय भालू

संकट के निकट : निकट भविष्य में इनके लिए खतरा हो सकता है। उदाहरणः ब्लू-बिल्ड डक, सॉलिटरी ईगल, स्माल-क्लाड औटर, मेन्ड वुल्फ।

सॉलिटरी ईगल

इन प्रजातियों के बारे में अधिक जानने की खोज के मामले में भी, कई परिस्थिति-विज्ञानी, पर्यावरण और निवासियों पर उनके प्रभाव पर विचार नहीं करते हैं। यह स्पष्ट है कि 'पारिस्थितिकी ज्ञान का अन्वेषण, जो मूल्यवान पारिस्थितिकी तंत्र की संपत्ति और सेवाओं के साथ-साथ पृथ्वी की जैव विविधता के संरक्षण के बारे में समझने के प्रयासों के सूचनार्थ बहुत महत्वपूर्ण है, अक्चर जटिल नैतिक सवाल उठाता है", और इन मुद्दों को पहचानने और उन्हें सुलझाने के लिए कोई स्पष्ट रास्त नहीं है। पर्यावरणविद, व्यक्तिगत पशुओं के कल्याण की बजाय, समग्र पारिस्थितिकीय क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ऐसे व्यापक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करने से प्रत्येक व्यक्तिगत प्राणी का मूल्य घट जाता है। 'इस समय जैव-विविधता संरक्षण दुनिया के सतही क्षेत्र के 11.5 प्रतिशत संसाधन प्रबंधन के लिए आधारभूत लक्ष्य है। जीवन का अधिकांश भाग इन संरक्षित क्षेत्रों से बाहर आता है और यदि लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण प्रभावी होना है, तो उन पर विचार किया जाना चाहिए।

संरक्षण करने वालों का लक्ष्य है, लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण और जैव विविधता के अनुरक्षण के लिए तरीके बनाना और उनका विस्तार करना। दुनिया की विलुप्त होने जा रही प्रजातियों के संरक्षण में कई तरीकों से सहायता की जा सकती है। इनमें एक तरीका है, प्रजातियों के विभिन्न समूहों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना, खास कर अकशेरुकी, कवक और समुद्री जीवों के बारे मेंस, जहाँ पर्याप्त डाटा की कमी है।
उदाहरण के लिए, आबादी में गिरावट और विलोपन के कारणों को समझने के लिए फिनलैंड में तितलियों की आबादी पर एक प्रयोग किया गया। इस विश्लेषण में, तितलियों का संकटग्रस्त सूची वर्गीकरण, वितरण, घनत्व, डिंभक विशिष्टता, प्रसारण क्षमता, वयस्क प्राकृतिक-वास का विस्तार, उड़ान अवधि और शरीर का आकार, सभी के संबंध में अभिलेख दर्ज और परीक्षण किए गए, ताकि प्रत्येक प्रजाति की संकट स्थिति का निर्धारण किया जा सके। यह पाया गया कि तितलियों

के वितरण में साढ़े एक्यावन प्रतिशत तक की गिरावट आई है और उनका प्राकृतिक-वास गंभीर रूप से प्रतिबंधित है। विशिष्ट तितलियों के वितरण दर में गिरावट का एक उदाहरण है, फ्रिग्गा का फ्रिटिलरी और ग्रिजल्ड स्किपर, जो दलदल के व्यापक निकासी के फलस्वरूप उनके प्राकृतिक-वास क्षतिग्रस्त होने के कारण प्रभावित हुए हैं।

लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण में मदद का एक अन्य तरीका है, पर्यावरणीय नैतिकता को समर्पित एक नए व्यावसायिक समाज का निर्माण, इससे परिस्थिति-विज्ञानियों को जैव विविधता के अनुसंधान और प्रबंधन में नैतिक निर्णय लेने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, पर्यावरण नैतिकता पर अधिक जागरूकता पैदा करने से प्रजातियों के संरक्षण को प्रोत्साहित करने में सहायता मिल सकती है। "छात्रों के लिए नैतिकता पाठ्यक्रम और परिस्थिति-विज्ञानियों और जैव विविधता प्रबंधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों" से पर्यावरण संबंधी जागरूकता पैदा हो सकती है और अनुसंधान तथा प्रबंधन में आचार संहिता के उल्लंघन को रोका जा सकता है। लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण का एक अंतिम उपाय है, संघीय एजेंसी निवेश और संघीय सरकार द्वारा संरक्षण अधिनियमन के माध्यम से बचाव। "परिस्थिति-विज्ञानियों ने जैव विविधता संरक्षण एकीकृत करने और वर्धमान बड़े पैमाने पर सामाजिक आर्थिक विकास के लिए, जैविक गलियारों, जैव मंडल भंडार, पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और पर्यावरण-क्षेत्रीय योजना प्रस्तावित किया है" संघीय अधिदेशाधीन संरक्षण अंचल का एक उदाहरण है, उत्तर-पश्चिमी हवाई द्वीपों का समुद्री राष्ट्रीय स्मारक, जो कि दुनिया में सबसे बड़ा समुद्री संरक्षित क्षेत्र है। अंतर्जलीय समुदायों और अधिक मछलीमारी वाले क्षेत्रों के संरक्षण के लिए स्मारक जरूरी है। केवल इस क्षेत्र में काम कर रहे अनुसंधानकर्ताओं को मछली मारने की अनुमति दी गई है, मूंगे हटाए नहीं जा सकते हैं और होमलैंड सुरक्षा विभाग, उपग्रह इमेजिंग के जरिए पानी से गुजरने वाले जहाजों पर प्रतिबंध लागू करते हैं। स्मारक अनुमानित सात हजार प्रजातियों के लिए, अधिकांशतः जो दुनिया में और कहीं भी नहीं पाए जा सकते, निवास का कार्य करेगा। यह पर्यावरणीय स्मारक यह तथ्य दर्शाता है कि लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण, साथ ही दुनिया के सबसे बड़े पारिस्थितिकी प्रणालियों में से कुछ का अनुरक्षण संभव है।

पत्थर या मूर्ति

श्री रामाश्रय यादव
उप प्रबंधक
(पनडुब्बी भंडार - पूर्व खण्ड)

एक शिल्पकार मूर्ति बनाने के लिए पत्थरों की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। अचानक उसे एक खेत में दो पत्थर दिखाई दिए। उसने उन्हें खरीदकर अपने कारखाने मूर्ति बनाने के लिए ले गया। मूर्ति बनाते वक्त एक पत्थर छेनी-हथौड़े की चोट को सह न सका और छोटे-छोटे टूकड़ों में विखंडित हो गया। जिसका शिल्पकार ने टाइल्स बनाया। दूसरा पत्थर जो छेनी-हथौड़ों की चोट को सहता रहा, वह एक सुन्दर सी मूर्ति बन गया। शिल्पकार मूर्ति एवं टाइल्स को एक ही ट्रक में मंदिर के निर्माण हेतु लेकर जा रहा था। रास्ते में आपस में टकराते (टक-टक-टक करते) हुए टाइल्स ने भगवान की मूर्ति से कहा। भाई ऊपर वाले के द्वारा हम दोनों के साथ भेदभाव क्यों ? मूर्ति : कैसा भेदभाव ? टाइल्स : भाई तुम भी पत्थर मैं भी पत्थर, तुम उसी जगह से लाए गए जहाँ से मैं, तुम उसी के द्वारा बेचे और खरीदे गये, जिनके द्वारा मैं, तुम भी उसी ट्रक में जा रहे हो जिसमें मैं। तुम भी उसी मंदिर में लगाए जाओगे जिसमें मैं। लेकिन मेरे भाई तेरी तो पूजा होगी, और मैं पांव तले कुचला जाऊँगा। यह भेद-भाव आखिर क्यों ? मूर्ति : सुनो जब हमें छेनी-हथौड़ा से तराशा जा रहा था, तब तुम चोट बरदाश्त नहीं कर सके और टूट गये, विखण्डित हो गये। मैं चोट को बरदाश्त करता गया। कभी आँख बनी, कभी नाक, कभी पैर बने, कभी हाथ। ऐसी लाखों-करोड़ों चोटे सहन की मैंने। चोट सहते-सहते, मेरा रुप निखर गया और मैं पूज्यनीय हो गया। तुम चोट सह नहीं सके और खण्डित हो गये, टाइल्स बन गये और तुम कुचलनीय हो गये।

मित्रों,
माझगांव डॉक के परिवार में शामिल होने के बाद यहाँ की कार्यशैली एवं दिनचर्या से घबड़ाओ नहीं, न ही निराश एवं मायूस हो और न ही पत्थर की तरह विखण्डित हो। मैं इस कहानी के माध्यम से यही कहूँगा कि चाहे कितनी भी खराब परिस्थिति आए... टूटना नहीं... अपनी चाल चलते जाना... अर्थात अपना कार्य करते जाना... तेज... धीरे... या बहुत धीरे... बस रुकना नहीं... टूटना नहीं... हिम्मत मत हारना। प्रत्येक चीज को मेहनत एवं लगन के साथ सीखना और करना। आप का लक्ष्य अवश्य पूर्ण होगा।

पानी की कहानी

सुश्री जयंतिका मुखर्जी
हिन्दी अनुवादक

धरती पर पाए जाने वाले पदार्थों में पानी सबसे साधारण है, लेकिन गुणों में असाधारण एवं विशिष्ट है। इसके इन्हीं गुणों के कारण जीवन न केवल इस धरती पर अस्तित्व में आया बल्कि विकसित भी हुआ। हम पानी के आश्चर्यजनक गुणों को प्रायः गंभीरता से नहीं लेते। वास्तव में यह एक उत्कृष्ट विलायक है और काफी अधिक तापमान तक द्रव्य अवस्था में बना रहता है। इसे गर्म करने तथा उबालने के लिए काफी उष्मा की जरूरत होती है।

पानी की इस आश्चर्यजनक भूमिका के पीछे आखिर क्या सच है? दरअसल पानी के असामान्य गुणों का महत्वपूर्ण कारण है उनके अणुओं के बीच लगने वाला अंतर-आणविक बल, जिसे हाइड्रोजन बंध कहते हैं। हालांकि पानी के हाइड्रोजन बंध कमजोर होते हैं, लेकिन पानी के गुणधर्म एवं विशिष्ट व्यवहार के पीछे उनकी अहम भूमिका होती है। जीवन के लिए इसकी आवश्यकता और उपयोगिता का हमारी तमाम प्राचीन पुस्तकों में व्यापक उल्लेख मिलता है।

पानी प्रत्येक जीव के लिए अहम है। जैविक प्रक्रियाओं का पूरा रसायन एक तरह से कार्बन के यौगिकों का जलीय रसायन है। इन यौगिकों को जैवकार्बनिक यौगिक कहते हैं। आज से लगभग साढ़े तीन अरब वर्ष पहले धरती पर ऑक्सीजन की मात्रा नगण्य थी और उस काल में यहाँ की परिस्थितियां आज की तरह नहीं थी। बाद में नीलहरित शैवाल जैसे एककोशिकीय जीवों द्वारा वातावरण में ऑक्सीजन छोड़ी गई। फिर लाखों वर्ष बाद ऑक्सीजन की पर्याप्त उपलब्धता से धरती पर ऑक्सीजन आधारित बहुकोशिकीय जीव विकसित हुए।

वैज्ञानिक एवं विज्ञान लेखक जे.बी.एस. हाल्डेन ने 1929 में बताया था कि हमारे शरीर में लगभग जितनी कोशिकाएं हैं उतनी ही एक कोशिका में परमाणुओं की संख्या होती है। मानव शरीर स्वयं में निर्जीव होते हैं। ये निर्जीव परमाणु ही मिलकर जीव का निर्माण करते हैं। हाल्डेन ने बताया कि सजीव और निर्जीव के बीच की विभाजक रेखा, कोशिका और परमाणु के बीच जीवन का रिश्ता पानी से टूटता नहीं है।

पृथ्वी का तीन-चौथाई हिस्सा पानी से ढँका है। पानी के कारण ही बाह्य अंतरिक्ष से देखने पर धरती नीले रंग की दिखती है। इसीलिए धरती को नीला ग्रह भी कहते हैं। सर्वप्रथम धरती पर जीवन पानी में ही अस्तित्व में आया था। अरबों वर्ष बाद आज भी जीवों की अधिकतर प्रजातियां पानी में ही मिलती हैं। सागर में जीवों की एक अलग दुनिया ही मौजूद है। इसमें कोई दो राय नहीं कि पानी हमारी धरती पर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है तथा कमोबेश यह हर जगह उपलब्ध है।

पानी एक रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन और पारदर्शी द्रव है। इसके इन्हीं गुणों से कुछ लोगों को यह लगता रहा है कि पानी अक्रियाशील द्रव है। हालांकि आज हमें ज्ञात है कि यह अद्भुत गुण-संपन्न यौगिक है और साथ ही यह काफी क्रियाशील भी है। पानी तीनों रूपों में यानी ठोस, द्रव और गैस में मिलता है। कोई दूसरा यौगिक इस तरह से तीनों स्थितियों में नहीं मिलता। ठोस रूप को बर्फ कहते हैं जो शून्य डिग्री सेल्सियस ताप पर या उससे नीचे के ताप पर पाया जाता है।

शून्य से सौ डिग्री सेल्सियस तापमान तक पानी द्रव अवस्था में पाया जाता है। सामान्य वायुमंडलीय दाब पर यह 100 डिग्री सेल्सियस पर उबलने लगता है यानी भाप या वाष्प में बदल जाता है जिसे हम गैसीय अवस्था कहते हैं। किसी पदार्थ के गुणधर्म उसकी संरचना पर निर्भर करती है जो

शून्य डिग्री सेल्सियस ताप पर या उससे नीचे के ताप पर पाया जाता है।

शून्य से 100 डिग्री सेल्सियस तापमान तक पानी द्रव अवस्था में पाया जाता है। सामान्य वायुमंडलीय दाब पर यह 100 डिग्री सेल्सियस पर उबलने लगता है यानी भाप या वाष्प में बदल जाता है जिसे हम गैसीय अवस्था कहते हैं। किसी पदार्थ के गुणधर्म उसकी संरचना पर निर्भर करते हैं। पानी के गुणों की कुंजी उसकी आणविक संरचना में ही निहित है।

पानी केवल दो तत्वों से मिलकर बना है - हाइड्रोजन और ऑक्सीजन। एक अणु में दो परमाणु हाइड्रोजन के होते हैं और एक परमाणु ऑक्सीजन का। इस तरह पानी का एक अणु कुल मिलाकर मात्र तीन परमाणुओं से बना होता है। इतना साधारण अणु और उसके गुणों में इतना वैविध्य किसी को भी अचरज में डाल सकता है। पानी के दो अणुओं के बीच एक खास तरह का आकर्षण बल काम करता है जिसे हाइड्रोजन बंध कहते हैं। इसके विचित्र गुणों का सारा श्रेय इन्हीं हाइड्रोजन बंधों को जाता है।

पानी हमारे भोजन का मुख्य घटक है। एक वयस्क आदमी को पीने के लिए प्रतिदिन औसतन 8 गिलास की आवश्यकता होती है। गर्मी में पानी की अधिक जरूरत होती है। ऐसा इसलिए कि हम कई तरीकों से हमेशा अपने शरीर से पानी त्यागते हैं। वैसे हमारा शरीर औसतन करीब 250 किलोमीटर प्रति घंटे की दर से पानी त्यागता है।

लेकिन कुछ खास स्थितियों में यह दर 3 लीटर तक जा पहुंचती है। शरीर की साफ-सफाई के लिए हम नहाते हैं। कपड़े धोने के लिए पानी का इस्तेमाल होता है। एक शहरी आदमी औसतन प्रतिदिन 100 से 500 लीटर पानी विभिन्न कामों में खर्च करता है। इन सारी बातों के मूल में पानी की भूमिका इसलिए है क्योंकि पानी में इन चीजों के लिए जरूरी गुण मौजूद है।

पानी के बांधों को विशेष तौर पर जल द्वारा निर्मित विद्युत का निर्माण करने के लिए बनाया जाता है। इस किस्म की विद्युत कार्यशील, प्रदूषण-मुक्त तथा कम लागत की होती है। जल विद्युत संयंत्र घरों, स्कूलों, खेतों, फैक्ट्रियों तथा व्यावसायों को विद्युत मुहैया कराते हैं। जल को विशाल पाइपों के जरिए बांध में प्रायः उपलब्ध एक पावर हाउस तक लाया जाता है। पावर हाउस में जल की शक्ति टरबाइनों को गोल-गोल घुमाती है तथा इस निरंतर गति से एक बल उत्पन्न होता है जिससे विद्युत-शक्ति का निर्माण किया जाता है।

वर्षा जल भूमि में गिरने पर वायुमंडल में फैले कार्बन डाइऑक्साइड के संपर्क में आने के कारण कुछ अम्लीय हो जाती है। अम्ल पृथ्वी की चट्टानों को काटता है तथा इनके टूटे हुए हिस्सों को आयनों के रूप में अपने साथ बहाकर ले जाता है।

आयन नहरों तथा नदियों के रास्ते समुद्र में चले जाते हैं जबकि कई विघटित आयन जीवों द्वारा उपयोग किए जाते हैं तथा अन्य लम्बे समय के लिए छोड़ दिए जाते हैं, जहां समय के साथ-साथ इनकी मात्रा भी बढ़ती रहती हैं। समुद्री जल में क्लोराइड तथा सोडियम होता है जिससे समुद्र जल के विघटित आयनों का 90 प्रतिशत से अधिक की प्रतिपूर्ति हो जाती है। समुद्र जल में कुल विघटित नमक का लगभग 3.5 प्रतिशत है। इससे समुद्र का जल खारा होता है।

भोजन के बिना कोई व्यक्ति एक माह से अधिक जीवित रह सकता है, परंतु जल के बिना सप्ताह से अधिक नहीं रह सकता। कुछ जीवों (जैसे जैली फिश) में उनका 90 प्रतिशत से अधिक शरीर का भार जल से होता है। मानव शरीर में लगभग 60 प्रतिशत जल होताहै - मस्तिष्क में 85 प्रतिशत जल है, रक्त में 79 प्रतिशत जल है तथा फेफड़ों में लगभग 80 प्रतिशत जल होता है।

चिड़ियों सी जिंदगी

कभी अकेले में चिड़ियों को देखता हूँ, तो मन में कुछ सवालें उठते हैं कि क्या है समानता उनमें और हममें ?
हम भी उड़ते रहे नयी जिंदगी और सपनों की तलाश लिए नए देश में।।
कभी दरिया किनारे; कभी पहाड़ के नीचे, तो कभी मंदिर के सामने बैठते रहे सपनों को सजाने में,
कभी उड़ते रहे इस पेड़ से उस पेड़ तक सपनों के आशियाना को तलाशने में,
धूप में तपते रहे; बारिश में भीगते रहे और ठंडी में काँपते रहे, फिर भी लगे रहे आशियां बनाने में।।
कोशिशों से जब थक जाते, तरस जाते थे सोने को, जमीन पे और वादियाँ की गोद में।।
फिर भी जी-जान लगाते रहें, कोशिश करते रहे सपनों का आशियां बनाने में इसी शहर में।।
दूर-दूर शहरों में उड़ते गये बनते हुए आशियाना में खुशाल जिंदगी को बसाने में।।
भूल गए जीवन का अर्थ और मूल्यों को; उसी ही कोशिश और उसी चेष्टा में।।
उलझ गये और खो गये, फिर भी पूछते रहे क्या लक्ष्य है ?
इस चिड़ियों सी जिंदगी में।।

श्री एस प्रधान
उमप्र(मा.सं -अधिकारी)

सुषुम्ना क्रिया योग

श्री मुरली वेपड़ा
मुख्य प्रबंधक
(नॉर्थ यार्ड एसेम्बली शॉप)

श्री श्री श्री भोगनाथ सिद्ध का मानवता को अनुपम उपहार

ईश्वर के रूप में परम गुरु श्री श्री श्री भोगनाथ सिद्ध ने संपूर्ण संसार के लिए शाश्वत शांति और आनंद की कामना करते हुए सुषुम्ना क्रिया योग पद्धति के अद्भुत रूप का उपहार दिया है। उन्होंने रहस्यद्घाटित किया है कि सुषुम्ना क्रिया योग की नियमित साधना से कोई भी गृहस्थ (विवाहित व्यक्ति) सांसारिक जीवन-यापन करते हुए भी मोक्ष (आत्मज्ञान या परमानन्द) की प्राप्ति कर सकता है।

श्री श्री श्री भोगनाथ सिद्ध ने पवित्र उत्सव दिवस विनायक चतुर्थी-बुधवार 07 सितम्बर 2005 के ब्रहम मुहूर्त में गुरुमाई पूज्य श्री आत्मानंदमयी माताजी को ध्यान की अवस्था में सुषुम्ना क्रिया योग साधना अभ्यास का ज्ञान दिया।

श्री श्री श्री भोगनाथ सिद्ध ने गुरुमाई पूज्य श्री आत्मानंदमयी माताजी को बताया कि सुषुम्ना क्रिया योग पद्धति वर्षो पूर्व की कला क्रिया-योग को आज के आधुनिक समय की आवश्यकाताओं को ध्यान में रखते हुए परिमार्जित किया गया है। पारम्परिक क्रिया योग जो कि अत्यंत शक्तिशाली और पुरातन ध्यान क्रिया तकनीक है। उसी का सरलतम रुप सुषुम्ना क्रिया योग है। साधारण शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि सुषुम्ना क्रिया योग हमारे परमगुरु श्री श्री श्री भोगनाथ सिद्ध एवं श्री श्री श्री महावतार बाबाजी द्वारा तैयार आधुनिकतम आंतरिक सॉफ्टवेयर है।

सुषुम्ना क्रिया योग ध्यान का अभ्यास

सुषुम्ना क्रिया योग के चार सरल क्रम

1. योगमुद्रा

सुखासन या पद्मासन में आराम से बैठ जाएँ। यह सुनिश्चित करें कि सिर और पीठ यथासंभव सीधा रखें। अपने नेत्र बन्द कर लें और दोनों हथेलियों को एक साथ लाकर योगमुद्रा लगाएँ जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है। यह योगमुद्रा इस ध्यान क्रिया तकनीक का आधार है।

दोनों तर्जनी और अंगुठे को एक साथ इस प्रकार रखे कि तर्जनी की दिशा शरीर से बाहर की ओर हो, और अंगूठे की दिशा शरीर की ओर हो। बाकी सभी ऊंगलियां आपस में गुंथे हो। हाथों की योगमुद्रा को दोनों जांघो या दोनो जांघो के मध्य में (गोदी) के उपर आरामदायक अवस्था में रखा जा सकता है।

हमारे शरीर के 72000 नाड़ियों में सबसे महत्वपूर्ण है सुषुम्ना नाड़ी उसके बाद इड़ा और पिंगला नाड़ी। अपने दोनों हथेलियों की तर्जनीयों को जोडने से सुषुम्ना नाडी में विश्वशक्ति अधिक मात्रा में प्रवाहित होती हैं। जब हम ध्यान करते हैं तो तीन ऊंगलियों का आपस में गुंथा होना हमारे शरीर के वाम और दक्षिण भाग में ऊर्जा के समतुल्य अन्तर्प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं।

इस मुद्रा में ध्यान करने से प्राण शक्ति का प्रसरण संपूर्ण शरीर व मस्तिष्क के बाए और दाए दोनो भाग में संतुलन स्थापित होता हैं। थोडी भी प्राण शक्ति व्यर्थ न जाकर सारी की सारी शक्ति शरीर के अंदर चली जाती हैं। इस मुद्रा अवस्था में ध्यान करने से एकाग्रता, जागरूकता, निश्चलता का लाभ जल्दी ही प्राप्त कर सकते हैं।

2. ओंकार या प्रणवनाद

ओंकार या प्रणवनाद का इक्कीस बार उच्चारण करें। यह ओंकार या प्रणवनाद आपके नाभिस्थल से ही आनी चाहिए।

ओंकार प्रणवनाद है। ओंकार के उच्चारण से हमारे शरीर में प्राणशक्ति अधिक (बढ) हो जाती है। ओंकार के उच्चारण के समय 'ओम' की ध्वनि पर ध्यानकेंद्र करें और इसें सुनें। इसके अलावा 'म'('म'कार) कों 'ओं' से ज्यादा देर तक कहें जिससे आपके पूर्वजन्मों कें दूषित संस्कार निकल जाऍं।

ओंकार 'ऊँ' अ, ऊ और म का संगम है। जब हम 'अ' का नाद करते हैं तो इसके ऊर्जा तरंगों से मूलाधार, स्वाधिष्ठान और मणिपूर चक्र सक्रिय और उद्वेलित होते हैं। 'उ' के नाद से उत्पन्न होनेवाली ऊर्जा तरंग अनाहत चक्र को सक्रिय करती है और इसी प्रकार 'म' के नाद से विशुद्धि, आज्ञा एवं सहस्त्रार चक्र सक्रिय होते हैं।

इसिलिए ओंकार, जिसके तरंग ऊर्जा से समस्त 'शृष्टी' ओत-प्रोत है- का उच्चारण करते हैं तो दिव्य ऊर्जा / जीवन शक्ति आकर्षित होकर शरीर की ओर प्रवाहमान होती है और इस प्रकार हमारे शरीर के सभी सात चक्र सक्रिय होते हैं हमें बेहतर एकाग्रता मिलती है जिससे हमारा मन अन्तर्मुखी होता है।

3. ओंकार या प्रणवनाद

गहरी सांस चौदह बार लेनी चाहिए। यह गहन श्वास आपके नाभिस्थल से ही आनी चाहिए। गहन लेते समय हमें किसी प्रकार की तेज ध्वनी नही

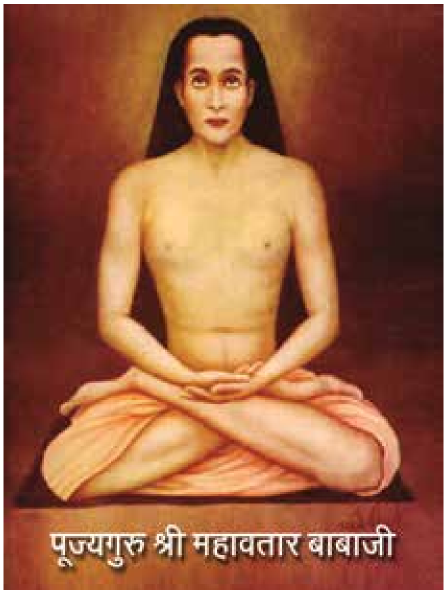
पूज्यगुरु श्री महावतार बाबाजी

पूज्यगुरु श्री भोगनाथा सिद्धार

पूज्यश्री आत्मानंदमयी माताजी

करना चाहिए। अन्य कोई भी हमारी गहन श्वास क्रिया से परेशान न हो।

जब हम धीमी और गहरी सांस लेते है तो हमारा फे. फडा हवा से भर जाता है। इस प्रकार हमारे शरीर को अत्यधिक ऑक्सीजन मिलती है और जीवन ऊर्जा (प्राणशक्ति) सम्पूर्ण शरीर और मस्तिष्क की हर कोशिकाओं में फैल जाती है। दीर्घ श्वास लेते समय इसे प्राणायम की तरह न करे, बल्कि समर्पण भाव से करना चाहिए।

जब हम सांस लें तो हमारे मन में एक उद्देश्य और समर्पण का भाव होना चाहिए। जब हम सांस अन्दर खींचे तो मन में ऐसा भाव करना चाहिए कि हम ईश्वरत्व, उत्तम स्वास्थ्य और सात्विक गुणों को अन्दर समाहित कर रहे हैं और जब हम सांस बाहर उत्सर्जित करें तो मन में ऐसा भाव करें कि हम घृणा, ईर्ष्या, आलस्य और कुस्वास्थ्य को बाहर फेंक रहे हैं। यह गहन श्वास (गहरी सांस) आपके नाभिस्थल से ही आनी चाहिए। अन्य कोई भी हमारी गहन श्वास क्रिया से परेशान न हो।

जब हम इस भाव से गहरी श्वसन करते हैं तो हमें एकाग्रता और विचारहीन अवस्था की प्राप्ति शीघ्र होती है। इस प्रकार मन शांतिपूर्ण अवस्था को प्राप्त करता है और आसानी से उत्तेजित नहीं होता। यह ध्यान रखना चाहिए कि जब चिन्तित और परेशानी की स्थिति में रहते हैं तो गहरी श्वसन के अभ्यास से चिन्ताओं से मुक्ति पाने में हमें सहायता मिलती है

4. भ्रूमध्य में दृष्टी

भ्रूमध्य में दृष्टी बनाए रखना और विचारहीन स्थिति को प्राप्त करना चाहिए। अर्थात भ्रूमध्य में मन को एकाग्र करना चाहिए। किसी मंत्र का जप नहीं करें। ईश्वर के किसी स्वरुप का विचार नहीं करे। इस प्रकार कुछ देर दृष्टी को एकाग्र करने के उपरान्त हम विचारहीन स्थिति में पहुँच जाते हैं। इस विचारहीन स्थिति में पहुँचने और उसी स्थिति में बने रहना ध्यान कहलाता है। अब हमारा मन आनन्द में होता है और जब हम इस आनन्द के साथ प्राण शक्ति (जीवन शक्ति) का मेल हो जाता है तो हमारे शरीर में दिव्य ऊर्जा उत्पन्न होती है जो अन्तर्मुखी होकर ध्यान को और अधिक गहरा करती हैं एवं उसी अवस्था में ठहराव उपलब्ध होती है।

इस अन्तर्मुखी अवस्था में पहुँचने का अर्थ है कि जो जीवन शक्ति हमारे विचारों, नेत्रों एवं अन्यान्य इंद्रियों के द्वारा बाहर की दिशा में प्रवाहित होती थी, वह अब अन्दर की दिशा में हमारे शरीर और मन में प्रवाहित होती थी, वह अब अन्दर की दिशा में हमारे शरीर और मन में प्रवाहित होने लगी है। इस प्रकार की स्थिति में अपार दिव्य ऊर्जा हमारे शरीर के 72000 नाड़ियों (सूक्ष्म ऊर्जा नलिका जो हमारे शरीर में दिव्य ऊर्जा का संचार करते हैं) के नाड़ी मण्डल को शुद्ध, सक्रिय एवं ऊर्जा से भर देते है। जिससे हमें पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

ध्यान के समय ईश्वर की दिव्य ऊर्जा हमें आवृत कर लेती है और हमें आनन्दमय स्थिति उपलब्ध हो पाती है। कुछ साधक इस प्रकार की अवस्था संभवत: पहली बैठक में ही प्राप्त कर सकते हैं। कुछ को यह स्थिति कुछ दिनों की साधना में, कुछ को कुछ महीनों की साधना में तो कुछ को शायद कुछ वर्ष भी लग सकता है। यह साधक के ध्यान की प्रबलता, पूर्व जन्म में किए हुए कर्म, वर्तमान विचारों, संस्कृति और उसके आध्यात्मिक उन्नति पर निर्भर करता है।

- ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बिन्दु
- अपनी ऑखे ध्यानक्रिया के दौरान न खोले। एक बार ध्यान खत्म हो जाने पर अपने हाथों को अपनी आंखो पर रखे और धीरे धीरे ध्यानावस्था से बाहर आए।
- बह्म-मुहुर्त (सवेरे 3 से 6 बजे) में ध्यान करना सर्वोत्तम है। जिन्हें यह संभव नहीं वे किसी भी उपयुक्त समय में कर सकते हैं।
- ध्यान के समय उत्पन्न प्रबल ऊर्जा के कारण शरीर के तापमान को स्थिर रखने के लिए ध्यान से पहले या उसके बाद एक गिलास पानी पीना उत्तम है।
- यदि हम नित्य सोने से पूर्व ध्यान करें और इस प्रकार निद्रा की आगोश में चले जाएँ तो गहरी योग-निद्रा की उपलब्धि होती है।
- अकेले में ध्यान करने के बजाय अगर हम अन्य लोगों के साथ (समूह ध्यान) ध्यान करते हैं तो हमें अकेले ध्यान की तुलना में अधिक दिव्य ऊर्जा की प्राप्ति होती है।
- सुषुम्ना क्रिया योग को सभी लिंग, उम्र और धर्म के साधक अपना सकते है।

माझगाव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के कार्यक्रमों की एक झांकी

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा में दीप प्रज्वलित करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि साथ में खड़े कैप्टन राजीव लठ, नि(पन एवं भा.अ) कमोडोर राकेश आनन्द नि(स.यो.एवं का) कमोडोर एन के देसाई, कानि (पू.ख) और कमांडर पी आर रघुनाथ, नि(जहाज निर्माण) श्री किशोर चंद दास का, नि(मा.स)

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि, संबोधन भाषण देते हुए।

हिन्दी पखवाड़ा में प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो एवं का)

हिन्दी पखवाड़ा में प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए कैप्टन राजीव लठ निदेशक (प एवं भा अ)

हिन्दी पखवाड़ा में प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए श्री किशोर चन्द्र दास, कानि (मानव संसाधन)

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर गायन स्पर्धा का आनंद उठाते हुए बाएँ से कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो. एवं का) रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि, कैप्टन राजीव लठ, नि (पन एवं भा.अ.)।

हिन्दी पखवाड़ा के गायन स्पर्धा में गीत गाती हुई एक प्रतिभागी।

हिन्दी पखवाड़ा में निर्णायक गण के रूप में उपस्थित बाएँ से श्री बी.डी. साठे अमप्र (न्हावा यार्ड), श्री कृष्ण प्रधान उप्र (मा.सं-अ) और सुश्री आस्मिन खान, उमप्र (पू.ख.)।

हिन्दी पखवाड़ा में गायन का आनन्द उठाते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी गण।

हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता में बैठे प्रतियोगी।

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी अनुभाग द्वारा उच्च अधिकारियों हेतु आयोजित कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी गण

अधिकारियों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए श्री सुरेश चंद जैन, भूतपूर्व हिन्दी अधिकारी – निट्टी

अधिकारियों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला में फेकल्टी का परिचय कराते हुए श्री पी डी सिद्दीकी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

उत्पादकता सप्ताह

उत्पादकता सप्ताह में कमोडोर राकेश आनन्द निदेशक (स.यो.एवं का) का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए श्री एस.वी. पैठनकर, मु.प्र.(सयो)

उत्पादकता सप्ताह में कमोडोर राकेश आनन्द, निदेशक (स.यो.एवं का.) कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

गुणवत्ता सप्ताह का आयोजन

गुणवत्ता सप्ताह का शुभारंभ करते हुए कैप्टन राजीव लठ निदेशक (पन-भाअ) पूर्व खंड और अतिथि फेकल्टी

गुणवत्ता सप्ताह के समय उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए कैप्टन राजीव लठ निदेशक (पन-भाअ) पूर्व खंड)

संरक्षा जागरूकता सप्ताह

संरक्षा जागरूकता सप्ताह के दौरान चर्चा करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, कमांडर पी.आर. रघुनाथ नि (जहाज निर्माण), संरक्षा सलाहकार, श्री संजीव शर्मा नि (वित्त), कैप्टन राजीव लठ, नि (प एवं भा.अ.)

संरक्षा उपकरण का निरीक्षण करते हुए कैप्टन राजीव लठ नि (प एवं भा. अ.), अप्रनि, नि (वित्त) एवं अन्य अधिकारी गण

सतर्कता सप्ताह

सतर्कता सप्ताह में दीप प्रज्जवलित करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि के साथ कमांडर पी आर रघुनाथ, नि (जहाज निर्माण) तथा विभाग के अधिकारी

सतर्कता सप्ताह में सुचित्रा पत्रिका विमोचन करते हुए बाएँ से खड़े श्री संजीव शर्मा, (नि (वित्त) कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स.यो.एवं का) रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि, के साथ कमांडर पी आर रघुनाथ, नि (जहाज निर्माण) और श्री वी.वी. चव्हाण, अमप्र (सतर्कता)

सतर्कता सप्ताह के दौरान संबोधित करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि

सतर्कता सप्ताह के दौरान आपूर्तिकर्ताओं के साथ बैठक में रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि के साथ कमांडर पी आर रघुनाथ, नि (जहाज निर्माण)

सतर्कता सप्ताह के दौरान एक आपूर्तिकर्ता अपना विचार रखते हुए

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रियर एडमिरल आर के श्रावत अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उपस्थित कमोडोर राकेश आनंद नि (स.यो एवं का), श्री संजीव शर्मा नि (वित्त), श्री ई सेलवराज, कंपनी सचिव एवं अन्य अधिकारी और कर्मचारीगण

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी, गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स.यो. एवं का.), के. औ. सु. बल प्रमुख एवं एमडीएल के उपस्थित अन्य अधिकारीगण।

26 जनवरी 2016 गणतन्त्र दिवस के अवसर पर कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का) के औ सु बल प्रमुख एवं एमडीएल के उपस्थित अन्य अधिकारी गण को संबोधित करते हुए

विश्व मराठी दिवस

विश्व मराठी दिवस पर दीप प्रज्वलित करते हुए श्री किशोर चन्द्र दास, कानि (मानव संसाधन) के साथ श्री श्रीनिवास सिन्हा, उमप्र (मा.सं.), श्री सचिन कदम, प्र (मा.सं.), तथा अन्य कर्मचारी।

विश्व मराठी दिवस के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार देते एवं संबोधन करते हुए श्री के. सी. दास, (मा.सं.) कार्यकारी निदेशक

विश्व मराठी दिवस पर नाटिका प्रस्तुत करते हुए कर्मचारी

विश्व मराठी दिवस पर विजेता को पुरस्कार देते हुए श्री किशोर चन्द्र दास, कानि (मानव संसाधन)

पुरस्कार प्रमाण पत्र लिए हुए प्रतिभागियों के साथ बैठे हुए कार्यकारी निदेशक

हिन्दी नाटक हलाल

हिन्दी नाटक हलाल का सुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से करते हुए श्री किशोर चन्द्र दास कानि(मा.सं) के साथ श्री श्रीनिवास सिन्हा उपप्र(मा.सं एवं हिन्दी) तथा नाटक संचालक गण

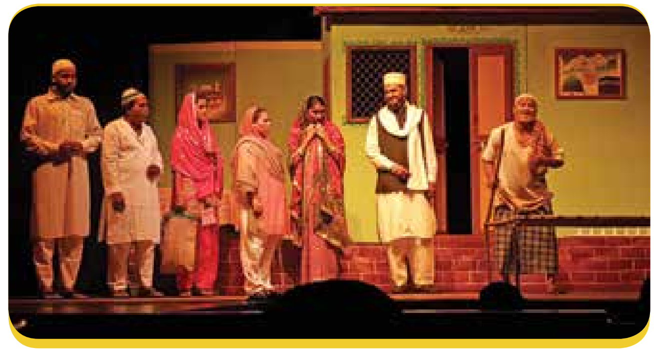

हिन्दी नाटक हलाल का प्रर्दशन करते हुए कलाकार

महानिर्वाण दिवस

महानिर्वाण दिवस पर भाररत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माला चढ़ाते हुए श्री के. डी. पाटील, अ.मप्र. (मा.सं. एवं कैंटीन) और श्री एस. एस. कांबळे, अ.मप्र. (मा.सं.)। सुश्री गीता सुनतकरी प्र (रूपांकन, पू.ख.)।

महानिर्वाण दिवस पर दीप प्रज्जवलित करते हुए श्री के. डी. पाटील अमप्र (मा.सं. एवं कैंटीन) के साथ श्री एस. सिन्हा उमप्र (मा.सं. एवं हिन्दी) और सुश्री गीता सुनतकरी (रूपांकन पूर्वखंड)

सत्यनारायण महापूजा

यार्ड में सत्यनारायण महापूजा का शुभारंभ करते हुए।

सत्यनारायण महापूजा में भाग लेते हुए रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि के साथ कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स.यो. एवं का.) और अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण।

शिवजयंती उत्सव

शिवजयंती उत्सव के अवसर पर बाएँ से श्री सुनिल बिर्जे, रियर एडमिरल आर के श्रावत अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक श्री व सौ स्नेहल आंबोकर महापौर मुंबई श्री नामदेव नार्वेकर एवं श्री नंदकुमार वरणकर

शिवजयंती उत्सव के उत्सव समारोह में भाग लेते हुए बाएँ से श्रीमती रूची आनंद, कामाडेंट (केऔसुब), कैप्टन राजीव लठ नि (पन एवं भाअ), कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो. एवं का.), श्री गजानन कीर्तिकर सांसद, श्री अरविंद सावंत, सांसद, श्री नंदकुमार वरणकर, श्री गुरुनाथ पाटील, रियर एडमिरल आर के श्रावत, अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक एवं श्री अनंत भोसले

शिवजयंती के अवसर पर भाषण देते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, श्री अनिल राणे, कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो. एवं का.), सांसद श्री गजानन कीर्तिकर, श्री अरविंद सावंत, श्री नंदकुमार वरणकर, श्री नामदेव नार्वेकर, कैप्टन राजीव लठ नि (पन एवं भाअ), एवं श्री अनंत भोसले सीआईएसएफ कमांडेट तथा अन्य कर्मचारी

शिवजयंती उत्सव के अवसर पर बाएँ से श्री राजू खोत, श्री रमाकांत मृडगू, सांसद श्री गजानन कीर्तिकर, सांसद श्री अरविंद सावंत, रियर एडमिरल आर के श्रावत, अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, श्री एन वी आव्हाड, श्री नंदकुमार वरणकर

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

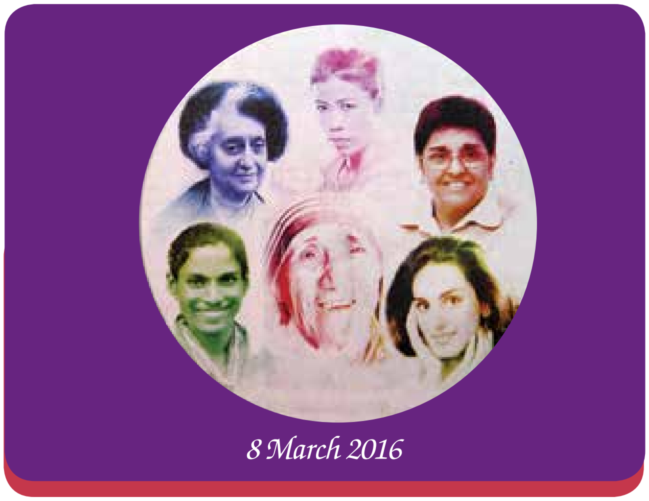

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, अध्यक्ष एवं निदेशक के साथ दाएँ से खड़े श्री संजीव शर्मा नि(वित्त), कमोडोर राकेश आनन्द, नि(सयो एवं का), कैप्टन राजीव लठ, नि(पन एवं भाअ) के अन्य महिला अधिकारी गण

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सभी महिला कर्मचारियों को सम्बोधन करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कमोडोर राकेश आनन्द, नि (सयो एवं का) सभी महिला कर्मचारियों को संबोधन करते हुए

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के एक कार्यक्रम में भाग लेती हुई महिला कर्मचारी

संसदीय समिति का दौरा

समिति सदस्य को पूष्प गुच्छ और शाल देते हुए कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का)

बैठक में चर्चा करते हुए श्री के सी दास, का नि (मा सं) और कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का)

मानव संसाधन विकास पर संसदीय स्थायी समिति का ताज होटल में पीएसयू अधिकारियों के साथ बैठक

समिति सदस्यों के साथ खड़े कमोडोर राकेश आनन्द नि (स यो एवं का), श्री के सी दास तथा कम्पनी के अन्य अधिकारीगण

बायोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल सिस्टम

कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो.एवं का) रियर एडमिरल आर के श्रावत का बायोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल सिस्टम उद्घाटन के समय पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए।

बायोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल सिस्टम का उद्घाटन करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत के साथ बाएँ से कैप्टन राजीव लठ नि (जहाज निर्माण), कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो.एवं का) श्री संजीव शर्मा नि (वित्त), एवं अन्य अधिकारी गण।

बायोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल सिस्टम का शुभारंभ करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत के साथ, कमांडर पी. आर. रघुनाथ नि (जहाज निर्माण), कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो.एवं का) एवं अन्य अधिकारी गण।

नवीनीकृत एमडीआरसी क्लब का उद्घाटन

नवीनीकृत एमडीआरसी क्लब का उद्घाटन करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि के साथ बाएँ से खड़े कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो. एवं का), श्री संजीव शर्मा नि (वित्त), श्री पी.के. भट्टाचार्य का. नि (इन्फ्रा प्रोजेक्ट) और बड़ी संख्या में अन्य अधिकारी गण।

नए लाईफ सर्पोटिंग एंबुलेंस का उद्घाटन

कंपनी की नई एंबुलेंस का उद्घाटन करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि

कंपनी एंबुलेंस का निरीक्षण करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि के साथ श्री संजीव शर्मा नि (वित्त)

रिची ड्राई डॉक

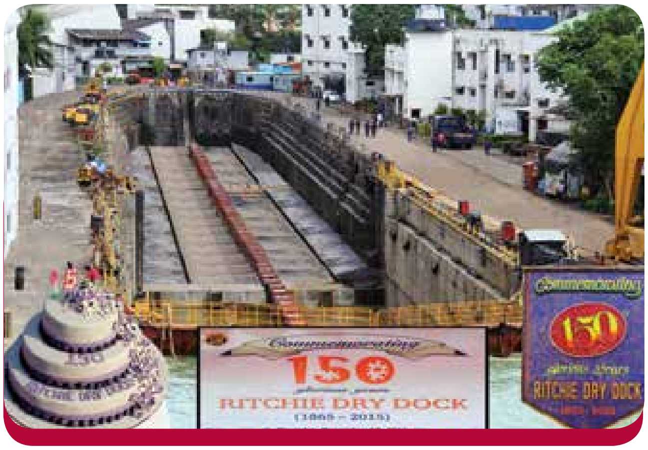

रिची ड्राई डॉक के 150 वर्ष पूर्ण होने पर स्मरणोत्सव

रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि द्वारा रिची ड्राई डॉक का उद्घाटन पीछे खड़े कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो.एवं का)अधिकारी तथा कर्मचारीगण

रिची ड्राई डॉक के 150 वर्ष पूर्ण

रिची ड्राई डॉक के 150 वर्ष पूर्ण होने पर रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि के साथ खड़े कैप्टन राजीव लठ, श्री ए के अय्यर, कमांडर पी आर रघुनाथ तथा भारी संख्या में उपस्थित अधिकारी वर्ग।

हिंदी प्रशिक्षण

एमडीएल में आयोजित कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला

माझगाँव डाक अधिकारी संघ सदस्यों के लिए निगोशिएशन स्किल पर रत्नागिरी के गणपतीफुले स्थान पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

26 अक्टूबर से 07 नवंबर तक आईआईएम इंदौर में उच्च अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण

हमारे सम्माननीय अतिथि

आरडीएम एस नैथानी, वीएसएम, सीएसओ (तकनीकी) डी 448 के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रियर एडमिरल आर के श्रावत चर्चा करते हुए।

फलक का उद्‌घाटन करते हुए आरडीएम एस नैथानी वीएसएम, सीएसओ (तकनीकी) डी 448 के अध्यक्ष प्रबंध निदेशक के साथ एमडीएल अधिकारी गण।

दिनांक 5 सितंबर 2015 को वीएडीएम पी मुरुगेशन, एवीएसएम, वीएसएम, वाईस चीफ ऑफ नेवल स्टाफ श्री डी.जी. करंदीकर, अमप्र (इन्फ्रा प्रोजेक्ट) बाएँ से, कमोडोर राकेश आनन्द, निदेशक (स.यो.एवं का), श्री पी के भट्टाचार्य, कानि (इन्फ्रा प्रोजेक्ट), श्री ए.वी. अभयंकर, उमप्र (इन्फ्रा प्रोजेक्ट) और श्री विजय सावंत, प्र (इन्फ्रा प्रोजेक्ट)

वाईस एडमिरल पी मुरुगेशन को पोत का निरीक्षण कराते हुए रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि, कैप्टन राजीव लठ, नि (पन एवं भा. अ.) के साथ और अन्य अधिकारी गण।

दिनांक 28 सितंबर 2015 को एयर मार्शल जे वालिया, वीएम, वीएसएम,सदन एयर कमाण्ड का एमडीएल में दौरा के समय कमांडर पी आर रघुनाथ निदेशक (जहाज निर्माण) द्वारा स्वागत

वाईस एडमिरल जी.एस. पब्बी, एवीएसएम, वीएसएम सीडब्ल्यूपी एंड ए के साथ दिनांक 31 अक्टूबर 2015 को वार्ता करते हुए रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि

आईएनएस कोची के जलावतरण के अवसर पर सम्बोधन करते हुए माननीय रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रीकर और बैठे हुए नौसेना के प्रमुख अधिकारियों के साथ एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रियर एडमिरल आर के श्रावत।

नौसेना को आइ.एन.एस. कोची की सुपुर्दगी के अवसर पर बाएँ से खड़े कैप्टन गुरुचरण (सी ओ कोची), वाईस एडमिरल जी एस पब्बी (सी डब्लू पी एवं ए) एडमिरल राबिन धोवन, सी एन एस (नौसेना प्रमुख) रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रिकर, वाईस एडमिरल एसपीएस चीमा (सीएनसी) पश्चिम, रियर एडमिरल राहुल कुमार श्रावत, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संसदीय समिति के सदस्य को पुष्पगुच्छ देते हुए रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि

संसद सदस्यों को दर्शक दीर्घा में पुराने जहाज का मॉडल दिखाते हुए रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि

पूर्व खंड में संसदीय समिति दौरा के समय बाए से श्री संजीव शर्मा, नि (वित्त), संसद सदस्य सी एम डी, सांसद श्री कीर्ति आजाद, कैप्टन राजीव लठ नि (प एवं भा अ) तथा सांसद एवं कामगार

जहाज निर्माण राजभाषा चल पदक

राजभाषा रोलिंग ट्राफी का प्रदर्शन करते हुए कमांडर पी आर रघुनाथ नि (जहाज निर्माण) श्री प्रकाश चंद झा उमप्र (अनुरक्षण)

हिन्दी में उत्कृष्ठ कार्य करने के लिए श्री ह.स. दामले, अमप्र (जहाज निर्माण-कार्य) को निदेशक जहाज निर्माण, कमांडर पी. आर. रघुनाथ,रोलिंग ट्राफी देते हुए।

मिनी मैराथन

मिनी मैराथन की शुरूवात के समय बाएँ से खड़े कमोडोर राकेश आनन्द, प्रतिभागी गण रियर एडमिरल आर के श्रावत, श्री संजीव शर्मा

मिनी मैराथन की तैयारी और प्रतियोगिता में भाग लेते हुए एमडीएल के अधिकारी और कर्मचारी

निदेशक (स यो एवं का) की अगुवाई में स्वच्छता अभियान

झाड़ू लेकर बीच में खड़े श्री के एस रमणी म प्र (तकनिकी सेवाए) कमोडोर राकेश आनन्द नि (स यो एवं का) तथा अन्य अधिकारी गण

नवाब टैंक रोड पर सफाई करते राकेश आनन्द, श्री के एस रमणी, श्री पाणिग्रही तथा कर्मी

खरडे गाँव में सीएसआर कार्यक्रम

सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत खरडे गाँव में समाज कल्याण संस्था का उद्घाटन करते हुए अप्रनि रियर एडमिरल आर.के. श्रावत, कमोडोर राकेश आनन्द नि (स.यो.एवं का) ग्रामवासी डॉ. हिरेन देसाई और अधिकारी गण।

रियर एडमिरल आर के श्रावत अप्रनि का शाल और पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए गाँव के सरपंच

खेरडे गाँव में एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से विमोचन कराते हुए - बाएँ से खड़े डॉ. हिरेन देसाई, कमोडोर राकेश आनन्द नि (सम.यो एवं का) तथा अन्य लोग।

खेरडे गाँव में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पुष्प गुच्छ से स्वागत करती ग्राम महिला।

खरडे गाँव के बच्चों के साथ रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि, कमोडोर राकेश आनन्द, निदेशक (स.यो.एवं का) और अन्य अधिकारी गण।

एमडीएल की ओर से खरडे गाँव के बच्चों को 50 साइकिलें वितरित की गई।

खेर्‌डे गाँव में प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन करते हुए एनजीओ पदाधिकारी प्रोफेसर महेश ठाकुर दाएँ से श्री जे जी यादव, रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि, कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स.यो. एवं का.), डॉ. हिरेन देसाई, मुचिअ एवं सीएसआर प्रमुख और ग्रामवासी।

रियर एडमिरल आर. के. श्रावत, अप्रनि, कमोडोर राकेश आन्नद, नि (स.यो. एवं का.), डॉ. हिरेन देसाई, मुचिअ एवं सीपएसआर प्रमुख और अन्य अधिकारियों के साथ ग्रामवासी माहिती व विकास केंद्र का उद्घाटन करते समय।

गुजरात के बलसाड जिले में सीएसआर कार्यक्रम

सी एस आर कार्यक्रम के अंतर्गत गुजरात राज्य के बलसाड जिला की पारदी तहसील की गोइमा मुख्यशाला में विद्यार्थियों के साथ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

स्कूल परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम के समय खड़े दाएँ से माननीय संसद डॉ के सी पटेल एम डी के अप्रनि रियर एडमिरल आर के श्रावत, कमोडोर राकेश आनन्द नि (स यो एवं का) डॉ हिरेन देसाई मूचिअ) तथा अन्य अधिकारी एवं कार्यकर्ता

नयी तालिम शाला रोहिना मुख्य में छात्राओं के साथ रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि, कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का) श्री के सी दास, कानि (मा.स) डॉ हिरेन देसाई (मुचिअ) और अन्य अधिकारीगण

गोइमा मुख्यशाला में बालिकाओं के साथ खड़े रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि, कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का) श्री के सी दास, कानि (मा.स) डॉ हिरेन देसाई (मुचिअ) और अन्य अधिकारीगण

टॉइलेट ब्लॉक का उद्‌घाटन करते हुए रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि, के साथ कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का) और अन्य शिक्षक एवं छात्राएँ

स्कूल परिसर में बाएँ से खड़े कमोडोर राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का) रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि, डॉ हिरेन देसाई (मुचिअ), श्री के सी दास, कानि(मा.स)

गोइमा मुख्य शाला में सांस्कृतिक कार्यक्रम के समय बैठी हुई बालिकाएँ

गोइमा मुख्यशाला के बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम देखते हुए बाएँ से डॉ के सी पटेल माननीय सांसद, रियर एडमिरल आर के श्रावत, अप्रनि, राकेश आनन्द, नि (स यो एवं का) और अन्य अधिकारी एवं शिक्षक गण

बलसाड के समापन समारोह में संबोधन करते हुए सी एम डी

डॉ के सी पटेल माननीय सांसद स्कूल में समारोह को संबोधित करते हुए

श्री. संजीव शर्मा निदेशक (वित्त) के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान का आरंभ

बाएँ से खड़े सुश्री आस्मिन आ खान, उमप्र (पू.खं.), श्री गोपेस गोस्वामी, प्रवक्ता, डॉ. महेश चन्द्र गुप्त, प्रवक्ता/रक्षा उत्पादन विभाग की हिंदी सलाहकार समिती के पूर्व सदस्य और श्री पी.डी. सिद्दीकी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, दिनांक 16 अक्टूबर, 2015 को उत्तराखंड, नैनीताल में आयोजित राजभाषा कार्यक्रम में राजभाषा संस्थान की ओर से एमडीएल की राजभाषा गृहपत्रिका 'जलतरंग' और 'पत्राचार' के लिए पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

दिनांक 22 अप्रैल, 2015 को दिल्ली में आयोजित बीएमएल मुंजल का हीरो क्रॉप रनर्स अप पुरस्कार ज्ञान और विकास के माध्मय से सर्वोत्तम व्यवसाय हेतु लेते हुए बाएँ से श्री किशोर चन्द्र दास, कानि (मानव संसाधन), कमांडर एस. एस. सिधू, उमप्र (क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली), कमोडोर राकेश आनन्द, नि (समवाय योजना एवं कार्मिक) और अन्य अधिकारी गण।

राजभाषा संगोष्ठी आयोजन के लिए प्रशस्ति पत्र

मुंबई टॉलिक की 55 वीं बैठक में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की द्वितीय गृह पत्रिका 'जलतरंग' को प्रथम पुरस्कार के रूप में टॉलिक अध्यक्षा से शील्ड प्राप्त करते हुए कमोडोर राकेश आनन्द निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) तथा श्री सोपान एस कांबले, अपर महाप्रंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध), श्री सुरेश कदम, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध), श्री श्रीनिवास सिन्हा, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं हिन्दी), श्री के. डी. पाटील, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं सी), श्री पी.डी. सिद्दीकी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, श्री रामप्रीत यादव, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी।

हैरीटेज गैलरी

अपने उज्जवल इतिहास की जानकारी अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए माझगांव डॉक में हाल ही में हैरीटेज गैलरी की स्थापना की गई। 06 अप्रैल 2015 को देश के रक्षामंत्री माननीय श्री मनोहर पर्रिकर के कर कमलों द्वारा इसका उद्घाटन किया गया। इस गैलरी में मुम्बई बंदरगाह का इतिहास, क्रमवार प्रगति, जहाज निर्माण उद्योग का प्राचीन स्वरुप, तत्कालीन समाचार पत्रों में इससे सम्बंधित रिपोर्ट, माझगांव डॉक में निर्मित जहाजों की संपूर्ण सूची, उनमें से कुछ नमूनों की जानकारी प्रस्तुत की गई है।

माझगांव डॉक में आनेवाले अतिथियों के लिए यह गैलरी मुख्य आकर्षण का केन्द्र बन गयी है।